●वर्ष : 16 ●अंक : 167 ●मूल्य : 02 रूपया मात्र पृष्ठ : 08 RNI No. DELHIN/2008/23928

दैनिक लोकतंत्र की शान

लोकतंत्र का स्तंभ

दिल्ली से प्रकाशित

शनिवार 05 अक्टूबर 2024

Mfg & mkt by.. ANGEN PHARMACEUTICALS (OPC) PRIVATE LIMITED

Distributorship ke liye contact Karen .
(9315755133 / ya email Karen)
angenpharmaceuticals@gmail.com

कौटिल्य आर्थिक सम्मेलन में बोले पीएम मोदी

भारत सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था, गरीबी से बाहर निकले 25 करोड़ लोग

नूना न्यूज एजेंसी

दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज दिल्ली में कौटिल्य आर्थिक सम्मेलन को संबोधित किया। इस दौरान नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है। आज भारत जीडीपी के हिसाब से 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। हम वैश्विक फिनटेक अपनाने की दर के मामले में नंबर वन हैं। आज हम स्मार्टफोन डेटा खपत के मामले में नंबर वन हैं। उन्होंने कहा कि आज, वैश्विक आपातकाल के बीच, हम यहां 'भारतीय युग' के बारे में चर्चा कर रहे हैं... इससे पता चलता है कि दुनिया भारत पर कितना भरोसा करती है। आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती और 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। फिनटेक अपनाने की दर के मामले में, हम शीर्ष देश के रूप में खड़े हैं। नरेंद्र मोदी ने कहा कि वैश्विक वास्तविक समय लेनदेन का आधा हिस्सा भारत में होता है। भारत दोपहिया वाहनों और ट्रैक्टरों का सबसे बड़ा निमार्ता है, और मोबाइल फोन का दूसरा सबसे बड़ा निमार्ता है। उन्होंने कहा कि 'सुधार, प्रदर्शन और परिवर्तन' हमारा मार्गदर्शक मंत्र है। जब लोगों का जीवन बदल जाता है, तो वे अपने देश में विश्वास करना शुरू कर देते हैं। फिर वही बात उनके जनादेश के माध्यम से परिलक्षित होती है। 140 करोड़ भारतीयों का विश्वास ही हमारी ताकत है। हम भारत की भलाई के लिए और अधिक संरचनात्मक सुधार लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। मोदी ने कहा कि हमारा कमिटमेंट है कि भारत को विकसित बनाने के लिए लगातार संरचनात्मक सुधार करते रहेंगे। भारत में विकास के साथ समावेशन भी हो रहा है। इसी का परिणाम है कि पिछले 10 साल में 250 मिलियन... यानि 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। उन्होंने कहा कि 'समावेशी भावना' भारत की विकास गाथा का एक और उल्लेखनीय कारक है। अब, भारत में, विकास के साथ-साथ समावेशन भी होता है। परिणामस्वरूप, पिछले 10 वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि भारत की वृद्धि का लाभ सभी को मिले। प्रधानमंत्री ने कहा कि वैश्विक नेता और वित्तीय विशेषज्ञ भारत की वृद्धि को लेकर आशावादी हैं। निवेशकों का मानना है कि यह भारत में निवेश करने का सही समय है। यह कोई संयोग नहीं है, बल्कि यह पिछले दशक में भारत में हुए सुधारों का परिणाम है। उन्होंने कहा कि नौकरियां, कौशल, सतत विकास और निरंतर तेजी से विस्तार पर मोदी 3.0 का विशेष ध्यान है। उन्होंने कहा कि कारोबार करने को सरल बनाने के लिए अनुपालन बोझ को कम किया, कंपनी कानून के कई प्रावधानों को अपराध की श्रेणी से बाहर किया। उन्होंने कहा कि मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के लिए हम पीएलआई (प्रोडक्शन-लिंक्ड इंसेंटिव) लाए। पीएलआई के कारण 1.25 लाख करोड़ रुपये का निवेश आया है। अंतरिक्ष क्षेत्र में अब 200 से अधिक स्टार्टअप हैं। भारत मोबाइल फोन के आयातक से उत्पादक बन गया है। भारत में हर क्षेत्र में निवेश के प्रचुर अवसर हैं। उन्होंने कहा कि जल्द ही भारत के 5 सेमीकंडक्टर प्लांट दुनिया भर में लगेंगे और 'मेड इन इंडिया' चिप्स दुनिया तक पहुंच सकेंगे।

ज्वलंत मुद्दा

सम्पादकीय

हरियाणा में पिछड़ रही भाजपा मतदान से ठीक पहले मुश्किल स्थिति

हरियाणा में लगभग सवा नौ साल तक मुख्यमंत्री रहे मनोहर लाल खट्टर के खिलाफ उपजी नाराजगी को भांप कर भाजपा नेतृत्व ने इस साल मार्च में उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटा दिया था। खट्टर को लोकसभा चुनाव लड़वा कर और केंद्रीय मंत्री पद सौंप कर दिल्ली की राजनीति में स्थापित करने का प्रयास किया गया लेकिन खट्टर का मन हरियाणा में लगा रहा। भाजपा नेतृत्व को जब यह लगा कि खट्टर का नाम नुकसान पहुँचा रहा है तो पूरे चुनाव प्रचार अभियान से खट्टर का नाम और उनकी तस्वीर गायब कर दी गयी। हमने पाया कि भाजपा की हर चुनावी रैली अथवा जनसभाओं के दौरान मंच पर या उसके आसपास लगने वाले पोस्टरों, बैनरों और होडिंगों में खट्टर का नाम और तस्वीर नहीं थी। यही नहीं हरियाणा सरकार की जिन उपलब्धियों के सहारे भाजपा ने चुनाव लड़ा उसमें भी खट्टर की तस्वीर नहीं लगायी गयी। भाजपा ने साधारण लोगों की तस्वीरों का इस्तेमाल चुनाव प्रचार सामग्री में किया। जैसे युवाओं की तस्वीरों के साथ लिखा गया कि बिना खर्ची पर्ची नौकरी दी गयी। किसानों की तस्वीरों के साथ लिखा गया कि 24 फसलों का एमएसपी दे रही हरियाणा सरकार, महिलाओं की तस्वीरों के साथ लिखा गया कि तमाम योजनाओं का लाभ दे रही भाजपा सरकार। इसी प्रकार अन्य उपलब्धियों का बखान करते हुए भी प्रचार सामग्री तैयार करवायी गयी जिसमें आम लोगों की तस्वीरें प्रकाशित की गयी थी। इसमें कोई दो राय नहीं कि खट्टर से छुटकारा पाकर भाजपा ने हरियाणा में खुद को मुश्किल स्थिति से उबारने में सफलता पाई है। ऐसा लगता है कि यदि भाजपा ने मार्च में खट्टर को हटाने का फैसला नहीं लिया होता तो आज वह चुनावी मुकाबले से पूरी तरह बाहर हो चुकी होती। खट्टर से व्यक्तिगत रूप से लोगों की नाराजगी भाजपा को चुनावों में उसी तरह नुकसान पहुँचा सकती थी जैसे कि राजस्थान विधानसभा के 2018 के चुनावों में देखने को मिला था जब नारे लग रहे थे कि मोदी तुझसे बैर नहीं, वसुंधरा तेरी खैर नहीं। हमसे बातचीत में भाजपा के भी कई समर्थकों और कार्यकताओं ने माना कि यदि खट्टर को हटाने का फैसला एक साल पहले लिया गया होता तो लोकसभा चुनावों में भी हम सारी सीटें जीत सकते थे।

SYED ZAKI HAIDER
(EDITOR / PUBLISHER CUM MANAGING DIRECTOR
OF NAI UMMEED NEWS AGENCY
MOBILE NO. 9911371802
EMAIL SYEDZAKIHAIDER786@GMAIL.COM

बेंगलुरु के तीन इंजीनियरिंग कॉलेजों को ईमेल से मिली बम की धमकी

हाई अलर्ट पर पुलिस

बेंगलुरु। के तीन इंजीनियरिंग कॉलेजों को ईमेल के जरिए बम की धमकी मिली, जिससे परिसर में दहशत फैल गई। पुलिस ने कहा कि धमकियों की सूचना शुक्रवार दोपहर को दी गई, जो बाद में अफवाह निकली। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, बसवनगुड़ी में बेंगलुरु इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी और बीएमएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग और सदाशिवनगर में एमएस रमैया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी को दोपहर करीब 1 बजे ईमेल के जरिए बम की धमकी मिली। जल्द ही, कॉलेज प्रबंधन ने पुलिस को सूचित किया, जो बम निरोधक और डॉग स्क्वॉड के साथ मौके पर पहुंची। गहन जांच के बाद पुलिस इस नतीजे पर पहुंची कि यह एक फर्जी ईमेल था। पुलिस उपायुक्त (दक्षिण डिवीजन) लोकेश बी जगलासर ने एक बयान में कहा कि (मेल के) स्रोत का पता लगाने के लिए हनुमंत नगर पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है।" मामले की जानकारी जैसे ही अभिभावकों को हुई तो वे अपने बच्चों की सुरक्षा के बारे में जानकारी लेने के लिए कॉलेजों के सामने जमा हो गए। पुलिस ने बताया कि इससे पहले 3 अक्टूबर को नौ शैक्षणिक संस्थानों को एक ईमेल मिला था जिसमें दावा किया गया था कि उनके परिसरों में बम लगाए गए हैं और तलाशी के बाद यह धमकी अफवाह निकली। ईमेल देखने के बाद मनाप्पराई स्थित कैंपियन स्कूल प्रबंधन ने तुरंत पुलिस को सूचना दी. एक बम खोजी और निपटान दस्ते ने स्कूल परिसर की तलाशी ली और बाद में अन्य संस्थानों में भी तलाशी ली, जिन्हें इसी तरह के मेल प्राप्त हुए थे।

रानिया सीट पर इस बार होगा दिलचस्प मुकाबला

नूना न्यूज एजेंसी

हरियाणा। में कुल 90 विधानसभा सीटे हैं। इन सभी सीटों पर एक चरण में 5 अक्तूबर को मतदान होने हैं। वहीं 08 अक्तूबर को चुनाव का परिणाम घोषित किए जाएंगे। राज्य की रानिया विधानसभा सीट अहम सीट है। यह सीट हरियाणा के 90 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है। यह सिरसा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के तहत आता है। साल 2019 के विधानसभा चुनाव में रानिया सीट से रणजीत सिंह चौटाला निर्दलीय जीते थे। हालांकि रणजीत सिंह चौटाला ने पूरे 5 साल भारतीय जनता पार्टी की सरकार को समर्थन दिया। जिसके बदले में बीजेपी ने निर्दलीय

विधायकों के कोटे से उनको राज्य सरकार में बिजली व जेल मंत्री बनाए रखा। बता दें कि हरियाणा लोकहित पार्टी ने इस सीट से बीजेपी नेता गोबिंद कांडा के बेटे ध्वल कांडा को उम्मीदवार बनाया है। इस सीट से 1,43,217 मतदाता हैं। जिनमें से पुरुष मतदाताओं की संख्या 95,247 है, तो वहीं महिला मतदाताओं की संख्या 84,676 है। वहीं साल 2019 के कुल मतदाताओं की संख्या 1,43,217 थी। हालांकि इस बार रानिया विधानसभा सीट के परिणाम किस सियासी दल के पक्ष में होंगे, यह जनता ही तय करेगी।

साल 2019 चुनाव के परिणाम

साल 2019 के विधानसभा चुनाव में इस सीट से निर्दलीय उम्मीदवार रणजीत सिंह ने जीत दर्ज की थी। उनको इस दौरान 53,660 वोट मिले थे। रणजीत सिंह ने साल 2019 के चुनाव में हरियाणा लोकहित पार्टी के उम्मीदवार गोबिंद कांडा को हराया था। इस चुनाव में गोबिंद कांडा को 34,371 वोट मिले थे। वहीं भाजपा के राम चंद कंबोज 20,666 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर थे। रणजीत सिंह ने जीत हासिल करने के बाद भाजपा का समर्थन किया था।

आईएएस अनुराग जैन ने मुख्य सचिव का पदभार संभाला

नए मुख्य सचिव के आते ही मंत्रालय में दिखी चहल-पहल

■ भोपाल

प्रदेश के नए मुख्य सचिव अनुराग जैन ने नवदुर्गा महोत्सव के पहले दिन गुरुवार सुबह 10 बजे मंत्रालय पहुंचकर पदभार संभाल लिया है। इस दौरान अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री राजेश राजौरा, अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासनिक विभाग संजय दुबे समेत मंत्रालय के अन्य अधिकारी मौजूद रहे। कार्यभार संभालने के तत्काल बाद तीनों अधिकारियों के साथ चर्चा की। मुख्य सचिव कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारियों के साथ परिचात्मक संवाद किया और समूह फोटो खिंचाया। इसके बाद उन्होंने राजभवन पहुंचकर राज्यपाल मंगुभाई पटेल से मुलाकात की। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव गुरुवार को दिल्ली-हरियाणा प्रवास पर हैं। हालांकि जैन ने बुधवार शाम को दिल्ली में ही मुख्यमंत्री से मुलाकात की थी। जैन के मुख्य सचिव का कार्यभार संभालते ही मंत्रालय में चहल-पहल दिखी। आम दिनों की अपेक्षा ज्यादातर अधिकारी एवं कर्मचारी

- पदभार संभालते ही शुरू किया बैठकों का सिलसिला
- लंबे समय बाद कार्यालयीन समय में बैठे दिखे अधिकारी-कर्मचारी

कार्यालयीन समय में अपने कक्षों में बैठे दिखे। राजभवन से लौटकर मुख्यमंत्री ने प्रात: 11 बजे से सभी अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव, सचिव और विभागाध्यक्षों के साथ परिचात्मक बैठक की। इसी बैठक में अधिकारियों ने मुख्य सचिव को बधाई दी। बधाई देने का सिलसिला देर शाम तक चलता रहा। साथ ही बीच-बीच में मुख्य सचिव जरूरी बैठकें भी लेते रहे।

खुद के कार्यालय को दिया काम का लक्ष्य

मुख्य सचिव ने अपने स्टॉफ के साथ परिचय बैठक की और समूह फोटो खिंचाया। इसके साथ ही मुख्य सचिव कार्यालय के उपसचिव डीके नागेन्द्र को निर्देश दिए कि उन्हें हफ्ते भर में रिपोर्ट चाहिए कि कौन क्या कर रहा है। इससे साफ है कि मुख्य सचिव कार्यालय में पदस्थ कुछ अधिकारी एवं कर्मचारियों को बाहर किया जा सकता है।

प्रशासनिक गलियारों में जोरों पर थी चर्चा- 30 सितंबर को नए मुख्य सचिव की नियुक्ति के बाद से प्रदेश के प्रशासनिक गलियारों में इसकी चर्चा जोरों पर थी। केंद्र सरकार ने 30 सितंबर को अनुराग जैन की सेवाएं मप्र को लौटाईं। इसके देर रात सामान्य प्रशासन विभाग ने जैन के आदेश जारी किये। इसके बाद से जैन की नियुक्ति को लेकर भोपाल से लेकर दिल्ली तक चर्चा हो रही थी। पहले जैन का 1 अक्टूबर को भोपाल आकर कार्यभार संभालने का कार्यक्रम था, लेकिन बाद में 3 अक्टूबर का तय हुआ।

मैहर। शक्तिस्वरूपा मां दुर्गा की 52 शक्तिपीठों में से एक मैहर स्थित मां शारदा की दहलीज पर शारदेय नवरात्रि के पहले दिन गुरुवार को लगभग डेढ़ लाख श्रद्धालुओं ने मत्था टेका। दर्शन के लिए सुबह चार बजे से ही श्रद्धालुओं की लंबी कतारें लग गई थी।

दो हजार के 7117 करोड़ के नोट अभी भी लोगों के पास

■ मुंबई

रिजर्व बैंक ने दो हजार के नोटों को लेकर ताजा आंकड़ा जारी किया है। इसके मुताबिक 7,117 करोड़ के गुलाबी नोट अभी भी केन्द्रीय बैंक के पास वापस नहीं लौटे हैं। यह बड़ा आंकड़ा चौंकाने वाला है। आरबीआई ने 19 मई 2023 को दो हजार के नोटों को चलन से बाहर करने का फैसला किया था। यह नोट अभी भी लीगल टेंडर बने हुए हैं। इन्हें केवल सर्कुलेशन से बाहर किया गया है। रिजर्व बैंक के अनुसार तीन जून 2024 तक 7755 करोड़ के नोट लोगों के पास थे। केन्द्रीय बैंक में 98 प्रतिशत नोट वापस आ गए हैं। बड़ा सवाल यह है कि दो हजार के बकाया नोट वापस क्यों नहीं लौट रहे हैं। इसकी एक वजह काला धन भी हो सकता है।

केंद्रीय कैबिनेट के निर्णय : किसानों की 2 योजनाओं के लिए एक लाख करोड़ मंजूर

12 लाख रेलवे कर्मचारियों को मिलेगा 78 दिन का बोनस

एजेंसी ■ नई दिल्ली

दीपावली के पहले रेलवे के कर्मचारियों को 78 दिनों का बोनस मिलेगा। यह फैसला केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में गुरुवार को लिया गया। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि सरकार ने रेलवे कर्मचारियों के लिए 2029 करोड़ रुपए के प्रोडक्टिविटी लिंक्ड बोनस को मंजूरी दी है। उन्होंने बताया कि इस घोषणा से रेलवे के 11,72,240

कर्मचारियों का फायदा मिलेगा। सरकार ने प्रधानमंत्री-राष्ट्रीय कृषि विकास योजना और कृषोन्नति योजना को भी मंजूरी दी है। इसके लिए 1,01,321 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया। किसी भाषा को इस श्रेणी में लाने के लिए उस भाषा के कम से कम हजार साल के दौरान रिकॉर्ड किए गए इतिहास या शुरुआती ग्रंथ बेहद प्राचीन होने चाहिए। भाषा का एक प्राचीन साहित्य या ग्रंथों का संग्रह हो, जिसे कई पीढ़ियां मूल्यवान मानती हों। भाषा की साहित्यिक परंपरा मौलिक हो, किसी अन्य भाषा से उधार नहीं ली गई हो। भारत सरकार ने 12 अक्टूबर 2004 को 'शास्त्रीय भाषाओं' की एक नई श्रेणी बनाई थी और तमिल को शास्त्रीय भाषा घोषित किया था।

अन्य फैसले

- प्रोडक्टिविटी लिंक्ड बोनस योजना 20,704 पोर्ट कर्मचारियों के लिए भी मंजूर की गई है।
- चेन्नई मेट्रो के फेज-2 के लिए 63,246 करोड़ रुपये आवंटित किए गए।
- राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन- तिलहन के तहत तिलहन उत्पादन को बढ़ावा देने और खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए 2024-25 से 2030-31 तक 10,103 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे।
- मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया जाएगा।

प्रशासनिक मुखिया योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए और बढ़ानी होगी पारदर्शिता

मुख्य सचिव के सामने सरकार चलवाने-खजाना भरने की चुनौती

■ भोपाल

प्रदेश के मुख्य सचिव अनुराग जैन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिनमें सबसे बड़ी चुनौती राज्य की मौजूदा वित्तीय हालत में जनकल्याणकारी योजनाओं का संचालन जारी रखना और खजाना भरना है। क्योंकि सरकार को हर महीने कर्जा उठाना पड़ रहा है। साथ ही प्रशासनिक व्यवस्था में कसावट की भी बड़ी दरकार है। पिछली सरकारों ने जनता से जुड़ी सेवा और योजनाओं को ऑनलाइन करके पारदर्शी बनाने की पूरी कोशिश की है, इसके बावजूद भी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए और पारदर्शिता की जरूरत है। अनुराग जैन खुद मप्र के वित्त विभाग के मुखिया रह चुके हैं। उन्हें राज्य की खजाने की बेहतर समझ हैं। वे लंबे समय से दिल्ली में प्रधानमंत्री कार्यालय से लेकर अलग-अलग विभागों में सेवाएं देकर मप्र लौटे है। उनके दिल्ली के संपर्कों का लाभ मप्र को मिलेगा। साथ ही केंद्री जन-धन योजना की तर्ज पर मप्र में भी गरीब और उनसे जुड़ी योजनाओं के लिए पारदर्शी ढांचा तैयार करना पड़ेगा।

ई-ऑफिस के लिए भी सख्ती चाहिए

मंत्रालय में ई-ऑफिस 6 साल पहले 2018 में लागू हो गई थी। इसके लिए कर्मचारियों के प्रशिक्षण से लेकर नए उपकरणों की खरीद पर करोड़ों खर्च हो चुके हैं। लागू होने के बाद किसी भी मुख्य सचिव ने ई-ऑफिस को सख्ती से लागू करने में रुचि नहीं दिखाई। मंत्रालय में फाइल ऑफलाइन आती है। मंत्रालय में ई-ऑफिस व्यवस्था चालू है, लेकिन फाइलें दोनों तरह से भेजी जाती हैं। फाइल ऑनलाइन भी चलती है और ऑफलाइन भी भेजनी होती है। कुछ अधिकारी ऑनलाइन फाइल के प्रिंट निकलवाकर फाइल तैयार करवाते हैं। मुख्य सचिव के सामने ई-ऑफिस व्यवस्था को लागू करने की भी बड़ी चुनौती होगी।

प्रशासन में दिखेगी कसावट

अनुराग जैन त्वरित निर्णय लेने वाले अधिकारी हैं। उनके आते ही तय हो गया है कि प्रशासनिक व्यवस्था में कसावट के लिए बदलाव होगा। प्रमुख दायित्व बदले जाएंगे। उन्होंने पदभार संभालने के बाद मुख्य सचिव कार्यालय में जरूरी बदलाव के निर्देश भी दे दिए हैं। जैन सरकारी व्यवस्था में डिजिटलीकरण के पक्षधर हैं। निकट भविष्य में सरकारी कार्यालयों में कामकाज ऑनलाइन, डिजिटल हाजिरी जैसे फैसले होंगे। जनता की समस्या की समाधान के लिए सीएम हेल्पलाइन को और प्रभावी बनाने के लिए बड़े बदलाव होंगे। नागरिक सेवाओं का और सरलीकरण पर जोर देना होगा। पुलिस महकमे में भी कसावट लानी होगी। भूमि के स्वत: नामांतरण की व्यवस्था को और प्रभावशाली बनाने पर जोर देना होगा।

डीजल से भरी मालगाड़ी के दो टैंकर बेपटरी

रतलाम। गुरुवार रात रतलाम-नागदा रेल मार्ग पर डीजल से भरी मालगाड़ी के दो टैंकर बेपटरी हो गए। एक टैंकर आधा पलटी खा गया। हादसे की सूचना मिलते ही रतलाम रेल मंडल के अधिकारी और दुर्घटना रिलीफ ट्रेन मौके पर पहुंच गई हैं। घटनास्थल पर माइक से अनाउसमेंट कर लोगों को आगाह किया कि कोई आसपास बीड़ी - सिगरेट न पिए, मालगाड़ी से दूर रहें। घटना रात 10 बजे की है। बताया जा रहा कि डीजल से भरी मालगाड़ी रतलाम से नागदा की तरफ जा रही थी। रतलाम के घटला ब्रिज के करीब गुजरते समय यह हादसा हुआ है। मौके पर रेलवे के अधिकारी और टीम मालगाड़ी के टैंकर को पटरी पर लाने की कोशिश की गई।

मैरिटल रेप को अपराध मानने के पक्ष में नहीं केंद्र

सुप्रीम कोर्ट से कहा- ये कानूनी नहीं, सामाजिक मुद्दा

एजेंसी ■ नई दिल्ली

शीर्ष न्यायालय वर्तमान में वैवाहिक बलात्कार मामले में भारतीय दंड संहिता की धारा 375 के अपवाद 2 की वैधता पर दिल्ली हाईकोर्ट के विभाजित फैसले के खिलाफ अपील पर विचार कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 375 के अपवाद 2 की वैधता से संबंधित वैवाहिक बलात्कार मामले में दिल्ली हाईकोर्ट के विभाजित फैसले के खिलाफ अपील पर केंद्र सरकार से जवाब मांगा था। केंद्र सरकार ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट को दिए अपने जवाब में कहा कि मैरिटल रेप कानूनी नहीं बल्कि एक सामाजिक मुद्दा है। किसी निर्णय पर पहुंचने के लिए व्यापक हितधारकों से परामर्श की आवश्यकता है। मौजूदा कानूनों में महिलाओं के लिए पर्याप्त प्रावधान हैं। विवाह पारस्परिक दायित्वों की संस्था है। केंद्र ने तर्क दिया कि भारत में शादी को पारस्परिक दायित्वों की संस्था माना जाता है, जहां कसमों को अपरिवर्तनीय माना जाता है। विवाह के भीतर महिलाओं की सहमति वैधानिक रूप से संरक्षित है, लेकिन इसे नियंत्रित करने वाले दंडात्मक प्रावधान अलग हैं। पर्याप्त वैवाहिक बलात्कार की शिकार महिला के लिए अन्य कानूनों में भी उपाय मौजूद हैं। धारा 375 के अपवाद 2 को खत्म करने से विवाह की संस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। केंद्र ने मौजूदा भारतीय बलात्कार कानून का समर्थन किया, जो पति और पत्नी के बीच यौन संबंधों के लिए इसे अपवाद बनाता है। केंद्र ने कहा कि यह मुद्दा कानूनी से ज्यादा सामाजिक है, जिसका सीधा असर आम समाज पर पड़ता है। अगर वैवाहिक बलात्कार को अपराध घोषित भी कर दिया जाता है तो सुप्रीम कोर्ट इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता। सिर्फ सरकार ही इस पर फैसला ले सकती है।

श्री अजय माकन, सांसद एवं कोषाध्यक्ष, एआईसीसी और डॉ. अशोक तंवर, पूर्व सांसद (लोकसभा) ने आज एआईसीसी मुख्यालय में मीडिया को संबोधित किया।

नई दिल्ली। श्री अजय माकन ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सब लोगों का बहुत-बहुत स्वागत है। जैसे कि आप लोग देख रहे होंगे कि आज हम सब लोग कांग्रेस पार्टी के परिवार के अंदर हरियाणा के एक वरिष्ठ नेता, पूर्व सांसद, भारतीय युवा कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन के भी पूर्व अध्यक्ष, जेएनयू से पढ़े हुए डॉ० अशोक तंवर जी का कांग्रेस पार्टी के अंदर हम लोग आज स्वागत करते हैं और सबसे पहले तो मैं जो एक रस्म यहां, पर कांग्रेस के हेड क्वार्टर्स में वरिष्ठ नेताओं के स्वागत पर होती है, उसको मैं पूरा करना चाहूंगा, आप लोगों के फोटो भी साथ-साथ में होंगे (कांग्रेस पार्टी का अंगवस?त्र पहनाकर डॉ अशोक तंवर का कांग्रेस पार्टी में स?वागत किया गया) और यह संविधान की एक प्रति जो हमने डॉ० अशोक तंवर जी को दी है (संविधान की प्रति डॉ अशोक तंवर को दी गई)। हम सब लोग जिसकी रक्षा करने के लिए हम सब लोगों ने ठाना है। हमारे नेता राहुल गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ने ठाना है। हम लोग यह उम्मीद करेंगे कि संविधान की रक्षा के लिए, बाबासाहेब अंबेडकर के सिद्धांतों को आगे लेकर जाने के लिए, राहुल गांधी जी की सोच - जो समाज में सबसे पिछड़े हुए व्यक्ति हैं, सबसे दबी हुई आवाज है, उसको आगे बढ़ाने के लिए डॉ० अशोक तंवर जी के आने से यह प्रयास... कांग्रेस पार्टी का और राहुल गांधी जी के प्रयास और कोशिशों को और मजबूती और बल मिलेगा। अब मैं अनुरोध करूंगा डॉ अशोक तंवर जी से कि वह यहां पर आकर के आप सब लोगों को संबोधित करें। डॉ० अशोक तंवर ने कहा - हमारे एआईसीसी के ट्रेजरर आदरणीय अजय माकन जी, सभी हमारे पत्रकार-छायाकार, प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथीगण, सभी आपके माध्यम से हरियाणा के मेरे सभी बड़े-बुजुर्गों को, माताओं-बहनों को, युवा साथियों को, सबको मेरा नमस्कार और आप सब जानते हैं कि मेरे राजनीतिक जीवन की शुरूआत कांग्रेस पार्टी से हुई, कांग्रेस के झंडे के तले हुई और छात्र जीवन से हमने शुरूआत की और पिछले कुछ महीने मैं भारतीय जनता पार्टी में था, लेकिन जिस तरीके का माहौल देखा पिछले कुछ महीने में, मैं समझता हूं कि बहुत से मुद्दे ऐसे हैं जिसको लेकर के आहत भी हुए और जो एक बाबासाहेब के प्रति, संविधान के प्रति जिस तरह की आस्था होनी चाहिए थी, वह मुझे लगता है कि वहां नहीं है और दूसरी तरफ राहुल गांधी जी देश के अंदर देश को जोड़ने के लिए बाबासाहेब का दिया हुआ संविधान कैसे मजबूत हो, उसके माध्यम से लोगों को अधिकार कैसे मिले, आरक्षण कैसे, जिन वर्गों के लिए... चाहे वह दलित हों, पिछड़े हों, उनको उसका संपूर्ण लाभ मिले और देश की तरक्की में, देश की खुशहाली में उनकी भी बड़ी भूमिका हो, यह हमेशा उन्होंने सपना देखा।

तंवर ने बताई भाजपा छोड़कर कांग्रेस में शामिल होने की वजह, कहा- बाबा साहेब अंबेडकर और संविधान में नहीं भाजपा की आस्था

दलित, पिछड़े और वंचित हरियाणा को फिर नंबर-एक बनाने के लिए कांग्रेस की सरकार बनाएं

>> देश जोड़ने और संविधान बचाने की लड़ाई में राहुल गांधी के साथ खड़ा हूँ

नई दिल्ली, 04 अक्टूबर भाजपा छोड़कर कांग्रेस में शामिल होने के बाद पूर्व सांसद अशोक तंवर ने कहा कि बाबा साहेब डॉ. भीम राव अंबेडकर और संविधान में भाजपा की कोई आस्था नहीं है। उन्होंने हरियाणा की जनता, विशेषकर रूप से दलितों, पिछड़ों और वंचित वर्ग के लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे हरियाणा को फिर नंबर-एक बनाने के लिए कांग्रेस की सरकार बनाएं। यह बातें अशोक तंवर ने नई दिल्ली स्थित कांग्रेस मुख्यालय में पत्रकार वार्ता करते हुए कहीं। इस दौरान कांग्रेस के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अजय माकन भी मौजूद थे। अशोक तंवर ने कहा कि उनके राजनीतिक जीवन की शुरूआत कांग्रेस से हुई। कुछ समय के लिए वह भाजपा में शामिल हो गए थे, लेकिन उन्हें महसूस हुआ कि भाजपा की देश के संविधान और बाबा साहेब अंबेडकर के प्रति कोई आस्था नहीं है। भाजपा जाति और धर्म का सहारा लेती है, लोगों को बांटने का काम करती है। वहीं राहुल गांधी ने बाबा साहेब अंबेडकर के आदर्शों, सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार और संविधान एवं आरक्षण को बचाने के लिए देशव्यापी अभियान चलाया है। राहुल गांधी ने यात्रा निकालकर लोगों को एक करने का काम किया है। आज वह देश जोड़ने और संविधान बचाने की लड़ाई में फिर से राहुल गांधी के साथ खड़े हैं। वहीं अजय माकन ने तंवर को कांग्रेस का पटका पहनाकर उनका स्वागत किया। उन्होंने कहा कि तंवर के कांग्रेस में शामिल होने से संविधान को बचाने, बाबा साहेब अंबेडकर के आदर्शों को आगे बढ़ाने के लिए राहुल गांधी द्वारा शुरू की गई लड़ाई को और मजबूती मिलेगी। अशोक तंवर के समृद्ध अनुभव को देखते हुए उनके कांग्रेस में दोबारा शामिल होने से पार्टी और मजबूत होकर उभरेगी।

दूसरा दिन 4 अक्टूबर 2024

डिजिटल साउंड और हैरत एंगेज ऐक्शन के साथ हुआ ताड़का वध

नई दिल्ली लाल किला ग्राउंड में आयोजित लव कुश रामलीला कमेटी के प्रेसीडेंट अर्जुन कुमार ने बताया दूसरे दिन लीला के विशाल मंच पर ताड़का वध और सुबाहु वध के एक्शन सींस को सजीव और जीवंत बनाने के लिए बॉलिवुड फिल्मों के मशहूर एक्शन डायरेक्टर मनोज कांगड़ा की निगरानी में डिजिटल साउंड और कम्प्यूटर ग्राफिक्स का ऐसा जानदार प्रयोग किया गया कि मैदान में बैठे हजारों राम भक्तो ने जमकर तालियां बजाईं। आज लीला अवलोकन के लिए माननीय श्रीपद नायक, विद्युत एवं नवीनीकरण ऊर्जा राज्य मंत्री, भारत सरकार मुख्य अतिथि के रुप में पधारे मंत्री ने प्रभु श्री राम को तिलक कर प्रभु श्री राम का आशीर्वाद लिया और कहां राम की लीलाएं भारतीय संस्कृति की आत्मा है लीला के अध्यक्ष अर्जुन कुमार के अनुसार आज भव्य मंच पर मुम्बई फिल्म नगरी और टीवी के मंझे हुए कलाकारो द्वारा पुत्र यज्ञ के लिए श्रृंगी महर्षि को बुलाना, अग्नि देव प्रकट होकर पायस देना, राम जन्म, नामकरण संस्कार, विश्वामित्र यज्ञ में विघ्न से लेकर ताड़का वध, मारीच युद्ध, सुबाहु वध, की लीला का मंचन हुआ। लीला मंचन के उपरांत कमेटी महासचिव सुभाष गोयल, पवन गुप्ता चेयरमैन, सत्य भूषण जैन, सौरव गुप्ता, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अंकुर गोयल कोषाध्यक्ष, प्रवीण सिंगल लीला मंत्री सहित अन्य पदाधिकारियों ने मंच पर पर प्रभु श्री राम ,सीता, लक्ष्मण की पूजा अर्चना की और आज आए सभी अतिथियों का स्वागत किया।

युवा नेतृत्व की बात करने वाली जन सुराज का पहला कार्यकारी अध्यक्ष रिटायर्ड अधिकारी : वसीम राजा

गोपालगंज, अक्तूबर : बिहार भाजपा के प्रवक्ता मुस्लिम कल्याण बोर्ड के पूर्व उपाध्यक्ष वसीम राजा ने प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी के पहले कार्यकारी अध्यक्ष अध्यक्ष की घोषणा पर तंज कसते हुए कहा की युवा नेतृत्व की बात करने वाले प्रशांत किशोर की पार्टी का पहला कार्यकारी अध्यक्ष सेवा निवृत अधिकारी है , जिस प्रकार प्रशांत किशोर जी युवा नेतृत्व की बात करते थे बिहार के युवावों को ऐसा महसूस हो रहा था की पार्टी का अध्यक्ष कोई युवा चेहरा होगा परंतु प्रशांत किशोर ने अपना निर्णय युवावों के पक्ष मे नहीं किया। वसीम राजा ने कहा कि आने वालो दिनों मे भी प्रशांत किशोर जी युवावों के साथ इसी प्रकार का व्यवहार करेंगे क्युकी जो भी युवा उनसे जुड़ रहे है वो सबको आने वाले विधानसभा चुनाव की टिकट देने की बात कर रहे थे परंतु कल के उनकी पार्टी के स्थापना के मौके पर दिए गए भाषण से साफ संकेत मिल रहा है की वो किसी भी कार्यकर्ता को टिकट नही देंगे नए नए चेहरे तलाश कर लाएगे। वसीम राजा ने कहा की प्रशांत किशोर जी कभी भी अपने बात पर स्थिर नही रहते वो बिहार के युवावों को गुमराह कर रहे है वो कभी भी बिहार के भविष्य के बारे मे चिंता नही कर सकते वो एक व्यापारी है और बिहार की राजनीति को बी व्यापार की मंडी बना देंगे।

नेहरु युवा केंद्र ने चलाया स्वच्छता अभियान

कुरुक्षेत्र, अक्तूबर : युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के दिशानिर्देश अनुसार नेहरू युवा केंद्र कुरुक्षेत्र के द्वारा गांधी जयंती का आयोजन स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता के विषय पर नेहरु युवा केंद्र, कुरुक्षेत्र कार्यालय में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला युवा अधिकारी, कुरुक्षेत्र, लेखा एवं कार्यक्रम सुपरवाइजर, युवा मंडलों के सदस्यों व राष्ट्रीय युवा स्वयंसेकों के द्वारा गांधी की प्रतिमा पर फूल अर्पित कर व दीप प्रज्जवलित किया। जिला युवा अधिकारी ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह दिन हमें महात्मा गांधी के जीवन, उपलब्धियों और नैतिक मूल्यों पर विचार करने का मौका देता है। वही 17 अक्तूबर से चल रहे स्वच्छता अभियान का समापन समारोह भी मनाया गया जिसका उद्देश्य यह संदेश देना है कि स्वच्छता न केवल आदत होनी चाहिए। बल्कि, हमारे संस्कारों और आचरण में भी स्वच्छता का समावेश होना चाहिए। वही इस स्वच्छता अभियान से युवाओं ने यह बताया है कि वे न केवल अपने क्षेत्रों को स्वच्छ रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं, अपितु परिवारों और समुदायों को भी स्वच्छता के महत्व के प्रति जागरूक कर रहे हैं। इस अवसर पर नेहरु युवा केंद्र, कुरुक्षेत्र के सभी राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवकों और युवा मंडलों के सदस्यों द्वारा स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत रेलवे ट्रैक सफाई , एकल अष्ट प्लाटिक को एकत्रित, शपथ ग्रहण और मोहन नगर, कुरुक्षेत्र से रेलवे स्टेशन कुरुक्षेत्र तक जागरूकता रैली निकलते हुए गांधी के सपनों का भारत हमें बनाना है, पूरा भारत स्वच्छ रहे यही हमारा नारा है आदि नारों के माध्यम से आम जनमानस को सफाई के प्रति जागरूक किया गया।

यूपीआई इनेबल्ड ऐप्स से सुरक्षित लेन-देन की सुविधा, प्रीमियम कार्ड से बेहतरीन यात्रा और बैंकिंग अनुभव

नई दिल्ली, अक्तूबर : आईसीआईसीआई बैंक ने मेकमायट्रिप (एमएमटी) के साथ मिलकर यात्रा के शौकीन लोगों के लिए प्रीमियम सह-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड लॉन्च किया है। इस कार्ड से यात्रा अनुभव को बेहतर बनाया जा सकता है और असीमित रिवॉर्ड अर्जित किए जा सकते हैं जो कभी एक्सपायर नहीं होते। इसमें मायकैश (एमएमटी की रिवॉर्ड करेंसी) के रूप में लाभ मिलेगा, जिसमें 1 मायकैश का मूल्य 1 के बराबर होगा। होटल बुकिंग पर 6 फीसदी , फ्लाइट, हॉलिडे, कैब और बस बुकिंग पर 3 फीसदी तथा अन्य खर्चों पर 1 फीसदी मायकैश मिलेगा, जो मौजूदा छूट के अतिरिक्त है। यह कार्ड मास्टरकार्ड और रुपे दोनों पर संचालित होता है और रुपये कार्ड को यूपीआई से जोड़ा जा सकता है, जिससे यूपीआई एनेबल्ड ऐप्स से सुरक्षित लेनदेन संभव है। इसके साथ एमएमटीब्लैक गोल्ड सदस्यता भी मिलती है, जो विशेष लाभ प्रदान करती है। कार्ड की कीमत 999 प्लस जीएसटी है और जुड़ने पर 1,000 का मेकमायट्रिप वाउचर भी मिलता है।

राजधानी दिल्ली के स्थानीय क्षेत्र में फैले हुए वायु प्रदूषण स्रोतों से निपटने के चलते पीएम 2.5 में आई गिरावट

नई दिल्ली, अक्तूबर : स्थानीय क्षेत्रों में फैले वायु प्रदूषक तत्व, जोकि टूटी-फूटी सड़कों, निर्माण कचरे की अवैध तरीके से डंपिंग, कचरे को जलाने, टूटी फुटपाथों आदि के कारण फैलते हैं, वायु प्रदूषण बढ़ाते हैं। आईआईटी दिल्ली द्वारा कराए अध्ययन द इंपैक्ट ऑफ द डिस्पर्स्ड सोर्सेज प्रोग्राम ऑन लोकल एयर क्वालिटी में इन स्रोतों को घटाने पर स्थानीय हवा की गुणवत्ता में होने वाले सुधारसंबंधी प्रभावों का आकलन किया गया। पोर्टेबल कम लागत सेंसर (पीएलसीएस) के माध्यम से कराए गए अध्ययन से जमीनी स्तर पर स्पष्ट प्रभाव सामने आया है, इसे देश के सभी शहरों द्वारा अपनाने की सलाह दी गई है यह अध्ययन कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमैंट (सीएक्यूएम-एनसीआर) के दिशा-निर्देशन में संचालित डिस्पर्स्ड सोर्सेज प्रोग्राम (डीएसपी) पर आधारित है। इस अध्ययन से यह प्रदर्शित किया गया है कि किस प्रकार इन मुद्दों से निपटकर स्थानीय वायु गुणवत्ता और परिणामस्वरूप शहरों में रहने योग्य स्थतियों में सुधार किया जा सकता है। इस अवसर पर तारिक थॉमस, अतिरिक्त आयुक्त, दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे।

हम कार्यक्षमता की सीमाओं को बढ़ाने का लगातार प्रयास कर रहे : जितेंद्र

नई दिल्ली, अक्तूबर : सिंपोलो टाइल्स और बाथ वेयर सिरेमिक और सतह डिजाइन उद्योग में एक अग्रणी कंपनी है। कंपनी ने अपने बहुप्रतीक्षित उत्पाद के लॉन्चिंग इवेंट में पर्सपेक्टिव-2025 का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस इवेंट में भारत भर के 400 से अधिक प्रीमियम डीलर्स और केरल के 100 अधिक प्रमुख आर्किटेक्ट्स ने भाग लिया। जिन्होंने सिंपोलो की नवीनतम अत्याधुनिक कलेक्शन और सतहों का अनावरण देखा। इवेंट की सफलता पर टिप्पणी करते हुए जितेंद्र आधारा, सिंपोलो समूह के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक ने कहा कि- सिंपोलो की नवाचार के प्रति प्रतिबद्धता पर जोर दिया,सिंपोलो में, हम डिजाइन और कार्यक्षमता की सीमाओं को बढ़ाने का लगातार प्रयास कर रहे हैं। पर्सपेक्टिव के साथ, हमने न केवल ऐसे उत्पाद पेश किए हैं जो दृष्टिगत रूप से आकर्षक हैं, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि वे हमारे ग्राहकों के लिए टिकाऊपन और सुरक्षा के उच्चतम मानकों को पूरा करते हैं।

मामला 5 राज्यों में बायोजैनेटिक और स्माइलैक्स फार्मा द्वारा फैलाए नशे के साम्राज्य का

फार्मा कंपनियों के कामकाज को लेकर मुकुट बिहारी गोयल व विभोर गोयल के निकले थे गैर जमानती वारंट

मुकुट बिहारी गोयल

फरार डीएसपी वविंदर महाजन

तेलंगाना के 2 शहरों की अदालत ने निकाले थे दोनों के वारंट

विभोर गोयल

चंडीगढ़, अक्तूबर : पंजाब एएनटीएफ की कार्रवाई के बाद विवादों में आई बायोजैनेटिक और स्माइलैकस फार्मा कंपनियां पहले भी देश के दूसरे राज्यों में विवादों के घेरे में रह चुकी हैं।

हिमाचल प्रदेश के बद्दी में स्थित बायोजैनेटिक और स्माइलैकस फार्मा जयपुर के रहने वाले गोयल परिवार से संबंधित हैं। कंपनी में मुकुट बिहारी गोयल एमडी है व उनका बेटा विभोर गोयल डायरैक्टर है।

पंजाब एएनटीएफ की कार्रवाई के बाद दोनों फार्मा कंपनियों से अल्प्राजोलम और ट्रामाडोल से संबंधित रिकवरी में सामने आया था कि बिना प्रशासन को सूचित किए धड़ल्ले से नशे की आदत डालने वाली इन दवाइयों की मैन्युफैक्चरिंग हो रही थी। जो इस ओर इशारा कर रही थी कि इन दवाइयों की सप्लाई एक बड़े रैकेट को की जा रही थी। क्योंकि सिर्फ 8 महीने में 20 करोड़ अल्प्राजोलम दवाइयां मैन्युफैक्चर की गई थी।

सूत्रों की मानें तो इस सारे रैकेट को चलाने के लिए गोयल परिवार को किसी की शह भी प्राप्त थी। डॉक्यूमैंटस के जरिए एएनटीएफ के डीएसपी वविंदर महाजन यह बात जान चुके थे और इसी के चलते मुकुट बिहारी 2 बार अमृतसर डीएसपी महाजन से मिलने पहुंचे थे। आने वाले समय में इस मामले की अगर गहराई से जांच होती है तो कई बड़े नाम सामने आ सकते हैं। हिमाचल से संबंधित कई राजनीतिक लोग मुकुट बिहारी गोयल के करीबी माने जाते हैं।

बता दें कि गोयल परिवार की फार्मा कंपनियां तेलंगाना के शहर संगारेड्डी और गडवाल में विवादों में रही है। दोनों शहरों की कोर्ट की तरफ से मुकुट बिहारी गोयल और विभोर गोयल के गैर जमानती वारंट भी निकाले गए थे। वर्ष 2019 में गड़वाल कोर्ट की ओर से स्माइलैक्स फार्मा के मुकुट बिहारी गोयल और विभोर गोयल के गैर जमानती वारंट निकाले गए थे। कंपनी पर डीएमआर (ओए) एक्ट की सेक्शन 3(डी) के उल्लंघन के आरोप लगे थे। वहीं 2023 में बायोजैनेटिक फार्मा पर डी एंड सी एक्ट1940 की सैक्शन 18(ए)(आई) की उल्लंघना के आरोप लगे थे। आने वाले समय में मेहाली एएनटीएफ में दर्ज एफआईर नंबर 31 की गहराई से जांच होने पर सामने आ सकता है कि दोनों फार्मा कंपनियों कब से नशे के रेकेट में शामिल थी। इसके अलावा कई अन्य लोगों के नाम भी इस रेकेट में सामने आ सकते हैं।

स्वच्छ स्टेशन अभियान दिल्ली मंडल के प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर आयोजित किया गया

नई दिल्ली, अक्तूबर : भारतीय रेलवे पर महात्मा गांधी के सपने को साकार करने और स्वच्छता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए 2 अक्तूबर को उनके जन्मदिन के अवसर पर श्रद्धांजलि देने के लिए 1 से 15 अक्तूबर तक स्वच्छता पखवाड़ा अभियान चलाया जा रहा है। सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर सघन स्वच्छता अभियान चलाया गया । प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर सफाई मशीनों, उपकरणों और संयंत्रों, सफाई कर्मचारियों के लिए सुरक्षात्मक गियर की उपलब्धता और कार्यप्रणाली सुनिश्चित की गई । रेल यात्रियों को जागरूक करने के लिए कूड़ेदानों की उपलब्धता और कूड़ेदान भरें अभियान चलाया गया। अभियान के तहत नालियों और शौचालयों की सफाई पर जोर दिया गया। हाइड्रेंट पाइपों के रखरखाव और स्टैकिंग को उचित तरीके से सुनिश्चित करने के लिए निरीक्षण किया गया।

10 मार्शलों को अपनी बात रखने का मौका देना चाहिए : देवेन्द्र यादव

नई दिल्ली, अक्तूबर : दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि पिछले महीने दिल्ली विधानसभा का पूरा सत्र में आम आदमी पार्टी और भाजपा के विधायकों ने एकदम नौकरी से निकाले गए 10 हजार मार्शलों की सहानुभूति लेने के लिए पूरे दो दिन बिता दिए परंतु अगले दिन से ही दोनो दलों ने मार्शलों की सुध तक नही ली। उन्होंने कहा कि यह चौकाने वाला है कि आजीविका का संकट झेल रहे मार्शलों को दिल्ली के उपराज्यपाल ने भी मिलने का समय नही दिया है, जबकि कांग्रेस पार्टी का मानना है कि राज निवास कार्यालय को 10 मार्शलों को अपनी बात रखने का मौका देना चाहिए। देवेन्द्र यादव ने कहा कि आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविन्द केजरीवाल के धोखे का परिणाम डीटीसी बसों व अन्य विभागों में काम करने वाले 10 हजार मार्शल भुगत रहे है। एक नोटिस के बाद अगले दिन से नौकरी गंवाने वाले युवा और युवती मार्शल दिल्ली सरकार द्वारा भ्रमित करने की नीति से भर्ती करने कारण आज दर-दर भटक रहे है और इनके परिवारों के सामने अजीविका का संकट खड़ा है। देवेन्द्र यादव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी कभी दोहरी राजनीति नही करती है और मार्शलों की पीड़ा को समझते हुए उनके साथ खड़ी है।

भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने कांग्रेस पर झूठे चुनावी वादे करने का आरोप लगाया

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद अनुराग ठाकुर ने बृहस्पतिवार को कांग्रेस पर झूठे चुनावी वादे करने का आरोप लगाया। इसके साथ ही ठाकुर ने कहा कि न तो हिमाचल प्रदेश की दुर्दशा खत्म हो रही है और न ही गांधी परिवार राज्य की स्थिति और कांग्रेस द्वारा किए गए झूठे चुनावी वादों पर अपनी चुप्पी तोड़ रहा है। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने यहां जारी एक बयान में कहा, हिमाचल की माताएं और बहनें अब भी 1500 रुपये प्रति माह (भत्ते) का इंतजार कर रही हैं, जबकि किसान दो रुपये प्रति किलोग्राम गोबर और 80-100 रुपये प्रति लीटर दूध की खरीद का इंतजार कर रहे हैं। हमीरपुर निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा सांसद ने कहा, बेरोजगार युवा पांच लाख नौकरियों का इंतजार कर रहे हैं और परिवार 300 यूनिट मुफ्त बिजली का इंतजार कर रहे हैं, जैसा कांग्रेस नेताओं ने वादा किया था। उन्होंने कहा कि सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी ने दो साल पहले कांग्रेस द्वारा किए गए झूठे वादों के बारे में अभी तक एक शब्द नहीं कहा है। ठाकुर ने कहा, न तो हिमाचल का इंतजार खत्म हो रहा है और न ही राज्य की दुर्दशा पर गांधी परिवार की चुप्पी टूट रही है। भाजपा नेता का यह बयान प्रियंका गांधी द्वारा हरियाणा में एक चुनावी रैली के दौरान हिमाचल प्रदेश की कांग्रेस सरकार की सराहना किए जाने के एक दिन बाद आया है।

कनाडा में भी हरियाणा की लोक सांस्कृतिक विरासत की है धाक : गुलाब सिंह एनआरआई

सांझी उत्सव के अवसर पर किया विरासत प्रदर्शनी का अवलोकन

सांझी उत्सव के अवसर पर विरासत प्रदर्शनी का अवलोकन करते गुलाब सिंह एनआरआई।

कुरुक्षेत्र, अक्तूबर : विरासत द्वारा आयोजित सांझी उत्सव 2024 के अवलोकन के अवसर पर कनाडा में पिछले 25 साल से हरियाणवी संस्कृति एवं खेलों को बढ़ावा दे रहे हैं। हरियाणा की संस्कृति को हरियाणा के लोगों ने प्रदेश एवं देश की सीमा से बाहर भी जीवित रखा हुआ है। हम सब कनाडा वासी हरियाणा की संस्कृति को युवा पीढ़ी से जोड़ने के लिए हरियाणवी खेलों एवं लोक संस्कृति से जुड़े हुए सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, ताकि युवा पीढ़ी हरियाणा की संस्कृति से रूबरू हो सके। ये उद्गार कनाड़ा एनआरआई एवं मुख्यमंत्री के पूर्व राजनीतिक सलाहाकार गुलाब सिंह सैनी ने विरासत के अवलोकन करने के पश्चात कहे। उन्होंने कहा कि कनाड़ा में हर साल खेलों का आयोजन किया जाता है, जिसमें हरियाणा के खिलाड़ियों को लाखों रुपए की ईनाम राशि प्रदान की जाती है। इसी कड़ी में हरियाणा दिवस, तीज उत्सव जैसे सांस्कृतिक आयोजन भी कनाड़ा में किए जाते हैं। विरासत के सांझी उत्सव के अवलोकन के पश्चात उन्होंने कहा कि विरासत के माध्यम से हरियाणा की संस्कृति को फिर से जीवंत करने का प्रयास किया गया है। आने वाले दिनों में विरासत हरियाणा ही नहीं अपितु उत्तर भारत का एक ऐसा सांस्कृतिक संस्थान बनेगा जिसके माध्यम से युवाओं को संस्कृति के दर्शन भी होंगे और उनको रोजगार भी मिलेगा। इससे पूर्व गुलाब सिंह सार्क देशों के कनाड़ा की ओर से प्रतिनिधि के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि विरासत की प्रदर्शनी विशेष रूप से आकर्षण का केन्द्र है। यहां पर लोक पारंपरिक हवेलियों के दरवाजों को जिस तरीके से प्रस्तुत किया गया है वह अपने आप में एक अनूठा प्रयोग है। उन्होंने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले विकास रेल्हन की टीम को योगदान के लिए सम्मानित भी किया।

रेल्हन ने विरासत पर बनाया गीत

हर की धरती हरियाणा पै छाई खूब बहार, सांझी गावैं खुशी मनावैं गावैं गीत मल्हार गीत के माध्यम से वीके स्टुड़ियों के प्रभारी विकास रेल्हन ने विरासत पर हरियाणवी गीत गाकर सबका मन मोह लिया। इस अवसर पर मैडम रमाकान्ता शर्मा ने सांझी के गीत सांझी कैं तेरे भाई गाकर पूरे वातावरण को सांझीमय कर दिया। इस मौके पर मीनाक्षी शर्मा ने हरियाणवी गीतों के साथ-साथ लोक गायकी के विरासत के मंच से बेहतरीन नमूने प्रस्तुत कर खूब वाहवाही लूटी।

दिल्ली में अरविंद केजरीवाल के खाली किया सीएम आवास

परिवार के साथ नए बंगले में हुए शिफ्ट

नई दिल्ली। अरविंद केजरीवाल ने लुटियंस जोन में अपने नए पते पर जाने के लिए शुक्रवार को 6, फ्लैगस्टाफ रोड आवास खाली कर दिया। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक को अपनी पत्नी और बेटे के साथ कार में घर से निकलते देखा गया। उनके माता-पिता और बेटी दूसरे में चले गए। इसके लिए सुबह से ही आवास में मिनी ट्रकों का प्रवेश शुरू हो गया। केजरीवाल, जिन्होंने पिछले महीने दिल्ली के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था, अपने परिवार के साथ मंडी हाउस के पास फिरोजशाह रोड पर पंजाब के राज्यसभा सांसद अशोक मित्तल के आधिकारिक आवास पर रहेंगे, जो रविशंकर शुक्ला लेन में अअढ मुख्यालय के करीब है। गुरुवार को पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसौदिया भी राजेंद्र प्रसाद रोड स्थित बंगले में शिफ्ट हो गए। पार्टी नेताओं ने कहा कि यह घर आप के राज्यसभा सांसद हरभजन सिंह का आधिकारिक आवास है। उत्तरी दिल्ली के सिविल लाइंस में 6, फ्लैगस्टाफ रोड को छोड़ने का फैसला करने के बाद, सांसदों, विधायकों और पार्षदों सहित कई पार्टी नेताओं ने केजरीवाल को अपने घर की पेशकश की थी, जहां वह 2015 से मुख्यमंत्री के रूप में रह रहे थे। केजरीवाल का नया आवास, जहां वह अपने परिवार के साथ रहेंगे, रविशंकर शुक्ला लेन स्थित आप मुख्यालय के करीब है। एक वीडियो संदेश में आप सांसद मित्तल ने कहा कि उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि केजरीवाल ने उनका घर चुना है। उन्होंने कहा कि जब केजरीवाल ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया, तो मुझे पता चला कि उनके पास रहने के लिए कोई जगह नहीं है... मैंने उन्हें अपने दिल्ली आवास पर अपना मेहमान बनने के लिए आमंत्रित किया और मुझे बहुत खुशी हुई कि उन्होंने मेरा अनुरोध स्वीकार कर लिया। पार्टी नेताओं ने कहा कि नई दिल्ली क्षेत्र में रहते हुए।

पुलिस कार्मिकों को मिलेगा ई-पेंशन प्रणाली का लाभः मुख्यमंत्री

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पुलिस कार्मिकों को 'ई-पेंशन' से जोड़ने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि हर पुलिस कार्मिक को समय पर पदोन्नति मिले, उनकी चरित्र पंजिका पर सही विवरण अंकित हो, उनकी योग्यता और प्रतिभा के अनुरूप पदस्थापना मिले और सेवानिवृत्ति के समय देयकों का भुगतान समय से हो, यह प्रत्येक दशा में सुनिश्चित किया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने पुलिस कार्मिकों को आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराने और बेहतरीन प्रशिक्षण के लिए व्यवस्थाओं को और बेहतर करने के भी निर्देश दिए हैं।

शुक्रवार को अपर पुलिस महानिदेशक स्तर के सभी अधिकारियों के साथ विशेष बैठक में मुख्यमंत्री ने एक- एक कर सभी एडीजी से उनकी वर्तमान पदस्थापना अवधि में किये गए कार्यों, अपनाए गए नवाचारों और उपलब्धियों के बारे में जानकारी ली। विशेष बैठक में मुख्यमंत्री जी द्वारा दिये गए प्रमुख दिशा-निर्देश निम्नवत हैंः-

* पुलिस की सभी इकाइयों के बीच बेहतर संवाद और समन्वय होना चाहिए। लॉजिस्टिक इकाई हो, अभिसूचना इकाई हो अथवा, एसआईटी, क्राइम, पीआरवी 112 आदि, इकाइयाँ भले ही अलग-अलग हैं, लेकिन सभी का लक्ष्य एक ही है, प्रदेश में बेहतर कानून व्यवस्था बनाये रखना। इसलिए सभी के बीच बेहतर तालमेल होना आवश्यक है।
* वरिष्ठ अधिकारी समय पर कार्यालय आएं। किसी भी कार्यालय में कोई फाइल तीन दिन से अधिक लंबित न हो। यदि किसी तरह की समस्या हो तो डीजीपी कार्यालय, गृह विभाग अथवा सीधे मुझसे समय लेकर मिल सकते हैं, लेकिन अनिर्णय की स्थिति न होनी चाहिए। फाइल लंबित नहीं रहनी चाहिए।
* बहुत सारी इकाइयों में फील्ड विजिट बढ़ाये जाने की आवश्यकता है। एडीजी स्तर के अधिकारी के जिलों में जाने से अच्छा अधीनस्थ पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। जिलों में जाएं अपनी इकाई से जुड़े कामकाज की समीक्षा करें, जहां सुधार की आवश्यकता हो, उस अनुरूप काम किया जाए।
* पुलिस बल में लॉजिस्टिक्स का अभाव न हो। समय-समय पर इसकी समीक्षा करते रहें। हमारा पुलिस बल आधुनिक उपकरणों से लैस होनी चाहिए। अभी 40 अश्वों की आवश्यकता और है, कुंभ में इसकी आवश्यकता पड़ेगी। इनकी क्रय और प्रशिक्षण की प्रक्रिया यथाशीघ्र पूरी की जाए। प्रदेश में पहली बार होने जा रही कंडम वीपन्स के निस्तारण की प्रक्रिया को सावधानी से पूरा किया जाए।

चकबंदी अधिकारियों पर रिश्वत लेकर भी काम ना करने का लगाया आरोप, किया प्रदर्शन

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शुक्रवार को कोतवाली क्षेत्र के गांव चकफैरी के ग्रामीणों ने चकबंदी के दौरान चक हटाकर किसी दुसरे व्यक्ति का चक लगाने का आरोप लगाते हुए प्रदर्शन किया, ग्रामीण राधेश्याम ने बताया कि प्रार्थी की ग्राम आदमपुर में स्थित गाटा सं० 340 में कृषि भूमि है। गाटा सं0 340 आदमपुर चकफेरी मार्ग पक्की सड़क पर स्थित है। जिसमे उक्त आदमपुर निवासी एक व्यक्ति की जोत 2 बीघा है लेकिन चक 8 बीघा भूमि का लगवा लिया है। जिससे प्रार्थी की मूल जोत व अन्य परिवारजनों की कीमती भूमि जोकि पक्की सड़क के किनारे आ रही है उक्त व्यक्ति ने चकबंदी अधिकारियों से हमसाज होकर अपना चक प्रार्थी व प्रार्थी के परिवारजनो की कीमती भूमि को हटाकर गाटा सं0 340 पर बनवा लिया है। गाटा स० 340 में प्रार्थी का पुराना कुँआ है व सफेदा के 30-40 पेड़ है। प्रार्थी ने अपना चक गाटा सं 340 पर लगवाने हेतु निगरानी न्यायालय डी०डी०सी० अमरोहा के समक्ष योजित की थी। जिसमें सुनवाई के दौरान गाटे का स्थल निरीक्षण किया जाना सुनिश्चित किया गया, स्थल निरीक्षण पर जाने के लिये प्रार्थी से एक अधिकारी के पेशकार व स्टेनों ने प्रार्थी से कहा कि स्थल निरीक्षण जाने के लिये 50 हजार रुपए का खर्चा आयेगा, प्रार्थी किसी तरह व्यवस्था करके 50 हजार रुपए लेकर पेशकार व स्टैनो के पास गया तब डीडीसी के पास लेकर गये और प्रार्थी से उपरोक्त डीडीसी साहब के पेशकार तथा स्टैनो ने 50 हजारू रुपए ले लिये। प्रार्थी को स्थल निरीक्षण पर जाने का आश्वासन दे दिया कि 30.09.2024 तक आपका स्थल निरीक्षण हो जायेगा। लेकिन आज तक न तो स्थल निरीक्षण हुआ है और प्रार्थी की पत्रावली निगरानी एक पक्षीय सुनकर दिनाक 01.10.2024 को विपक्षी के पक्ष में आदेश कर दिया, जब प्रार्थी के विरूद्ध आदेश निगरानी में हुआ तो प्रार्थी को ज्ञात हुआ कि प्रार्थी से पैसे लेने के बाद भी प्रार्थी का न तो स्थल निरीक्षण हुआ और न ही गुण दोषों के आधार पर निस्तारण हुआ, उपरोक्त तीनों लोगो ने प्रार्थी के न तो पैसे लौटाये और न ही प्रार्थी का चक मूल जोत गाटा सं 340 पर लगाया, जब प्रार्थी ने अपना काम न होने पर उक्त लोगों से कहा कि हमारे पैसे वापस करो तो उक्त लोगो ने प्रार्थी को धमकी दी कि तेरी भूमि को खुर्द बुर्द कर देगे, तुझे झूठे मुकदमें में फंसा देंगे। अगर तूने कहीं हमारी शिकायत की तो प्रार्थी तभी से काफी परेशान है, प्रार्थी ने अपने परिवार के लोगों के साथ मिलकर विरोध प्रदर्शन और जिलाधिकारी को शिकायती पत्र भेजकर न्याय की गुहार लगाई प्रदर्शन करने वालों में राधेश्याम, तोताराम, गुड्डू ,इमरत, हरवीर ,मनवीर ,चंद्रपाल, बिजेंदर, मंगलू ,आरती, संता, शकुंतला, प्रेम, सुमन, भोलू, नेमपाल आदि मौजूद रहे।

नरसिंहानंद सरस्वती द्वारा पैगंबर साहब पर की गई टिप्पणी से भड़का मुस्लिम समाज, सौंपा ज्ञापन

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शुक्रवार को नगर के सैकड़ो मुस्लिम समाज के लोगों ने ज्ञापन के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए स्वामी नरसिंह आनंद सरस्वती को सख्त से सख्त सजा देने की मांग की, बताते चलें कि पैगंबर मोहम्मद साहब पर आपत्तिजनक बयान देने वाले नरसिंहानंद सरस्वती का मुसलमानों ने विरोध करते हुए एसडीएम को ज्ञापन देकर कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है। नगर वासियों ने नरसिंहानंद सरस्वती द्वारा बयान दिये जाने का विरोध करते हुए मुख्यमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन एसडीएम को ज्ञापन दिया। ज्ञापन देने वाले उलमाओं ने कहा कि यति नरसिंहानंद सरस्वती ने पैगंबर मोहम्मद साहब पर गलत टिप्पणी की है। इसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा, नरसिंहानंद सरस्वती ने भड़काऊ भाषण देकर पैगंबर मोहम्मद साहब को अपमानित किया है इससे मुसलमान की भावनाओं को गहरी चोट पहुंची है, नरसिंहानंद सरस्वती द्वारा आये दिन भड़काऊ भाषण देकर देश की जनता के बीच नफरत पैदा की जा रही है, पूरी दुनिया का मुसलमान पैगंबर मोहम्मद साहब पर अपनी जान देने को तैयार है।नरसिंहानंद सरस्वती ने पैगंबर साहब पर गलत भाषण देकर यह साबित कर दिया है कि वह कोई संत नहीं है, नरसिंहानंद सरस्वती के खिलाफ कड़ी धाराओं में मुकदमा दर्ज किया जाये। ज्ञापन देने वालों में मुख्य रूप से कारी इरशाद अहमद, मौलाना शमशुल हक, मुफ्ती मेराज अहमद, बाबा फरीद, बाबर खांन, हाफिज अकरम, अजीम गाजी, ओवैस गाजी, मोहम्मद साकिब आदि मौजूद थे।

पंचायत में अधिकारियों के ना पहुंचने पर किया जाएगा रोड जाम, भाकियू अंबावत

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शुक्रवार को भारतीय किसान यूनियन अंबावत ने उप जिला अधिकारी को ज्ञापन देकर किसानों की समस्याओं का समाधान करने के लिए पंचायत में संबंधित अधिकारियों को भेजे जाने की मांग की है। शुक्रवार को भारतीय किसान यूनियन अम्वावत के कार्यकर्ता एकत्र होकर ब्लॉक के प्रांगण में पहुंच गये। वहां उन्होंने एसडीएम सुनीता सिंह को ज्ञापन देते हुए कहा कि 7 अक्टूबर को रहरा ब्लॉक में किसानों की समस्याओं का समाधान करने के लिए पंचायत का आयोजन किया गया है। जिसमें इंस्पेक्टर हसनपुर, रहरा एसड्ढओड्ढ, बीडीओ रहरा, जेई विद्युत बुरावली, सप्लाई इंस्पेक्टर गंगेश्वरी को भेजा जाये। यदि 1:00 तक संबंधित अधिकारियों की उपस्थिति पंचायत में नहीं हुई तो वह रहरा हसनपुर मार्ग को जाम कर देंगे। जिसकी समस्त जिम्मेदारी शासन प्रशासन की होगी। भाकियू अम्बावत के जिला अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार लोहिया ने बताया कि किसानों की अनेकों समस्या क्षेत्र में उभर रही है। जिनसे निजात दिलाने के उद्देश्य से पंचायत का आयोजन किया गया है। ज्ञापन देने वालों में मुख्य रूप से सुरेंद्र कुमार लोहिया, प्रेम सिंह, मनोज नागर, रामचंद्र सिंह, मोहम्मद उमर, जगतवीर, राजवीर सिंह, नवल किशोर, धर्मराज सिंह, अरविंद आदि सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

सीसी रोड का पालिका अध्यक्ष ने किया फीता काटकर शुभारंभ

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शुक्रवार को नगर पालिका अध्यक्ष द्वारा नगर के झकड़ी अड्डे से चकौरी रोड तक बनने वाली 115 मीटर लंबी सीसी रोड एवं नाली निर्माण का फीता काटकर शिलान्यास किया, साथ ही पालिका अध्यक्ष द्वारा एक रेडीमेड शोरूम का भी फीता काटकर शुभारंभ किया गया, इस दौरान पालिका अध्यक्ष ने कार्यदाही फॉर्म के ठेकेदार को निर्माण कार्य में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखने की चेतावनी दी, नगर पालिका द्वारा वार्ड नंबर 2 मौहल्ला होली वाला में झकड़ी अड्डे से चकौरी रोड तक बनने वाली 115 मीटर लंबी सीसी रोड एवं नाली निर्माण 11 लाख रुपए की लागत से बनवाई जा रही है। जिसका शुक्रवार को पालिका अध्यक्ष राजपाल सैनी द्वारा फीता काटकर शिलान्यास किया गया। शिलान्यास के दौरान पालिका अध्यक्ष द्वारा ठेकेदार को दिशा निर्देश देते हुए निर्माण कार्य में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखने को कहा गया है। उन्होंने कहा कि नगर के विकास के लिए और भी कार्य जल्द कराए जाएंगे,नगर का चहूमुखी विकास किया जा रहा है, तथा हमारी नगर पालिका आदर्श नगर पालिका के रूप में जानी जाएगी, इस मौके पर मुख्य रूप से वार्ड सभासद चमन देवी, पप्पू सिंह,कृष्णा वाल्मीकि, संजय सहदेव, रविंद्र चौहान ,शाहिद, बबलू, सुधा रानी, बबीता देवी आदि सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी की हुई पूजा अर्चना, मंदिरों में रही भारी भीड़

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शुक्रवार को नगर के प्रसिद्ध सिद्ध पीठ चामुंडा मंदिर में नवरात्र के दूसरे दिन माता ब्रह्मचर्य की पूजा अर्चना की गई महिला पुरुषों द्वारा घरों में माता की पूजा अर्चना करने के बाद मंदिर में जाकर दर्शन किए गए नगर सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में भी मंदिरों में भक्तों की भारी भीड़ रही, पंडित सोमनाथ शर्मा ने बताया कि मां दुर्गा का द्वितीय रूप ब्रह्मचारिणी का है तथा नवरात्रों में दूसरे दिन इन्हीं की पूजा की जाती है यह अपने भक्तों को आवेदन देकर उनकी हर प्रकार से रक्षा करती हैं तथा नवरात्रों में सच्चे मन से व्रत एवं पूजन करने वाले को सब कुछ प्राप्त होता है, उधर नगर पालिका प्रशासन द्वारा विशेष सफाई व्यवस्था की गई।

अमित किराना - महावीर गंज

काफी बार शिकायत कर दी गयी काफी दुर्घटना हो चुकी है पर कोई भी इस वाटर लीकेज को ठीक करने नहीं आता है पार्षद कुलदीप पाण्डेय जी से भी बहुत विनती कर ली पर झूठा आश्वाशन दें दिया जाता है त्यौहार का समय है बाजार में ग्राहक कैसे आये सड़क पर पानी देख कर ग्राहक लोट जाता है

झम्मन लाल पीजी कॉलेज में सड़क सुरक्षा पर भाषण एवं निबंध प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। शुक्रवार को नगर के झम्मन लाल पीजी कॉलेज में सड़क सुरक्षा पखवाड़े के तहत 2 अक्टूबर से 16 अक्टूबर तक चलाए जा रहे सड़क सुरक्षा एवं जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत निबंध एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, कार्यक्रम में महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया जिसमें निबंध प्रतियोगिता में प्रथम प्रीति यादव, द्वितीय शिवांश शर्मा तथा तनु को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ, भाषण प्रतियोगिता में विशवा प्रथम, रश्मि द्वितीय तथा संगीता ने तृतीय स्थान पर जीत हासिल की, इस मौके पर महाविद्यालय के निदेशक गोपाल सक्सेना ने छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित किया, कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉक्टर हिरदेश कुमार, गौरव शर्मा, उर्वशी, शिवा शर्मा, मिस निगहत, मिस शिवानी, पंकज, डॉक्टर सवादेकीन, गीतांजलि, मिस अंशु, अशरफ, समरराजा, संजय, राजेंद्र सिंह, मोहम्मद फैसल, मोहम्मद जावेद आदि मौजूद रहे।

रेशम उद्योग के उत्कृष्ट योगदानकताओं को मिलेगा पं. दीनदयाल उपाध्याय रेशम रत्न सम्मान

लखनऊ, 04 अक्टूबर। योगी सरकार के रेशम विभाग द्वारा वर्ष 2024-25 में रेशम उत्पादन और संबंधित क्षेत्रों में असाधारण योगदान देने वाले व्यक्तियों को पं. दीनदयाल उपाध्याय रेशम रत्न सम्मान प्रदान किया जाएगा। यह सम्मान 08 विभिन्न श्रेणियों में दिया जाएगा, जिसका उद्देश्य रेशम उद्योग में नवाचार, उत्पादन और डिजाइनिंग को प्रोत्साहन देना है। रेशम क्षेत्र में उत्कृष्टता की पहचान करने और इसे बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह सम्मान उन व्यक्तियों को दिया जाएगा, जिन्होंने कोकून उत्पादन, रेशम फिनिश्ड प्रोडक्ट में नवाचार, सर्वोच्च कोया/धागा विक्रय, सर्वोच्च फिनिश्ड प्रोडक्ट विक्रय, रेशम निर्मित परिधान एवं अन्य उत्पाद में सर्वोत्तम डिजाइनिंग और लाइफटाइम एचीवमेंट जैसी श्रेणियों में उत्कृष्ट कार्य किया है।

कारीगरों और उद्यमियों को मिलेगा प्रोत्साहन

उत्तर प्रदेश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग मंत्री राकेश सचान ने बताया कि रेशम उद्योग प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और इस सम्मान का उद्देश्य प्रदेश के उन कारीगरों और उद्यमियों को प्रोत्साहित करना है जो रेशम उद्योग में निरंतर सुधार और नवाचार कर रहे हैं।

हर श्रेणी में प्रथम पुरस्कार के रूप में मिलेंगे 50 हजार रुपए

हर श्रेणी में प्रथम पुरस्कार के रूप में 50,000 रूपए की नकद राशि और द्वितीय पुरस्कार के रूप में 25,000 रूपए की धनराशि दी जाएगी। साथ ही विजेताओं को प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिन्ह से सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम में रेशम उद्योग से संबंधित "रेशम मित्र" पत्रिका का विमोचन भी किया जाएगा। इसके साथ ही, रेशम मित्र पोर्टल का शुभारंभ किया जाएगा, जो रेशम उत्पादन और व्यापार से जुड़े व्यक्तियों के लिए ज्ञान और संसाधनों का एक अनूठा मंच प्रदान करेगा।

›› 10 अक्तूबर तक कर सकेंगे आवेदन

सम्मान के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और आवेदन की अंतिम तिथि 10 अक्टूबर, 2024 निर्धारित की गई है। इच्छुक प्रतिभागी अपने आवेदन पत्र रेशम निदेशालय, विश्वास खंड-3, गोमतीनगर, लखनऊ को भेज सकते हैं। आवेदन पत्र विभाग की वेबसाइट www.sericulture.up.gov.in और रेशम मित्र पोर्टल http://reshammitraup.in/ पर उपलब्ध हैं।

हॉस्पिटल में भर्ती कराकर इस्टीमेट मंगाइए, इलाज का खर्च सरकार देगी : मुख्यमंत्री

गोरखपुर, 4 अक्टूबर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनता दर्शन में गंभीर बीमारियों के इलाज में आर्थिक सहायता की गुहार लेकर आए लोगों को आश्वस्त किया कि जिन जरूरतमंद लोगों के पास आयुष्मान कार्ड नहीं है, उनके इलाज का खर्च भी सरकार उठाएगी। इसके लिए अस्पताल से इलाज खर्च का इस्टीमेट बनाकर उनके कार्यालय को उपलब्ध कराया जाए। विवेकाधीन कोष से भरपूर मदद की जाएगी। शारदीय नवरात्र के पहले दिन, गुरुवार दोपहर बाद गोरखपुर पहुंचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन में करीब 300 लोगों से मुलाकात की। एक-एक करके उनकी समस्याएं सुनीं और निस्तारण के लिए आश्वस्त करते हुए उनके प्रार्थना पत्र संबंधित अधिकारियों को दिए। सभी लोगों को आश्वस्त किया कि किसी को भी चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। सभी लोगों की समस्याओं का समाधान कराया जाएगा। हर बार की भांति शुक्रवार सुबह के जनता दर्शन में कई लोग इलाज के लिए आर्थिक सहायता संबंधी प्रार्थना पत्र लेकर आए थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सबको मदद का भरोसा दिया। इस दौरान एक महिला की समस्या जानते ही उन्होंने अफसरों से कहा कि उक्त महिला को हॉस्पिटल में भर्ती कराकर इलाज का इस्टीमेट मंगाइए। पैसा सरकार देगी। सीएम ने लोगों से आयुष्मान कार्ड के बारे में पूछा और अधिकारियों को निर्देशित किया कि हर पात्र व्यक्ति का आयुष्मान कार्ड बनाना सुनिश्चित करें ताकि इलाज के लिए किसी को परेशान न होना पड़े। जनता दर्शन में सीएम योगी ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि हर पीड़ित के साथ संवेदनशील रवैया अपनाया जाए और उसकी समस्या का समाधान कर उसे संतुष्ट किया जाए। इसमें किसी भी तरह की कोताही नहीं होनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि कहीं कोई जमीन कब्जा या दबंगई कर रहा हो तो उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाए। हर पीड़ित की समस्या का निस्तारण निष्पक्ष रूप से उसकी संतुष्टि के अनुरूप किया जाना सुनिश्चित होना चाहिए।

बच्चों से मिले सीएम, खूब पढ़ने को किया प्रेरित

शुक्रवार सुबह गोरखनाथ मंदिर परिसर का भ्रमण करने के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने परिजनों के साथ मंदिर आए बच्चों को प्यार, दुलार और आशीर्वाद दिया। बच्चों को अपने पास बुलाकर उनसे बातचीत की। उनसे नाम पूछने के साथ पढ़ाई के बारे में जानकारी ली और खूब पढ़ने के लिए प्रेरित किया। बच्चों को सीएम ने चॉकलेट गिफ्ट कर विदा किया।

गोशाला में जाकर की गोसेवा

गोरखनाथ मंदिर प्रवास के दौरान पारंपरिक दिनचर्या में शुक्रवार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंदिर परिसर का भ्रमण करते हुए गोशाला में पहुंचे। यहां उन्होंने गोसेवा में कुछ व्यतीत किया। सीएम योगी ने गोवंश को अपने हाथों से गुड़ खिलाया।

शह और मात पर मुख्यमंत्री ने लिटिल चैम्प से खूब की बात

गोरखपुर, 4 अक्टूबर। खेल और खिलाड़ियों के प्रति मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का लगाव जग जाहिर है। और, जब बात खेल की नन्ही प्रतिभाओं की हो तो फिर कहना ही क्या। गोरखनाथ मंदिर प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री में देश के सबसे कम उम्र के फीडे (विश्व शतरंज महासंघ) रेटेड खिलाड़ी, गोरखपुर निवासी कुशाग्र अग्रवाल के साथ शतरंज खेल कर उत्साहवर्धन किया। सीएम योगी ने इस लिटिल चैम्प से शतरंज के खेल में मोहरों की चाल और शह-मात पर खूब बात की। कुशाग्र अग्रवाल, शुक्रवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आशीर्वाद लेने गोरखनाथ मंदिर पहुंचे थे। कुशाग्र अभी सिर्फ 5 साल 11 माह के हैं और यूकेजी में पढ़ते हैं। पर, उनकी उपलब्धि उम्र से काफी बड़ी है। 1428 रैपिड फीडे रेटिंग हासिल कर वह इस समय भारत में सबसे कम उम्र के फीडे-रेटेड खिलाड़ी हैं। उन्होंने 4 साल की उम्र में शतरंज खेलना शुरू किया और अपनी प्रतिभा के दम पर एक साल में ही फीडे रेटिंग हासिल कर ली। शतरंज का शुरूआती प्रशिक्षण उन्हें अपनी बहन अविका से मिला जो खुद भी शतरंज की बेहतरीन खिलाड़ी हैं। कुशाग्र अब तक पटना, बेंगलुरु, पुणे में आयोजित लगभग अंतरराष्ट्रीय फीडे रेटेड प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर पुरस्कार जीत चुके हैं। गोरखनाथ मंदिर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने न केवल कुशाग्र को उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दिया बल्कि उनके साथ शतरंज खेलकर खूब उत्साह भी बढ़ाया। उन्होंने कुशाग्र से शतरंज की चालों से जुड़ी बारीकियों पर भी चर्चा की। मुख्यमंत्री ने आश्वस्त किया कि कुशाग्र अग्रवाल की प्रतिभा को और निखारने के लिए यूपी सरकार हर तरह की मदद करेगी। उन्होंने विश्वासएम जताया कि शतरंज का नन्हा अंतरराष्ट्रीय रेटेड खिलाड़ी आने वाले समय में गोरखपुर और प्रदेश का नाम देश-दुनिया में रोशन करेगा।

पिछड़े वर्ग के युवाओं के लिए द्वितीय चरण का कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

लखनऊ, 04 अक्टूबर। योगी सरकार द्वारा प्रदेश के पिछड़े वर्ग के बेरोजगार युवक-युवतियों को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। वित्तीय वर्ष 2024-25 के तहत कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना के द्वितीय चरण की शुरूआत की जा रही है। इस योजना के अंतर्गत 'ओ' लेवल और ट्रिपल सी' कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा, जिससे पिछड़े वर्ग के युवाओं को डिजिटल युग में रोजगार के बेहतर अवसर मिल सकें। पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नरेंद्र कश्यप ने बताया कि सरकार का यह प्रयास है कि पिछड़े वर्ग के युवाओं को तकनीकी कौशल प्रदान कर उन्हें रोजगार योग्य बनाया जाए। कम्प्यूटर प्रशिक्षण से यह युवक-युवतियां अपनी क्षमता को निखार सकेंगे, जिससे वे आत्मनिर्भर होकर समाज में आर्थिक रूप से सशक्त हो सकें। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना और युवाओं को वैश्विक तकनीकी मानकों के अनुरूप तैयार करना है।

इण्टरमीडिएट पास छात्रों को मिलेगा अवसर

पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग की निदेशक डॉ. वंदना वर्मा ने बताया कि यह प्रशिक्षण उन पिछड़े वर्ग के बेरोजगार युवाओं के लिए है, जिन्होंने इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की हो और जिनके माता-पिता की वार्षिक आय एक लाख रुपये तक हो।

10 अक्टूबर तक कर सकेंगे आवेदन

आवेदक 10 अक्टूबर 2024 से 30 अक्टूबर 2024 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदन पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग की आधिकारिक वेबसाइट https://www.backwardwelfareup.gov.in या कम्प्यूटर प्रशिक्षण पोर्टल https://obc-computertraining.upsdc.gov.in पर जाकर किया जा सकता है। प्राप्त आवेदनों की जिला स्तर पर जाँच और सत्यापन के बाद योग्य अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा। यह प्रक्रिया 25 अक्टूबर से 14 नवंबर 2024 तक पूरी होगी। चयनित अभ्यर्थियों का प्रशिक्षण 15 नवंबर 2024 से शुरू होगा।

अलीगढ़ के महावीर गंज बाजार की सड़क में वाटर लीकेज से हो रहे हादसे, पार्षद और नगर निगम मौन

अलीगढ़ - अलीगढ़ के महावीर गंज बाजार की सड़क में काफी दिनों से वाटर लीकेज हो रहा है और काफी दुर्घटना हो चुकी है क्षेत्रीय लोगों ने बताया की काफी दिनों पहले महावीरगंज पार्षद कुलदीप पाण्डेय से कहा भी था व शिकायत लिखित में दर्ज कराई थी की यहा सड़क के अंदर वाटर लीकेज हो रहा है जिसके चलते पूरा पानी शाम के समय सड़क पर आ जाता है और आने जाने वाले लोगों की बाइक स्लीप हो जाती है एवं अन्य कई घटना हो चुकी है पर पार्षद कुलदीप पाण्डेय द्वारा बस ये बोल दिया जाता है की ठीक हो जायेगा जाइये यहा से पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है क्या किसी बड़ी दुर्घटना होने का इंतजार कार रहे है कुलदीप पाण्डेय एक तरफ जहाँ अलीगढ़ को स्मार्ट सिटी कहा जाता है वही अलीगढ़ के मुख्य बाजार महावीर गंज की यह दुर्दशा है।

हरियाणा विधानसभा आम चुनाव के दौरान एग्जिट पोल पर रहेगी पाबंदी - जिलाधीश

करनाल, राजेन्द्र जिंदल

4 अक्तूबर। जिलाधीश उत्तम सिंह ने आदेश जारी करते हुए बताया कि भारत चुनाव आयोग के निदेर्शानुसार हरियाणा विधानसभा आम चुनाव के चलते लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 126 क की उपधारा एक व भारत आयोग की अधिसूचना की उपधारा 2 के दृष्टिगत 5 अक्तूबर 2024 को शाम 6.30 बजे तक मतदान समाप्ति के आधे घंटे बाद तक कोई भी व्यक्ति और मीडिया किसी भी प्रकार का एग्जिट पोल का आयोजन नहीं कर सकता है। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा का कोई उल्लंघन करता है तो उसको दो वर्ष तक का कारावास या जुमार्ना अथवा दोनों दंड दिए जा सकते हैं। उन्होंने भारत निर्वाचन आयोग की अधिसूचना की जानकारी देते हुए बताया कि आदर्श आचार संहिता का पालन करना सभी का कर्तव्य है। हरियाणा विधानसभा आम चुनाव 2024 लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम

1951 की धारा 126 क व भारत निर्वाचन आयोग की उप धारा दो के उपबंधों के दृष्टिगत कोई निर्गम मत सर्वेक्षण नहीं करेगा। इसके अलावा किसी निर्गम मत सर्वेक्षण के परिणाम को प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से प्रकाशन, प्रचार या किसी भी प्रकार की अन्य रीति में प्रचार नहीं करेगा। अगर कोई भी लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा का उल्लंघन करता है, तो उसके खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। उन्होंने बताया कि अधिसूचना के अनुसार यह अवधि मतदान के पहले दिन के संबंध में मतदान के लिए नियत समय के आरंभ होने से शुरू होगी और मतदान समाप्त होने के आधे घंटे तक जारी रहेगी। कोई व्यक्ति, जो इस धारा के उपबंधों का उल्लंघन करेगा तो ऐसी अवधि के दौरान दो वर्ष तक कारावास या जुमार्ना अथवा दोनों दंडनीय होगा। उन्होंने बताया कि लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 126(1) (ख) के अधीन उपर्युक्त साधारण निर्वाचनों एवं उप-निर्वाचनों के संबंध में मतदान की समाप्ति के लिए नियत समय पर समाप्त होने वाली 48 घंटों की अवधि के दौरान किसी भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में किसी भी ओपिनियन पोल या किसी अन्य मतदान सर्वेक्षण के परिणामों सहित किसी भी प्रकार के निर्वाचन संबंधी मामले के प्रदर्शन पर प्रतिबंध होगा।

हरियाणा में विकास की लिखी जाएगी नई गौरव गाथा : हरविन्द्र कल्याण

हरविन्द्र कल्याण ने छपरा जागीर, जमूखला, मंगलौरा, नगलामेघा, मुबारकाबाद, उत्तमनगर में चलाया जनसम्पर्क अभियान

करनाल, सुखविंदर सोही

घरौंडा। से भाजपा प्रत्याशी हरविन्द्र कल्याण ने आज अपने जनसम्पर्क अभियान की शुरूआत छपरा जागीर, जमूखला, मंगलौरा, नगला चौंक मोहीदीनपुर रोड, नगलामेघा, मुबारकाबाद, उत्तमनगर, फूसगढ़ एवं राजीवपुरम से की। उन्होंने अपने जनसम्पर्क अभियान में घरौंडा और प्रदेश के विकास के लिए भाजपा को अपनी वोट डालने की अपील की। उन्होंने कहा कि कार्यक्रमों में उन्हें घरौंडा की जनता का पूरा प्यार, स्नेह और आशीर्वाद मिल रहा है और उनके इस सहयोग के लिए मै हमेशा घरौंडा की जनता का आभारी रहूंगा। हरविन्द्र कल्याण ने कहा कि अब वह दिन दूर नहीं है जब तीसरी

बार भारतीय जनता पार्टी की सरकार हरियाणा में बनेगी और एक बार फिर नायब सिंह सैनी प्रदेश के मुख्यमंत्री होंगे। उनके नेतृत्व में हरियाणा में विकास के नये आयाम स्थापित होंगे। हरियाणा में विकास की एक नई गौरवगाथा लिखी जाएगी। भाजपा प्रत्याशी हरविन्द्र कलण ने गांव डबरकीपार (जम्मूखाला) के स्वजनों से मिलकर कमल के निशान पर मतदान कर भाजपा को भारी बहुमत से जीत दिलवाने की अपील की। इस दौरान हरविन्द्र कल्याण का फूल-मालाओं से जोरदार स्वागत किया गया। उन्होंने कहा कि जनता का उत्साह और प्यार भाजपा सरकार के साथ है और भाजपा के साथ रहेगा। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने भी तय कर लिया है कि अपनी माताओं के इस वात्सल्य और आशीर्वाद को व्यर्थ नहीं जाने देंगे, पुनः प्रचंड बहुमत से सरकार बनाते हुए जन जन से किए संकल्पों को अक्षरशः पूरा करेंगे। जन आशीर्वाद एवं संवाद कार्यक्रम के दौरान आज गांव छपरा जागीर में भारतीय जनता पार्टी के समर्थन में मतदान करने की अपील की।

मतदान दिवस के संबंध में सुरक्षा को लेकर जिला पुलिस ने किए सभी पुख्ता इंतजाम

स्वतंत्र, शांतिप्रिय व निष्पक्ष मतदान को पुलिस बल पूर्ण रूप से मुस्तैद, मतदाता निर्भिक होकर अपने मताधिकार का करें सदुपयोग, पुलिस अधीक्षक करनाल

करनाल, राजेश जिंदल

करनाल। श्री मोहित हाण्डा ने कहा कि चुनाव आयोग के निदेर्शानुसार मतदान दिवस पर शांतिपूर्ण मतदानों के लिए जिला पुलिस द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जा चुके हैं, हरियाणा पुलिस व होमगार्ड के जवानों की तैनाती बुथों की सुरक्षा में की गई है। इसके अतिरिक्त हर प्रकार की कानून व्यवस्था को लेकर केन्द्रीय सुरक्षा बल के जवानों को भी तैनात किया गया है। सुरक्षा के मद्धेनजर बुथों एवं गांव/वार्डों में गस्त के लिए 86 पैट्रोलिंग पाटीर्यां बनाई गई हैं। उन्होंने कहा कि हर विधानसभा क्षेत्र में एक उप पुलिस अधीक्षक को नोडल अधिकारी व एक निरीक्षक रैंक के अधिकारी को सहायक नोडल लगाया गया है, जो क्षेत्र में पर्याप्त पुलिस बल के साथ गस्त करेगें व क्षेत्र में होने वाली हर हरकत पर नजर रखेगें। इसके अलावा हर प्रबंधक थाना को पर्याप्त बल दिया गया है, केन्द्रीय सुरक्षा बल की टुकड़ीयां भी किसी भी प्रकार की कानून व्यवस्था की स्थिती से निपटने के लिए हर डी.एस.पी. को मुहैया कराई गई है। उनके द्वारा ई.आर.वी. पर तैनात कमीर्यों को विशेष निर्देश दिए गए कि मतदान संबंधी शिकायत की सुचना पर तुरंत व तीव्रता से करें कार्यवाही। उन्होंने बताया कि इसके साथ ही जिला पुलिस बल की भी कानून एवं व्यवस्था ड्युटी के संबंध में प्लाटूनें बनाई गई हैं। श्री मोहित हाण्डा ने बताया कि मतदान के मद्धेनजर सभी मोबाईल पाटीर्यों कों वारलैस प्रणाली से भी जोड़ा गया है ताकि अधिकतम 08 से 10 मिनट में किसी भी बुथ पर पहुंचा कर उचित कार्यवाही की जा सके। इसके अलावा शरारती तत्वों पर नजर रखने को अंतर जिला व अंतर राज्यीय नाके भी

लगाए गए हैं, जो वाहन चैकिंग के माध्यम से अवैध गतिविधियों पर नजर रखेगें। श्री हाण्डा ने बताया कि सोशल मिडिया पर निगरानी के लिए भी जिला पुलिस कार्यालय की साइबर शाखा में एक विशेष टीम का गठन किया गया है। क्रिटीकल मतदान केन्द्रों एवं अन्य मतदान केन्द्रों में कुल मिलाकर करीब 200 लोकेशनों पर केन्द्रीय सुरक्षाबल की तैनाती की गई है। जिला पुलिस कप्तान ने सभी अधिकारीयों व कर्मचारीयों को आदेश दिए कि चुनावों के दौरान कुछ शरारती तत्व माहौल को खराब करके शांति व्यवस्था को बिगाड़ने के लिए प्रयास करते हैं, ऐसे व्यक्तियों की पहचान कर उन्हें विशेष हिदायत देकर उनपर कड़ी नजर रखें, ताकि चुनावों की इस प्रक्रिया को सही व शांतिपूर्ण ढ़ंग से सम्पन्न किया जा सके, यदि इसके बावजूद भी कोई मतदान प्रक्रिया में बाधा डाले तो ऐसे व्यक्ति के खिलाफ कड़ी से कड़ी कानूनी कार्यवाही अमल में लाई जाए। अंत में श्री मोहित हाण्डा ने करनाल जिला के सभी नागरिकों को आस्वस्त करते हुए कहा कि स्वतंत्र, शांतिप्रिय व निष्पक्ष मतदान को पुलिस बल पूर्णरूप से मुस्तैद, सभी मतदाताओं से अपील कि वे निर्भीक होकर करें अपने मताधिकार का सदुपयोग।

सेंट्रल विधानसभा क्षेत्र की कोई भी सड़क अधूरी नहीं रहेगी: विधायक डॉ. अजय गुप्ता

विधायक ने अमन एवेन्यू में सड़क विकास कार्य का उद्घाटन किया

(डिप्टी ब्यूरो दलजीत कुमार बिट्टू)

अमृतसर , 4 अक्टूबर 2024: सेंट्रल विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ. अजय गुप्ता ने आज अमन एवेन्यू क्षेत्र में सड़क निर्माण कार्य का उद्घाटन किया। विधायक डॉ. गुप्ता ने कहा कि सेंट्रल विधानसभा क्षेत्र की कोई भी सड़क अधूरी नहीं रहने दी जाएगी। उन्होंने कहा कि किशन कोट इस्लामाबाद से पहले , हरिपुरा पुल के दोनों किनारों पर , गेट खजाना से नई सड़क तक , कटरा करम सिंह से लाहौरी गेट तक , पीर शादी शाह रोड से अनगढ़ का निकटवर्ती क्षेत्र , भरावा दा ढाबा से कटरा जयमल सिंह तक। , रामबाग चौक , बेरी गेट के अंदर से खजाना गेट और अन्य क्षेत्रों का निर्माण किया गया है। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में भगतावाला टेलीफोन एक्सचेंज रोड पर भी प्रीमिक्स डालने का काम शुरू होने जा रहा है. विधायक डॉ. गुप्ता ने कहा कि आज अमन एवेन्यू क्षेत्र में सड़कें

सड़क निर्माण कार्य का उद्घाटन करते विधायक डॉ. अजय गुप्ता।

बनाने का काम शुरू किया गया है , जो काफी समय से खराब हालत में थी. उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में वाल्ड सिटी के अंदर कोई भी सड़क अधूरी नहीं रहने दी जाएगी। चारदीवारी के बाहर नगर निगम द्वारा लगभग 7 किमी सड़क का निर्माण किया जा चुका है । उन्होंने कहा कि सेंट्रल विधानसभा क्षेत्र में टूटी सड़कों के निर्माण के लिए नगर निगम और इंप्रूवमेंट ट्रस्ट को एस्टीमेट तैयार कर लिया गया है उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में इन सड़कों का भी निर्माण किया जायेगा. विधायक डॉ. गुप्ता ने कहा कि वह स्वयं अपने वार्लटियरों के साथ लोगों को सभी सुविधाएं मुहैया करवाने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब की पहली सरकार ने जो किया है, उसमें सुधार करने में समय लग रहा है। उन्होंने कहा कि पंजाब की माननीय सरकार लोगों को सभी सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि खासकर अमृतसर के लिए पंजाब सरकार पहले ही सड़कों के निर्माण के लिए 50 करोड़ रुपये जारी कर चुकी है और आने वाले दिनों में 50 करोड़ रुपये और जारी किए जा रहे हैं. उन्होंने कहा कि सड़क निर्माण के लिए धन की कोई कमी नहीं है. इस मौके पर आम आदमी पार्टी के वार्लंटियर्स विश्व लूथरा , चरणजीत सिंह चन्नी , जेएस राहुल , चिराग , अमन एवेन्यू प्रधान बॉबी , नगर निगम के अधिकारी और बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

पांच अक्टूबर को विधानसभा चुनाव के चलते एग्जिट पोल जारी करने पर शाम 6.&0 बजे तक रहेगी रोक: जिला निर्वाचन अधिकारी

करनाल सुखविंदर सोही

करनाल। निर्वाचन अधिकारी डॉ. वीरेंद्र कुमार दहिया ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) द्वारा विधानसभा चुनाव के लिए एग्जिट पोल जारी करने पर रोक लगाई गई है। जनप्रतिनिधि अधिनियम 1951 की धारा 126 ए, के तहत पांच अक्टूबर को मतदान शुरू होने के लिए निर्धारित समय से लेकर मतदान समाप्त होने के लिए निर्धारित समय के आधे घंटे बाद तक की अवधि के दौरान प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से एग्जिट पोल आयोजित करने और उनके परिणामों के प्रसार पर रोक रहेगी। जिला निर्वाचन अधिकारी ने

बताया कि विधानसभा चुनावों की अधिसूचना के अनुसार मतदान शुरू होने का समय सुबह 7 बजे से माना गया है,जोकि शाम छह बजे तक रहेगा। उन्होंने बताया कि अधिसूचना के अनुसार प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से एग्जिट पोल आयोजित करना, प्रकाशित करना या प्रचारित करना या किसी अन्य तरीके से प्रसारित करना, उक्त आम चुनाव के संबंध में किसी भी एग्जिट पोल के परिणाम पर पांच अक्टूबर शनिवार को शाम 6 बजे तक रोक रहेगी। उन्होंने बताया कि इसके अतिरिक्त, किसी भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में किसी भी जनमत सर्वेक्षण या किसी अन्य मतदान सर्वेक्षण के परिणाम सहित किसी भी चुनावी मामले को प्रदर्शित करना, आम चुनाव के संबंध में मतदान के समापन के लिए निर्धारित समय से समाप्त होने वाली 48 घंटों की अवधि के दौरान प्रतिबंधित रहेगा। इन नियमों का उल्लंघन करने पर दो साल तक की कैद या जुमार्ना या दोनों हो सकते हैं। सभी मीडिया को सलाह दी जाती है कि वे इस संबंध में निदेर्शों का पालन करें।

जानलेवा हो सकती है ई -सिगरेट : सिविल सर्जन डॉ. किरणदीप कौर

कोटपा एक्ट को सख्ती से लागू किया जायेगा : डॉ. जगनजोत कौर

(ब्यूरो चीफ राजिंदर कुमार)

अमृतसर 4 अक्टूबर 2024-- ई - सिगरेट जानलेवा हो सकती है , इसलिए सरकार द्वारा इस पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया है । यह जानकारी सिविल सर्जन डॉ किरणदीप कौर ने जिले को तंबाकू मुक्त बनाने व कोटपा एक्ट को सख्ती से लागू करने के लिए चलाये जा रहे विशेष अभियान के दौरान दी . इससे पहले डॉ. किरणदीप कौर, जिला नोडल अधिकारी एन. टी। सी । पी। कॉम डी . डी । एच। ओह डॉ. जगनजोत कोर के नेतृत्व में एक विशेष टीम का

गठन किया गया . किस जिले में एम. ई. मैं। ओह अमरदीप सिंह , डॉ. शबनमदीप कौर , एस. मैं। परमजीत सिंह, राजिंदर सिंह , मंगल सिंह , राजेश कुमार , सुरजीत सिंह , रशपाल सिंह , बलविंदर सिंह और सहायक कर्मचारी शामिल थे । टीम ने मौके पर कार्रवाई करते हुए शहर के विभिन्न इलाकों में तंबाकू बेचने वालों की जांच की , जिनमें सर्कुलर रोड , माल रोड , लॉरेंस रोड और रंजीत एवेन्यू के आसपास के इलाकों में 17 दुकानदार और सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करने वाले 8 लोगों का चालान काटा गया का इस अवसर पर जानकारी देते हुए जिला नोडल अधिकारी एन. टी। सी । पी। डॉ. जगनजोत कौर ने कहा कि भारत सरकार द्वारा जारी आदेशों के अनुसार जिले में कोटपा एक्ट को सख्ती से लागू किया जाएगा, प्रत्येक तंबाकू उत्पाद के पैकेट पर दोनों तरफ एक निर्धारित मानक के अनुसार लिखावट अनिवार्य कर दी गई है। , एक निर्दिष्ट फोटो और उसके ऊपर " तम्बाकू दर्दनाक मौत" और कैंसर का कारण बनता है " लिखना होगा । अतः उपरोक्त मापदण्डों के बिना तम्बाकू बेचना कानूनी अपराध है । इसके अलावा खुली सिगरेट बेचना और सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करना भी दंडनीय अपराध है ।

बीजेपी राज में पुलिस की गोली से मारे गए 78 लोग, सबसे ज्यादा दलित हुए शिकार : हुड्डा

- बीजेपी राज में हुआ पंचकूला कांड नहीं भूले दलित, बीजेपी ने दलितों को गोलियों से भूना : हुड्डा
- बीजेपी ने पक्की नौकरियां खत्म करके छीना दलित-पिछड़ों का आरक्षण : हुड्डा
- गर्व है कि बाबा साहेब के नेतृत्व में बने संविधान पर मेरे पिता जी के भी हस्ताक्षर हैं : हुड्डा

चंडीगढ़, अक्तूबर : भाजपा ने 10 साल प्रदेश में लाठी और गोली की सरकार चलाई है। इस जनविरोधी सरकार के समय में रिकॉर्ड 78 लोग पुलिस की गोली से मारे गए थे। पंचकूला में डेरा प्रकरण के दौरान 40 लोगों की मौत हुई थी, जिसमें सबसे ज्यादा दलित थे। बताया जा रहा है कि शायद 30 मृतक दलित थे। जबकि बीजेपी ने कोर्ट के आदेशों के खिलाफ पंचकूला में लोगों की भीड़ इकट्ठा होने दी थी। खुद हाईकोर्ट ने 40 लोगों की पुलिस फायरिंग में मौत पर सवाल उठाए, लेकिन बीजेपी किसी का जवाब नहीं दे पाई। यह बात पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने चुनाव प्रचार के आखिरी दिन वीरवार को करनाल में पत्रकार वार्ता में कही। हुड्डा ने पत्रकारों के सामने तमाम सबूतों को दिखाते हुए भाजपा के हर झूठ का पदार्फाश किया। उन्होंने कहा कि भाजपा झूठ

फैलाने में माहिर है। भाजपा कांग्रेस के बारे में सस्ती जमीन अधिग्रहण का आरोप लगाती है। जबकि कांग्रेस सरकार के समय में हरियाणा और पूरे देश में भूमि अधिग्रहण की किसान हितैषी पॉलिसी लागू की गई थी। हमने पूरे प्रदेश के जमीन के फ्लोर रेट लागू किए थे। इससे पहले इनेलो और भाजपा ने मिलकर किसानों को जमीन अधिग्रहण के नाम पर खूब लूटा था। कांग्रेस ने नियम लागू करवाया था कि जमीन अधिग्रहण पर 33 साल रॉयलिटी दी जाएगी, लेकिन भाजपा ने किसानों को वह भी नहीं दी।

हुड्डा ने केएमपी जमीन अधिग्रहण का उदाहरण देते हुए कहा कि भाजपा वाले किसानों को 140 करोड़ रुपए दे रहे थे, जबकि हमने उसी जमीन के 640 करोड़ रुपए मुआवजा दिया। कांग्रेस ने किसानों को रातों-रात करोड़पति बनाने का काम किया था। उन्होंने कहा कि मेरठ से राजस्थान जाने वाले नेशनल हाईवे को भी भाजपा ने कैंसिल करवा दिया और दादूपुर नलवी परियोजना को बंद कर दिया। क्योंकि बीजेपी किसानों को अधिग्रहण की उचित राशि नहीं देना चाहती थी। उन्होंने कहा कि रॉबर्ट वाड्रा के बारे में भाजपा द्वारा झूठा प्रचार किया जा रहा है कि उनको जमीन दी। लेकिन मैं चुनौती देता हूं कि एक इंच भी सरकारी जमीन कांग्रेस ने रॉबर्ट वाड्रा को नहीं दी। भाजपा वाड्रा को जमीन देने का सबूत दिखा दे तो मैं राजनीति छोड़ दूंगा। फसल मुआवजे के बारे में उन्होंने कहा कि इनेलो-भाजपा के राज में एक-एक, दो-दो रुपए के चेक मिलते थे। कांग्रेस के संज्ञान में मामला आते ही हमने इस नीति को बदला और 10,000 रुपये प्रति एकड़ तक मुआवजे का प्रावधान किया। अब भाजपा के राज में दोबारा सिरसा में दस-दस रुपए के चेक बांटे गए हैं। मंडियों में धान खरीद नहीं हो रही और उन्हें तारीख पर तारीख मिल रही है। कांग्रेस सरकार आते ही धान खरीदा जाएगा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस अपनी हर गारंटी को पूरा करेगी। कांग्रेस ने एक कलम से 1600 करोड़ रुपए के बिजली बिल माफ कर दिए थे, 2300 करोड़ रुपये के किसानों के कर्ज माफ हुए थे।। लेकिन बीजेपी ने एक भी पैसा किसी का माफ नहीं किया।

हुड्डा ने कहा कि भाजपा ने 10 साल कोई काम नहीं करवाया और केवल कांग्रेस के करवाए कामों का क्रेडिट छीनने में समय बिता दिया। भाजपा हांसी-महम रेल लाइन को अपनी उपलब्धि बता रही हैं जबकि कांग्रेस ने ही 2011 में इस प्रोजेक्ट को मंजूर करवा जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया शुरू करवाई। बजट का प्रावधान भी करवाया। 31 जुलाई 2013 को इसका शिलान्यास भी कांग्रेस के तत्कालीन मंत्री मल्लिकार्जुन खड़गे ने किया था। उसी तरह हिसार हवाई अड्डे को भी भाजपा वाले अपनी उपलब्धि बता रहे हैं। जबकि कांग्रेस सरकार के समय 2013-14 में हिसार और करनाल में हवाई अड्डे मंजूर हुए थे और उनकी फिजिबिलिटी भी चेक हो चुकी थी। अब भाजपा नेता खट्टर और सैनी छह बार उसी का उद्घाटन और शिलान्यास कर चुके हैं।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने हरियाणा को एजुकेशन हब बनाने का काम किया था। 2005 से 14 तक राजीव गांधी एजुकेशन सिटी, आईआईएम, एम्स, आईआईटी, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन कुरुक्षेत्र, नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ फूड टैक्नोलॉजी, 6 मेडिकल कॉलेज, 12 विश्वविद्यालय बनाए जैसे अनेकों संस्थान स्थापित किए। भाजपा ने कोई बड़ा संस्थान शुरू नहीं करवाया। हमने करनाल में मेडिकल कॉलेज बनवाया था और ये यूनिवर्सिटी की घोषणा कर बिल्डिंग भी नहीं बनवा सके। हमने तो 10 साल में कई यूनिवर्सिटी खड़ी कर दी थी। कांग्रेस ने रोजगार बढ़ाने के लिए प्रदेश में छह आईएमटी मानेसर, रोहतक, फरीदाबाद, खरखौदा के साथ-साथ इंडस्ट्रियल हब बनाए। इस वजह से प्रदेश प्रति व्यक्ति आय, निवेश, रोजगार और खेल-खिलाड़ियों में नंबर वन बना। आज हरियाणा अपराध, महंगाई, नशे और बेरोजगारी में नंबर वन गया है। आए दिन हत्या और फिरौती की घटनाएं हो रही हैं।

एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि कांग्रेस सिर्फ मेरिट के आधार पर ही नौकरियां देंगी। भाजपा ने तो कौशल रोजगार निगम को भ्रष्टाचार का अड्डा बनाकर परचून की दुकान की तरह नौकरियों को बेचा। यहां बिना मेरिट और रिजर्वेशन के भर्तियां हुई हैं। कौशल निगम के बहाने भाजपा एससी और ओबीसी का आरक्षण खा गई। कांग्रेस कौशल निगम के कर्मियों को समायोजित करके पक्का करेगी और इस व्यवस्था को दुरुस्त करेगी। उन्होंने कहा कि विपक्षी के पास मुद्दा नहीं है इसलिए मेरे ऊपर भी परिवारवाद के आरोप लगाते हैं। जबकि मेरे दादा स्वतंत्रता सेनानी रहे। मुझे गर्व है कि मेरे पिता स्व. रणबीर सिंह के संविधान पर बाबा साहब के साथ हस्ताक्षर हैं। हम लंबे समय से संघर्ष कर आज यहां तक पहुंचे हैं। हुड्डा ने बीजेपी छोड़कर आए अशोक तंवर का भी कांग्रेस में स्वागत किया। उन्होंने प्रदेश की जनता से अपील की कि शांतिपूर्ण तरीके से वोटिंग करें और बीजेपी को सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाएं।

भय मुक्त एवं अपराध मुक्त प्रदेश के लिए भाजपा को वोट दें: महिपाल ढांडा

करनाल, सुखविंदर सोही

करनाल। भारतीय जनता पार्टी के पानीपत ग्रामीण से प्रत्याशी महीपाल ढांडा ने आम जनता से अपील की है कि वे कल यानी 5 अक्टूबर को मतदान अवश्य करें। उन्होंने कहा की भयमुक्त एवं अपराध मुक्त प्रदेश के लिए भारतीय जनता पार्टी को वोट दें और नायब सैनी को दूसरी बार मुख्यमंत्री बनाने में भाजपा की मदद करें। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के शासनकाल में अपराधी जगह-जगह अपराध कर खुलेआम घूमते रहते थे। माता बहनों का चीर हरण करते थे, लोगों के घर, मकान, दुकान पर जबरदस्ती कब्जा करते थे, व्यापारियों से हफ्ता वसूली करते थे। भारतीय जनता पार्टी के पिछले 10 वर्ष के शासनकाल में यह सब अपराध बंद हो गए है। उन्होंने कहा यदि हरियाणा वासी अपने प्रदेश को खुशहाल एवं विकसित देखना चाहते हैं तो वह भाजपा को वोट दें। ढांडा ने कहा कि पिछले एक महीने से पानीपत ग्रामीण

विधान सभा में चुनाव प्रचार में लोगों के मिजाज से पता चल रहा है कि वे भाजपा की सरकार के कामकाज से खुश हैं। इसी तरह का रुझान पूरे प्रदेश से प्राप्त हो रहा है। ढांडा ने कहा कि प्रदेश की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को तीसरी बार शान सपना का मन बना लिया है। उन्होंने कहा की वे बिना किसी दबाव एवम लालच के देश हित में शत प्रतिशत मतदान करें। उन्होंने कहा की भारतीय जनता पार्टी विकास का प्रतीक है और देश के विकास के लिए ही राजनीति करती है। "सेवा ही संगठन है" के ध्येय वाक्य का अनुसरण करते हुए भाजपा देश की जनता की सेवा को समर्पित है उन्होंने कहा प्रदेश में पिछले 10 वर्ष में विकास के अभूतपूर्व काम हुए हैं। उन्होंने विश्वास दिलाया कि नायब सैनी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार विकास के नए आयाम लिखेगी और पहले से भी ज्यादा गति से विकास कार्य करवाएगी। इसलिए ज्यादा से ज्यादा भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान करें।

संक्षिप्त समाचार

सड़क सुरक्षा पखवाड़ा पर किया जागरूक

चित्रकूट। सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी विवेक कुमार शुक्ला ने बताया कि सड़क सुरक्षा पखवाड़ा मे सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी प्रवर्तन एवं यात्री कर माल कर अधिकारी दीप्ति त्रिपाठी द्वारा प्रवर्तन कार्यवाही के दौरान ट्रैक्टर ट्रालियों के पीछे रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप, बैक लाइट, फ्लिंग लाइट के मानक अनुरूप लगे होने एवं क्रियाशीलता के विरुद्ध विशेष चेकिंग अभियान चलाया गया। वाहन चालकों/परिचालकों को विस्तृत जानकारी दी गई एवं आम जनमानस को यातायात के नियमों की जानकारी भी दी गई।

जिला अस्पताल में भर्ती मरीज के परिजन को मिलेगा टोकन

चित्रकूट। जिला अस्पताल में भर्ती मरीजों के साथ तीमारदारों के लगने वाली भीड़ से आजिज़ प्रमुख सचिव स्वास्थ्य का नया आदेश आ गया है। नये आदेश मे भर्ती मरीजों के एक रिश्तेदार को टोकन दिया जायेगा जिसमे टोकन सिस्टम से ही मरीजों से रिश्तेदार/तीमारदार मुलाक़ात कर सकेंगे। सीएमएस जिला अस्पताल डॉ वंदना श्रीवास्तव ने कहा टोकन सिस्टम से मरीजों और चिकित्सालय व्यवस्था दोनो को राहत मिलेगी। बगैर टोकन चिकित्सालय में अब एंट्री नही होगी।

स्टेडियम में प्रतियोगिता का आयोजन

चित्रकूट। 2 अक्टूबर गांधी जयंती पर स्पोर्टस स्टेडियम में ओपन महिला, पुरुष, पैदल चल प्रतियोगिता आयोजन किया गया। शैलेश कुमार उपाध्याय जिला युवा कल्याण अधिकारी ने हरी झंडी दिखाकर पैदल चल का शुभारंभ किया। जगमोहन सिंह प्रबंधक जेएसएम पब्लिक स्कूल ने खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान किया। विजय कुमार क्षेत्रीय क्रीड़ा अधिकारी ने खिलाड़ियों को खेल में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया गया और उससे होने वाले लाभ के विषय में जानकारी दी गई। प्रतियोगिता मे बालक वर्ग में बराती लाल प्रथम बुद्ध विलास दूसरे स्थान पर दीपक ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। बालिका वर्ग गंगा प्रथम, गरिमा द्वितीय संध्या तीसरे स्थान पर रही।

पुलिस की पाठशाला में एसपी ने छात्राओं को किया जागरूक

चित्रकूट। मिशन शक्ति अभियान-5 शुभारम्भ पर पुलिस अधीक्षक ने राजकीय बालिका इण्टर कालेज में छात्राओं को पुलिस की पाठशाला लगाकर जागरूक किया। पुलिस अधीक्षक अरूण कुमार सिंह ने छात्राओं को आत्मसुरक्षा के लिये जागरुक कर उनकी सुरक्षा के सम्बंध में वार्ता करना, सार्वजनिक स्थानो पर घूम रहे शोहदो को चेतावानी देना, महिलाओ से संबंधित अपराध पर जानकारी दी। हेल्पलाइन नंबरो की जानकारी दी गयी। बताया कि 03 माह की अवधि के दौरान 10-10 दिवस के 9 विशेष अभियान जिसमें ऑपरेशन गरूड़, शील्ड, डिस्ट्राय,बचपन, खोज, मजनू, नशा मुक्ति, रक्षा, ईगल संचालित किये जायेंगे।
इस मौके पर प्रभारी निरीक्षक कोतवाली कर्वी उपेन्द्र प्रताप सिंह, महिला थानाध्यक्ष सविता सरोज, महिला उनि आकाक्षां, पीआरओ प्रदीप पाल उपस्थित रहे।

डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के जनता दरबार में पांच दर्जन मामलों की हुई सुनवाई।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

बेतिया। डीएम कार्यालय प्रकोष्ठ में शुक्रवार को जनता दरबार का आयोजन किया गया। पश्चिम चंपारण डीएम दिनेश कुमार राय ने लोगों की समस्याओं एवं शिकायतों को बारी-बारी से सुना। जनता दरबार में कई समस्याओं एवं शिकायतों का ऑन-द-स्पॉट समाधान कराया गया। साथ ही कई मामलों में संबंधित प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों को फोन कर समस्याओं का समाधान करने के लिए शीघ्र समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। डीएम के जनता दरबार में 56 मामले आए। जिन मामलों का समाधान आज नहीं हो सका, उसे संबंधित विभाग/अधिकारियों को भेजते हुए त्वरित गति से नियमानुकूल समाधान कराने हेतु निर्देशित किया गया। जनता दरबार में कई तरह के मामले आए। जिसमें निर्वाचन कार्य, खेल, आपूर्ति, आइसीडीएसा, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, राजस्व से जुड़ी समस्या आदि शामिल हैं। डीएम ने हर मामले को बहुत गौर से सुना और नियमानुसार समाधान की दिशा में आवेदन को आगे बढ़ाया। जिन लोगों द्वारा अपनी समस्याओं से डीएम को अवगत कराया गया उनमें कुर्बान अंसारी, सुभाष साह, अलिराज आलम, सूर्य प्रसाद, अंकित कुमार, अनामिका श्रीवास्तव, बिगनी देवी, उषा कुमारी आदि के नाम शामिल हैं। डीएम के जनता दरबार में अपर समाहर्ता राजीव कुमार सिंह, अपर समाहर्ता, विभागीय जांच कुमार रविन्द्र, अपर समाहर्ता-सह-जिला लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी अनिल कुमार सिन्हा, जिला भू-अर्जन पदाधिकारी अमरेन्द्र कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी बेतिया सदर विनोद कुमार, वरीय उप समाहर्ता-सह-जिला पंचायत राज पदाधिकारी बेबी कुमारी, वरीय उप समाहर्ता-सह-जिला सूचना एवं जनसम्पर्क पदाधिकारी रोचना माद्री, विशेष कार्य पदाधिकारी, जिला गोपनीय शाखा सुजीत कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सीएम नीतीश कुमार ने बिहार में बाढ़ प्रभावित 13 जिलों के परिवारों के खाते में राहत राशि भेजा।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शुक्रवार शाम राज्य के13 जिलों में आयी बाढ़ (प्रथम चरण) से प्रभावित 4.39 लाख परिवारों को डीबीटी (डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर) के द्वारा सीधे उनके खाता में 7 हजार रुपए प्रति परिवार की दर से कुल 307 करोड़ रुपए की आनुग्रहिक राहत की राशि के भुगतान का माऊस क्लिक कर शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री ने आज बाढ़ 2024 के दौरान चलाये गये राहत एवं बचाव कार्य से संबंधित उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। बैठक में आपदा प्रबंधन विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत ने जानकारी देते हुये बताया कि 20 सितम्बर से 29 सितम्बर के बीच गंगा नदी के जलस्तर में हुयी वृद्धि से 13 जिले बाढ़ से प्रभावित हुये। प्रथम चरण में 28.34 लाख की आबादी प्रभावित हुयी। द्वितीय चरण में 29 सितम्बर से नेपाल एवं उत्तर बिहार के समीपवर्ती जिलों में हुयी भारी बारिश के कारण गंडक, कोशी आदि नदियों में जलस्तर में अप्रत्याशित वृद्धि होने से राज्य के 18 जिलों में बाढ़ की स्थिति बनी। बाढ़ पीड़ितों के सहायतार्थ बाढ़ आपदा प्रबंधन मानक संचालन प्रक्रिया के अनुरूप सभी कार्रवाई की जा रही है और प्रभावित लोगों को हरसंभव सहायता प्रदान की जा रही है। समीक्षा के दौरान कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने बताया कि प्रथम चरण में आयी बाढ़ से 16 जिले के 67 प्रखण्ड और 645 पंचायत का कृषि क्षेत्र प्रभावित हुआ है। दूसरे चरण में आयी बाढ़ के कारण हुयी फसल क्षति का आकलन कराया जा रहा है। पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग की प्रधान सचिव डॉ एन विजयलक्ष्मी ने अपने विभाग से संबंधित जानकारी देते हुये बताया कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पशु शिविर लगाये गये हैं। पशु चिकित्सक, पशु चारा एवं दवा की पर्याप्त व्यवस्था की गयी है। समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लोगों को हरसंभव सहायता उपलब्ध कराते रहें। सरकार में आने के बाद से आपदा पीड़ितों की सहायता के लिये हमलोग लगातार तत्पर रहते हैं। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में किसानों की फसल क्षति का आकलन करायें और उन्हें हरसंभव सहायता उपलब्ध करायें। आज प्रथम चरण में आयी बाढ़ से प्रभावित परिवारों के खाते में राशि हस्तांतरित की गयी है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश देते हुये कहा कि द्वितीय चरण में आये बाढ़ से प्रभावित परिवारों को 9 अक्टूबर तक उनके खाते में राशि अवश्य हस्तांतरित करा दें। प्रथम चरण में आये बाढ़ से हुयी फसल क्षति को लेकर किसानों के बीच यथाशीघ्र राशि का भुगतान करायें। बाढ़ के दौरान जिन बांधों को क्षति पहुंची है, उनका शीघ्र पुनस्थापन कार्य करायें। साथ ही पथ निर्माण एवं ग्रामीण कार्य विभाग बाढ़ से क्षतिग्रस्त सड़कों का पुनस्थापन कार्य भी जल्द से जल्द करायें। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में बीमारियों को लेकर चिकित्सा सेवा को पुरी तरह अप टू डेट रखे ।

महिला ने गले में फंदा डाल मौत को गले लगाया।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

बेतिया। नौतन थाना क्षेत्र के मंगलपुर गांव में गुरुवार की शाम में तीन बच्चों की मां सरिता देवी 34 वर्ष गले में फंदा डाल मौत को अपने गले लगा लिया।घटना की सुचना पर पहुंची पुलिस ने शव के अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है। जानकारी के अनुसार मृत महिला के भसूर बैधनाथ साह ने बताया कि गुरुवार को नवरात्र पर्व को लेकर घर के सभी लोग कलश यात्रा में शामिल होने गये थे।शाम में जब वापस आये तो घर में लगे बांस में साड़ी का फंदा लगाकर महिला मृत पड़ी थी।जिसकी सुचना पुलिस को दी गई।वहीं इस संबंध में मृत महिला के पिता देवराज बावरिया के लक्ष्मण साह ने बताया कि उसकी पुत्री की हत्या की गई है।जबकि इस मामले में किसी प्रकार का आवेदन नहीं दिया गया है।मृत महिला को तीन लड़के व एक लड़की है। जिसमें सुरज कुमार 11 वर्ष,सनोज कुमार 8 वर्ष,छोटू कुमार 6 वर्ष तथा बेटी सलोनी कुमारी 5 वर्ष है। मृतका के पिता लक्ष्मण साह एक महीना पहले अपनी लड़की को बुलाने गया था।ससुराल वालों ने विदा करने से इंकार कर दिया था। थानाध्यक्ष राजेश कुमार ने बताया कि मृत महिला का बड़ा पुत्र सुरज कुमार ने पुलिस को बताया कि उसकी मां बिमार रहती थी। गुरुवार को वह अपने आप अपनी जान साड़ी का फंदा डाल गंवा दी। थानाध्यक्ष ने बताया कि अभी इस मामले की किसी प्रकार का आवेदन नहीं मिला है। आवेदन मिलने पर कारवाई की जायेगी।

घट स्थापना से आरम्भ हुआ नवरात्रि उत्सव

पनवाड़ी। घरों व देवी पंडालों में गुरुवार को घट स्थापना के साथ नवरात्रि उत्सव की शुरुआत हुई। वहीं, नगर के बड़ी माता मंदिर के साथ अन्य पारम्परिक देवी स्थलों पर भजन कीर्तन के बीच खप्परों में जबारे बोए जाने की प्रथा का निर्वहन किया गया। देर रात तक चले बहन कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी देखी गई। नगर के अलग अलग मोहल्लों में पाषाण और धातु की दर्जन भर मूर्तियां स्थापित हैं। जिनमें से काली, दुर्गा और चंद्रिका माई की मूर्तियां नवमी तिथि की शाम विमान में सजाकर नगर भ्रमण के लिए निकाली जाएंगी। माता के विमानों के साथ ज़बारे निकाले जाने की परंपरा रही है। जिसे देखने के लिए आस पास के गांव से बड़ी संख्या में लोगों का जमावड़ा होता है। देवी मंदिरों में नवरात्रे के पहले दिन भक्तों द्वारा विधि विधान से पूजा अर्चना सम्पन्न हुई। इस दौरान पुरुषों और महिलाओं द्वारा मातारानी के शैलपुत्री स्वरूप से जुड़े भजन गाए गए। उधर, देवी पंडालों में कार्यकर्ताओं ने स्टेज और सजावट से जुड़े कार्यों को अंतिम रूप दिया। शरद ऋतु के आरंभ में नौ दिन चलने वाले इस उत्सव के दौरान देवी दुर्गा के विभिन्न रूपों की पूजा अर्चना कर भक्त सुख समृद्धि का आशीष प्राप्त करेंगे। देवी पूजा के उपरांत हिन्दुओं के प्रमुख त्यौहार दशहरा, दिवाली आदि का आरंभ होगा।

शराब के साथ एक बंदी

चित्रकूट। चौकी प्रभारी शिवरामपुर सत्यमपति त्रिपाठी व उनि यूटी कुंवर प्रखर, आरक्षी विवेक कुमार ने रामकरन पुत्र राकेश निवासी कपाड़िया मुहल्ला को 42 क्वार्टर देशी शराब के साथ गिरफ्तार किया। अभियुक्त के विरुद्ध आबकारी अधिनियम के अन्तर्गत अभियोग पंजीकृत किया गया।

महात्मा गांधी रत्न अवार्ड - 2024 समारोह मुंबई में सम्पन्न हुआ।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

मुंबई। कृष्णा चौहान फाउंडेशन के संस्थापक डॉ कृष्णा चौहान के द्वारा गांधी जयंती (2 अक्टूबर) के अवसर पर मेयर हॉल, अंधेरी (पश्चिम) मुम्बई में आयोजित महात्मा गांधी रत्न अवार्ड - 2024 समारोह अभिनेता सुरेंद्र पाल, आईजी मोहन राठौड़, एसीपी संजय पाटिल, धीरज कुमार, बीएन तिवारी, दिलीप सेन, सानन्द वर्मा, के के गोस्वामी, शशि शर्मा और मंजू लोढ़ा की उपस्थिति में संपन्न हुआ। प्रतिष्ठित अतिथियों ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम की शुरूआत की। उपरोक्त अतिथियों को अवार्ड देकर सम्मानित भी किया गया। समारोह के दौरान ब्राइट आउटडोर मीडिया लिमिटेड के योगेश लखानी, डॉ मुस्तफा यूसुफ गोम, जे के तिवारी, संगीता जोशी, प्रियंका मालवीय, नीतू वाधवा, सुधीर जी, क्टर विजेंद्र, हिमांशी सायबा, शशि शर्मा, सिंगर दीपक गिरि, लक्ष्मी गोस्वामी, समीरा शेख, रामुग्रह सिंह, सोना सिंह मोइन, प्रीति वर्मा मॉडल, चंदा वीरानी, सोनू श्रीवास्तव, डॉ यशोदा सोलंकी, नरेश रॉक्स, मेघा हेमदेव, चित्रा देवी जमातिया, अनुपम शक्ति, पूजा मेहता सहित कई हस्तियों को भी अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। भारती छबड़िया ने प्रोग्राम की एंकरिंग की और उन्हें भी अवार्ड से सम्मानित किया गया। डॉ कृष्णा चौहान न सिर्फ एक कामयाब फिल्म निर्देशक एवं समाज सेवक हैं। कृष्णा चौहान फाउंडेशन (केसीएफ) के बैनर तले डॉ कृष्णा चौहान कई तरह के अवॉर्ड शो का आयोजन करते आये हैं। समाज सेवा की दिशा में अग्रसर संस्था 'केसीएफ' के अंतर्गत बॉलीवुड लीजेंड अवॉर्ड, बॉलीवुड आइकोनिक अवॉर्ड, लीजेंड दादासाहेब फाल्के अवॉर्ड का आयोजन पिछले कई वर्षों से किया जाता रहा है।

रेल रोको अभियान की चेतावनी देने पर प्रशासन ने बुकियू के आंदोलन को किया विफल

बुंदेलखंड किसान यूनियन के शीर्ष नेताओं को पुलिस तैनात कर घरों में किया गया नजरबंद

■ महोबा

घर पर नजरबंद किसान नेता पंकज तिवारी, बाला जी ।

किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य और आएदिन दैवीय आपदाओं के चलते होने वाली फसलों के नुकसान का मुआवजा दिलाने सहित तमाम मांगों को लेकर बुधवार को बुंदेलखंड किसान यूनियन ने चेतावनी दी थी कि यदि किसानों की समस्याओं पर विचार नहीं किया गया था तो गुरुवार को कुलपहा? में रेल रोको आंदोलन किया जाएगा। इसकी खबर लगते ही पुलिस प्रशासन हरकत में आया और बुंदेलखंड किसान यूनियन के ब? नेताओं को भारी पुलिस फोर्स लगाकर बुधवार की शाम से ही घर पर ही नजरबंद कर दिया गया, जिससे एकत्र हुए किसान अगुवाकार किसान नेताओं के नजरबंद होने से रेल रोको आंदोलन में शामिल नहीं हो सके और रेल रोको अभियान विफल हो गया।

संयुक्त किसान नेताओ के आहवान पर अलग अलग जिलों में गुरुवार को रेल रोको आंदोलन चलाया जाना था, जिसके घटक दल बुंदेलखंड किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉक्टर पंकज तिवारी, किसान नेता सुशील खेवरिया, भरत तिवारी, संतोष तिवारी, अखिलेश रावत को उनके गृह नगर में बुधवार की शाम से नजरबंद कर दिया गया था। इसी तरह बुंदेलखंड किसान यूनियन की महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष किरन पाठक को भी पुलिस लगाकर नजरबंद कर दिया गया और गुरुवार की शाम तक पुलिस शीर्ष नेताओं के घरों पर बैठी रही। जिससे किसान नेता घरों से नही निकल सके।

ग्रामीण अंचलों से आए किसान नेताओं ने कुलपहाड़ जाकर एसडीएम को ज्ञापन देने की बात कही, जिस पर अधिकारियों ने बेलाताल में ही उपजिलाधिकारी कुलपहा? को भेजकर किसानों का ज्ञापन लिया। एसडीएम को सौंपे गए ज्ञापन में किसानों ने अपनी समस्याओं से अवगत कराया।

पंडालों में विराजी मां दुर्गा, भक्तों ने लगाए जयकारे

महोबा। शारदीय नवरात्रि के पहले दिन घट स्थापना और मां शैलपुत्री की भक्तों द्वारा पूजा अर्चना की जाती है। इसी दिन से मां के आगमन के साथ देवी पक्ष की शुरुआत होती है। नवरात्रि के पहले दिन देवी दुर्गा के प्रथम स्वरूप माता शैलपुत्री की पूजा-अर्चना करने के लिए देवी भक्त सुबह जल्दी उठकर स्नान के बाद स्वच्छ वस्त्र धारण किए और मंदिर और दुर्गा पंडालों में पहुंचे और अखंड ज्योति प्रज्वलित कर पूजा अर्चना की। भक्तों द्वारा धूप, दीप, फूल, मिठाई, नैवेद्य आदि देवी को अर्पित किया गया साथ ही मां शैलपुत्री को गाय के घी से बनी चीजों का भोग भी च?ाया गया। मान्यता है कि मां दुर्गा के प्रथम स्वरुप को गाय के घी से बनी चीजें बेहद प्रिय हैं।

ब्राह्मण पंडित दीपक व्यास बताते हैं कि यदि आपकी कुंडली में चंद्रमा का दोष है या चंद्रमा कमजोर है तो आप मां शैलपुत्री की पूजा करें, इससे आपको लाभ होगा। नवरात्रि के पहले दिन, माँ दुर्गा के भक्त अपने परिवार की खुशहाली के लिए आशीर्वाद माँगने के लिए माँ शैलपुत्री की पूजा करते हैं। बताया कि भक्तों द्वारा घट स्थापना या कलश स्थापना के लिए एक पवित्र स्थान पर एक बर्तन स्थापित किया जाता है, और नौ दिनों तक उस पर एक दीपक जलाया जाता है। मंत्र आपकी आत्मा को ऊर्जावान और उत्थानित करते हुए आपके चारों ओर एक सुरक्षा कवच का निर्माण करते हैं। बताया कि माता सती के आत्मदाह के बाद मां शैलपुत्री का जन्म हुआ था, कठोर तपस्या के बाद उनका विवाह भगवान शिव के साथ संपन्न हुआ था। पंडित पीयूष मिश्रा ने बताया कि मां शैलपुत्री देवी दुर्गा के नौ रुप में से पहले स्वरूप में जानी जाती है और नवदुर्गाओं में प्रथम दुर्गा है। पर्वतराज हिमालय के राजा हिमावत के घर पुत्री रुप में उत्पन्न होने के कारण इनका नाम शैलपुत्री प?ा। बताया कि शैलपुत्री को दो भुजाओं से दर्शाया गया है और माथे पर अर्धचंद्र है, उनके दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल का फूल है और देवी मां नंदी नामक बैल की सवारी करती हैं।

वाहनों में लगाए गए रिफ्लेक्टर, किया जागरूक

संभागीय परिवहन विभाग के अधिकारियों ने वाहन चालकों को चेताया

बांदा। सड़क हादसों में कमी लाने के लिए सड़क सुरक्षा पखवाड़े के तहत संभागीय परिवहन विभाग के अधिकारी वाहन चालकों को जागरूक कर रहे हैं।

गुरुवार को व्यावसायिक वाहनों को रोका गया और उनके चालकों को यातायात नियमों के बारे में बताया गया। रात के समय दूर से वाहन खड़ा होने का आभास हो सके, इसके लिए व्यावसायिक वाहनों में रेट्रो रिफ्लेक्टिव लगाए गए। संभागीय परिवहन विभाग के अधिकारियों ने कहा कि सड़क हादसों में कमी लाने के लिए सड़क सुरक्षा पखवाड़े के तहत लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

सड़क सुरक्षा पखवाड़े के तहत गुरुवार को संभागीय परिवहन अधिकारी प्रवर्तन शंकर सिंह, माल कर अधिकारी और संभागीय निरीक्षक शहर के विभिन्न रूटों पर निकले। इसके साथ ही चेकिंग के दौरान व्यावसायिक वाहनों को रोका और चालकों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया। इसके साथ ही वाहनों में रेट्रो रिफ्लेक्टिव लगवाए। संभागीय परिवहन विभाग के अधिकारियों ने यातायात नियमों का पालन करने की हिदायत दी। एआरटीओ और यात्री व माल कर अधिकारी ने वाहन चालकों को जागरूक किया। कहा कि वाहनों को धीमी गति से चलाएं। क्रासिंग के दौरान विशेष सावधानी बरती जाए। ताकि सड़क हादसों में कमी लाई जाए।

अठारह लाख रुपये कीमत के 72 मोबाइल बरामद

मुस्कान अभियान के तहत पुलिस ने लोगों को सौंपे मोबाइल

बांदा। आपरेशन मुस्कान के तहत पुलिस टीम ने 18 लाख रुपये के 72 अदद एंड्रायड मोबाइल बरामद किए। सभी लोगों को बुलाकर उनके मोबाइल उन्हें सौंपे गए। मोबाइल पाकर लोगों के चेहरे पर मुस्कान नजर आई।

एसपी ने आपरेशन मुस्कान के तहत सभी थानों से प्राप्त प्रार्थना पत्रों के आधार पर प्रभारी निरीक्षक साइबर सहित सभी थानों को को खोए हुए मोबाइल फोन की बरामदगी के लिए निर्देशित किया गया था। साइबर क्राइम थाना व थानों पर स्थापित साइबर हेल्प डेस्क की टीम द्वारा कठिन परिश्रम करते हुए विभिन्न कम्पनियों के 72 एंड्रायड मोबाइल फोन को बरामद करने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। बरामद किए गए कुल मोबाइल फोन की अनुमानित कीमत लगभग 18 लाख रुपये है । बरामद मोबाइल फोन को उनके स्वामियों को सुपुर्द किया गया। खोये हुए मोबाइल को वापस पाकर मोबाइल स्वामियों ने पुलिस के प्रति आभार व्यक्त किया गया। थाना कोतवाली नगर की साइबर हेल्प डेस्क टीम की टीम द्वारा सर्वाधिक 27 एंड्रायड मोबाइल फोन बरामद किए गए। वहीं साइबर क्राइम थाना की टीम द्वारा 15 एंड्रायड मोबाइल फोन, थाना कमासिन द्वारा छह मोबाइल फोन, थाना बबेरु द्वारा पांच मोबाइल फोन, थाना पैलानी व मरका द्वारा 04-04 मोबाइल फोन. थाना चिल्ला व गिरवां द्वारा तीन-तीन मोबाइल फोन, थाना मटौंध, अतर्रा, फतेहगंज व बिसण्डा द्वारा एक-एक मोबाइल फोन बरामद कर उनके स्वामियों को सुपुर्द किया गया।

सख्ती के साथ हटाया अतिक्रमण, जुर्माना वसूला

बांदा। नवरात्र के दौरान श्रद्धालुओं को आवागमन में परेशानी न हो, इसको ध्यान में रखते हुए सिटी मजिस्ट्रेट ने पुलिस फोर्स के साथ अतिक्रमण हटवाया। चेतावनी दी कि दोबारा अतिक्रमण किया गया तो सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। अतिक्रमण हटाओ अभियान के दौरान छह हजार रुपया जुर्माना भी वसूला गया। शहर के अति व्यस्त मार्गों में प्रशासनिक अधिकारियों की ओर से कई बार अतिक्रमण हटाया जा चुका है, लेकिन अधिकारियों के मुंह फेरते ही अतिक्रमणकारी फिर से सड़क पटरी पर काबिज हो जाते हैं। इसकी वजह से मार्ग संकरा हो जाता है और लोगों को आवागमन के दौरान जाम से जूझना पड़ता है। गुरुवार को नवरात्र के प्रथम दिन सिटी मजिस्ट्रेट संदीप केला ने बलखंडीनाका से महेश्वरी देवी मंदिर चौराहा से रमालीला रोड, सब्जी मंडी रोड, सरांय के अंदर होते हुए चौक बाजार तक सख्ती के साथ अतिक्रमण हटाया। व्यस्ततम मार्ग में अतिक्रमणकारियों से छह हजार रुपये जुर्माना भी वसूला गया। अभियान में पुलिस प्रशासन के अधिकारी, जेई विकास प्राधिकरण रविंद्र गुप्ता, खाद्य एवं सफाई निरीक्षक हेमन्त प्रसाद राजस्व निरीक्षक रामजस सिंह, नवल किशोर सहित नगर पालिका परिषद, बांदा के कर्मचारी मौजूद रहे। नगर मजिस्ट्रेट संदीप केला द्वारा व्यवसायियों, दुकानदारों को चेतावनी देते हुए कहा कि अगली बार अतिक्रमण मिला तो जुर्माने की रकम को और बढ़ाया जाएगा।

इजराइल के आयरन डोम ने ईरानी हमले को बुरी तरह असफल कर दिया

इजराइल के लिए रक्षा कवच साबित हुआ आयरन डोम

एजेंसी, तेल अवीव

गाजा युद्ध का दंश झेल रहे पश्चिम एशिया के एक और मोर्चे पर वार-पलटवार तेज हो गया है। हिजबुल्ला प्रमुख हसन नसरल्ला के मारे जाने के बाद ईरान भड़का हुआ था। आखिरकार उसने इजराइल पर 180 से अधिक मिसाइलें दाग दीं। हालांकि, इजराइल के आयरन डोम ने ईरानी हमले को बुरी तरह असफल कर दिया। बता दें, इसे दुनिया की सबसे अच्छी वायु रक्षा प्रणालियों में से एक माना जाता है। इजराइल इस समय अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है। पहले फिलिस्तीनी सशस्त्र संगठन हमास ने जिस तरह से हमला किया, उसकी कल्पना शायद ही किसी ने की हो। उसके बाद अब ईरान ने भी हमला कर दिया। इजराइल के लोगों ने सोचा भी नहीं था कि उनकी रात इस तरह बीतेगी। यहां के लोगों की रात की शुरुआत हवाई हमलों की गूंज से हुई। हर तरफ शोर ही शोर, लोगों में डर देखने को मिला।

इजराइल ने अमेरिका के सहयोग से राफेल एडवांस्ड डिफेंस सिस्टम को ध्यान में रखते हुए आयरन डोम को रॉकेट हमलों का मुकाबला करने के लिए विकसित किया है। इजराइल साल 2011 से इस प्रणाली का इस्तेमाल कर रहा है। इजराइल की सेना और सरकार दावा करती है कि आयरन डोम दुनिया का सबसे विकसित एयर डिफेंस सिस्टम है और इसका सक्सेस रेट 90 प्रतिशत से भी ज्यादा है।

यरुशलम के ऊपर आसमान में उड़ते ईरान के प्रक्षेपास्त्र जिन्हें इज़राइल ने रोक लिया। इज़राइली सेना ने बुधवार को एक बयान में कहा कि ईरान ने शाम को यरुशलम और इज़राइल पर लगभग 180 मिसाइलें दागीं।

कैसे काम करता है यह सिस्टम

वायु रक्षा सिस्टम आयरन डोम के मुख्य रूप से तीन हिस्से होते हैं। पहला रडार, दूसरा लॉन्चर और तीसरा कमांड पोस्ट। रडार के जरिए डोम सिस्टम यह तय करता है कि आसमान में दिख रही चीज खतरा है या नहीं। अगर सिस्टम को लगता है कि यह खतरा है तो आयरन डोम, रॉकेट पर इंटरसेप्टर मिसाइल हमला कर देता है। आयरन डोम में इस समय तामीर मिसाइलें इस्तेमाल की जा रही हैं। वहीं, जिस सिस्टम से मिसाइल लॉन्च की जाती हैं, उसे लॉन्चर कहते हैं। यह दो तरह के होते हैं। स्टेशनरी और मोबाइल। स्टेशनरी एक ही जगह पर फिटेड सिस्टम होता है और मोबाइल को एक जगह से दूसरी जगह पर ले जाया जाता है। मिसाइलें हवा में सीधे ऊपर की तरफ छोड़ी जाती हैं। उसके बाद ये अपने निशाने को ढूंढते हुए दिशा बदल लेती है। ये इंटरसेप्टर हवा में ही रॉकेट को नष्ट कर देती है। वहीं कमांड पोस्ट से इस पूरी प्रकिया पर नजर रखी जाती है।

बीते साल किया था हमला

हमास के बाद ईरान लंबे समय से इजराइल पर हमले की फिराक में था। वह हर समय हमला करने की रणनीति बनाता रहता है, लेकिन इजराइल ने अपने सभी सीमाओं को अभेद्य बना रखा है। जमीनी सीमाओं पर उसके जवान पहरा देते हैं और हवाई सीमा की सुरक्षा आयरन डोम करती है। बीते साल अक्तूबर में हमास ने इजराइल पर हवाई हमले से ही शुरुआत की थी। वह पहले भी कई बार हवाई हमले कर चुका था, लेकिन हर बार आयरन डोम की वजह से वह नाकाम हो जाता था

हमास ने कैसे किया था हमला : हमास लगातार अपनी क्रूड रॉकेट तकनीक विकसित कर रहा था और पिछले कुछ वर्षों में इसने तेल अवीव और यहां तकइजराइल के प्रमुख शहरों को कवर करने के लिए अपनी सीमा बढ़ा दी है। हमास द्वारा लॉन्च किया गया रॉकेट उसे रोकने के लिए दागी गई तामीर मिसाइल की तुलना में काफी सस्ता था।

ईरानी एयरस्ट्राइक के बाद गाजा पर इजराइल का बड़ा हमला, बच्चों और महिलाओं समेत 51 लोगों की मौत

एजेंसी, तदीर अल-बला (गाजा पट्टी)

दक्षिणी गाजा में इजराइल ने आज फिर भीषण हमला किया है। इजराइली सेना ने यह हमला तेल अवीव पर ईरान की एयर स्ट्राइक के बाद किया है। इजराइली सेना की ओर से गाजा पर रातभर किये गये हमलों में कम से कम 51 लोग मारे गए हैं। फिलस्तीन के चिकित्सा अधिकारियों के अनुसार मृतकों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। बता दें कि हमास द्वारा सात अक्टूबर को किए गए हमले के बाद फिलस्तीनी क्षेत्र में युद्ध छिड़ जाने के लगभग एक वर्ष बाद भी इजराइल ने गाजा में स्थित आतंकवादी ठिकानों पर हमले जारी रखे हैं। जबकि इसका ध्यान लेबनान और ईरान की ओर भी है। उधर अब इजराइली थल सैनिकों ने हिजबुल्ला के विरुद्ध लेबनान में घुसपैठ की है। लेबनान की सीमा पर इजराइली सैनिकों और हिजबुल्लाह के बीच आज भीषण जंग की खबर सामने आई है। जिसमें आईडीएफ ने अपने एक कमांडर के मारे जाने की पुष्टि की है। इससे पहले ईरान ने मंगलवार देर रात यानि 1 अक्टूबर को इजराइल पर बैलिस्टिक मिसाइलों से हमला किया। जिसमें ईरान इजराइल के आर्मी बेस और मोसाद के हेड क्वॉर्टर समेत कई ठिकानों को ध्वस्त करने का दावा किया।

नागरिकों के हित और नुकसान को लेकर सावधान रहना चाहिए

वॉशिंगटन। गाजा युद्ध का दंश झले रहे पश्चिम एशिया के एक और मोर्चे पर वार-पलटवार तेज हो गया है। हिजबुल्ला प्रमुख हसन नसरल्ला के मारे जाने के बाद ईरान भड़का हुआ बैठा है। उसने इजराइल पर 200 से अधिक मिसाइलें दाग दीं। इससे दोनों के बीच तनातनी चरम पर है। वहीं, इस हमले से पहले भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सात अक्तूबर को हमास द्वारा इजराइल पर किए हमले को आतंकवादी हमला करार दिया। डॉक्टर जयशंकर ने कहा, 'हम सात अक्तूबर को आतंकवादी हमला मानते हैं। हम समझते हैं कि इजराइल को जवाब देने की आवश्यकता है। मगर, हमारा यह भी मानना है कि किसी भी देश को अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून को ध्यान में रखकर प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

■ ईरान के मिसाइल अटैक से पहले जयशंकर ने हमास की करतूत को बताया आंतकी हमला

विदेश समाचार

पांच मिलियन डॉलर जुर्माना भरने पर सहमत हुए मस्क

रियो। ब्राजील के सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स के बैंक खातों अनब्लॉक करने का आदेश दिया। इसके साथ ही एक्स को पांच मिलियन डॉलर (41 करोड़ रुपये से अधिक) का जुर्माना देना होगा। न्यायाधीश अलेक्जेंड्रे डी मोरेस के इस फैसले के बाद से ही ब्राजील में एक्स के निलंबन को हटाने का मार्ग प्रशस्त हो गया। दरअसल, एक जज और एलन मस्क के बीच दुष्प्रचार को लेकर गतिरोध के कारण 31 अगस्त से यहां एक्स पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। प्रतिनिधि का नाम बताने में विफल रहने के बाद मोरेस ने एक्स को बंद करने का आदेश दिया था।

नेशनल बुक अवॉर्ड की दौड़ में सलमान रुश्दी

न्यूयॉर्क। अपने संस्मरण नाइफ के लिए सलमान रुश्दी, ऐतिहासिक उपन्यास के लिए जेम्स पर्सिवल एवरेट को 75वें वार्षिक नेशनल बुक अवॉर्ड के फाइनलिस्ट में शामिल किया गया है। पुरस्कार के लिए नामांकित अन्य लोगों में उपन्यास ऑल फोर्स की लेखिका मिरांडा जुलाई और रॉन्ग नॉर्मा के लिए प्रसिद्ध कनाडाई कवियत्री ऐनी कार्सन शामिल हैं। नेशनल बुक फाउंडेशन ने मंगलवार को फिक्शन, नॉनफिक्शन, युवाओं के साहित्य, कविता और अनुवाद में पुस्तकों के फाइनलिस्ट की घोषणा की। विजेताओं की घोषणा 20 नवंबर को मैनहट्टन में एक समारोह में की जाएगी।

पूर्व राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने मनाया 100वां जन्मदिन

वॉशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जिमी कार्टर मंगलवार को 100 साल के हो गए। कार्टर ने अपना जन्मदिन अपने गृहनगर जॉर्जिया में मनाया, जहां वह पिछले साल से अस्पताल में हैं। अमेरिकी इतिहास में कार्टर में सबसे लंबे समय तक जीवित रहने वाले पहले राष्ट्रपति बन गए हैं। उनकी विरासत मानवाधिकार और मानवता की सेवा से भरी हुई है। लेकिन जब वह राष्ट्रपति थे तो उन्हें काफी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था। उनके पोते जेसन कार्टर ने स्थानीय मीडिया से कहा, उनकी विरासत संघर्षों से भरी हुई है। लेकिन वे हमेशा लोगों का सम्मान करते रहे हैं। कार्टर के जन्मदिन के मौके पर कोई विशेष कार्यक्रम नहीं हुआ है

मेक्सिको की पहली महिला राष्ट्रपति बनीं शेनबाम

मेक्सिको। क्लाउडिया शेनबाम ने मंगलवार को मेक्सिको की पहली महिला राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। वह स्वतंत्र मेक्सिको के २०० वर्षों के इतिहास में पहली महिला राष्ट्रपति बनी हैं। इस दौरान उन्होंने अपने पूर्ववर्ती द्वारा लागू की गईं लोकप्रिय नीतियों को संरक्षित करने और गरीबों के लिए सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क का विस्तार करने का वादा किया है। लेकिन, उन्हें कई दबाव वाली समस्याओं का सामना करना होगा, जिनमें उच्च हिंसा दर, धीमी अर्थव्यवस्था और तूफान से प्रभावित शहर अकापुल्को शामिल हैं। पूर्व राष्ट्रपति एंड्रेस मैनुअल लोपेज ओब्राडोर ने छह साल पहले पदभार संभालते हुए कहा था, 'सभी के लिए अच्छा, पहले गरीबों के लिए' और अपने पूर्ववर्तियों की नीतियों से ऐतिहासिक बदलाव का वादा किया था। लेकिन, वैज्ञानिक से राजनेता बनीं ६२ वर्षीय शेनबाम ने सत्ता में निरंतरता का वादा किया है।

दुनिया आपको थाली में परोसकर कुछ नहीं देगी

वॉशिंगटन । केंद्रीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर इनदिनों अमेरिका दौरे पर हैं। इस दौरान उन्होंने एक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। उन्होंने इस कार्यक्रम में चीन के साथ भारत के संबंधपर खुलकर बात की। उन्होंने बताया कि जब चीन की बात आती है को वे मंत्रालय में अपने सहयोगियों से प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार रहने के लिए कहते हैं। जयशंकर ने एक संदेश देते हुए कहा कि दुनिया किसी को भी थाली में परोसकर कुछ नहीं देती है। जयशंकर ने कहा, आजादी के बाद से पड़ोसियों के साथ हमारे संबंध बहुत मजबूत हो गए हैं। इसका एकमात्र कारण यह है कि हम बहुत क्षेत्रीय हो गए हैं। हमारे पड़ोसियों की भी अपनी राजनीति है और वहां भी उतार-चढ़ाव है।

अधिकांश महिलाएं और बच्चे

नाव पलटने से नाइजीरिया के 100 से ज्यादा लोग लापता

एजेंसी, अबुजा (नाइजीरिया)

उत्तर पश्चिम नाइजीरिया में नाव पलटने के बाद से 100 से ज्यादा लोग अब भी लापता है। इनमें ज्यादातर महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। यह नाव इन लोगों को एक इस्लामी त्योहार से वापस लेकर आ रही थी। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। एसोसिएटेड प्रेस ने स्थानीय अधिकारियों के हवाले से बताया कि नाव में करीब 300 लोग सवार थे, जबकि इसकी क्षमता 100 यात्रियों की ही थी। यह नाव नाइजर राज्य के मोक्का जिले में नाइजर नदी के किनारे सोमवार की रात पलटी। स्थानीय मीडिया के मुताबिक, अभी तक 11 शव नदी से निकाले जा चुके हैं, जिनमें नौ पुरुष और दो महिलाएं

शामिल हैं। अधिकारियों ने बताया कि बुधवार सुबह तक कम से कम 150 लोगों को बचा लिया गया है, जबकि खोज अभियान जारी है। राज्य की आपात सेवा के निदेशक सलिहु गरबा ने कहा, नाव में 100 से अधिक लोग नहीं होने चाहिए थे। लेकिन इसमें करीब 300 लोग सवार थे, जो दुर्घटना की वजह बनी। विशेषज्ञों ने कहा कि नाइजीरिया में हाल के वर्षों में हुए नाव हादसों के पीछे नियामकीय विफलताएं और क्षमता से अधिक भार जैसी वजहें हैं।

कई महत्वपूर्ण विषयों पर हुई बहस

जलवायु परिवर्तन पर जेडी वेंस और वॉल्ज ने एक दूसरे पर जमकर हमला बोला

एजेंसी, वॉशिंगटन

अमेरिका में राष्ट्रपति का अगले महीने चुनाव होना है। इस बार मुकाबला पूर्व राष्ट्रपित डोनाल्ड ट्रंप और मौजूदा उप राष्ट्रपति कमला हैरिस के बीच है। दोनों के बीच पिछले महीने प्रेसिडेंशियल डिबेट हो चुकी है। जिसमें कमला हैरिस ने बढ़त बनाई थी। अब रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक पार्टियों के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार जेडी वेंस और टिम वाल्ज के बीच 1 अक्टूबर को वाइस प्रेसिडेंशियल डिबेट हुई। डोनाल्ड ट्रंप और अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस के बीच 10 सितंबर को हुई दिलचस्प डिबेट के बाद आज रात को जेडी वेंस और टिम वाल्ज ने डिबेट को दौरान जमकर एक दूसरे पर हमला बोला। यह डिबेट सीबीएस न्यूज की ओर से कराई थी। भारतीय समयानुसार सुबह 6.30 बजे शुरू हुई इस 90 मिनट की डिबेट में टिम और जेडी ने मिडिल ईस्ट में बढ़े तनाव से लेकर अमेरिकी अर्थव्यवस्था, माइग्रेशन और गर्भपात, जलवायु परिवर्तन पर एक दूसरे पर जमकर हमला बोला।

चुनाव की आखिरी डिबेट मानी जा रही है

मिनेसोटा से गवर्नर और डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार टिम वॉल्ज और ओहायो से सीनेटर रिपब्लिकन पार्टी की ओर से उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार जेडी वेंस डिबेट से पहले एक दूसरे साथ गर्मजोशी से मिले। अगले महीने होने वाली चुनावों से पहले इसे दोनों पार्टियों को ओर से आखिरी चुनावी डिबेट माना जा रहा है। इससे पहले ट्रंप ने उपराष्ट्रपति हैरिस के साथ दूसरी बहस से इनकार कर दिया था। इस डिबेट के दौरान डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार टिम वॉल्ज ने मौजूदा सरकार की मिडिल क्लास को लेकर पेश की गई योजनाओं का समर्थन किया।

हम स्पष्ट रूप से मध्य पूर्व में जारी संघर्ष में शामिल होने जा रहे हैं

इजराइल संघर्ष पर ट्रंप बोले ये दो स्कूली बच्चों की लड़ाई है

एजेंसी, न्यूयॉर्क

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को इजराइल और हमास के बीच चल रहे संघर्ष की तुलना स्कूल के मैदान में लड़ रहे दो बच्चों से की। उन्होंने कहा कि इजराइल पर मंगलवार को हुए रॉकेट हमले जैसी घटनाएं कभी नहीं होनी चाहिए थीं। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका मध्य पूर्व की स्थिति पर पैनी नजर बनाए हुए है। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, यह वास्तव में बहुत बुरा है, लेकिन उन्हें यह प्रक्रिया पूरी करनी होगी। इसे स्कूल के

मैदान में दो बच्चों के बीच लड़ाई की तरह समझें। कभी-कभी आपको इसे छोड़ देना चाहिए। हम देखेंगे कि आगे क्या होता है। उन्होंने कहा कि, लेकिन यह एक भयानक युद्ध है और आप देख सकते हैं कि आज क्या हो रहा है। आप जानते हैं, यह कहां रुकने वाला है? आप इन ताकतों को देखिए। उन्होंने आज लगभग 200 रॉकेट मार गिराए। लेकिन यह वह तरीका नहीं है जिस तरह से किसी को जीना चाहिए। इसलिए हम स्पष्ट रूप से मध्य पूर्व में जारी संघर्ष में शामिल होने जा रहे हैं। ऐसा कभी नहीं हुआ होता।

खतरा हर जगह व्याप्त है

ट्रंप ने दावा किया कि, मैं राष्ट्रपति था, तब ईरान के पास कोई पैसा नहीं था। अब उनके पास 300 बिलियन डॉलर हैं। मेरे प्रशासन के तहत हमारे पास मिडिल ईस्ट में कोई युद्ध नहीं हुआ था, यूरोप में कोई युद्ध नहीं था, और एशिया में सद्भाव था। कोई मुद्रास्फीति नहीं थी। कोई अफगानिस्तान आपदा नहीं थी। चारों तरफ शांति थी। अब युद्ध या युद्ध का खतरा हर जगह व्याप्त है और हमारे देश को दो अक्षम लोग चला रहे हैं। उन्होंने कहा कि ये हमें तीसरे विश्व युद्ध के कगार पर ले जा रहे हैं।

'दुनिया वैश्विक तबाही के करीब'

ईरान ने इजराइल पर करीब 200 मिसाइलें दागीं। इसे तेहरान द्वारा हिजबुल्ला प्रमुख हसन नसरल्ला की हत्या का जवाब माना जा रहा है। अधिकांश मिसाइलों को इजराइल ने अमेरिकी सेना और अन्य एजेंसियों की मदद से रोककर नष्ट कर दिया। हमले के तुरंत बाद कल डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन और कमला हैरिस की आलोचना की। उन्होंने इस स्थिति को 'वैश्विक तबाही के करीब' बताया है। जो बाइडन और कमला हैरिस पर निशाना साधते हुए डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि, दुनिया इस समय नियंत्रण से बाहर होती जा रही है। कुछ समय पहले, ईरान ने इजराइल पर 200 से अधिक बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं और हम वैश्विक तबाही के और करीब आ गए हैं।

राहुल की एंट्री से कांग्रेस को फायदा या नुकसान

कम से कम शहरी वोटरों में चुनाव राहुल वर्सेस मोदी हो गया है। इससे लगता है कि आईएनएलडी और जेजेपी ही नहीं, निर्दलीय उम्मीदवार भी थोड़ा बैकग्राउंड में चले गए हैं।

अजय सेतिया की कलम से

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा अच्छा खेल रहे थे। हरियाणा का चुनाव एक तरफा कांग्रेस के पक्ष में जाता दिखाई दे रहा था। लेकिन, राहुल की एंट्री ने हुड्डा ही नहीं कांग्रेस का खेल भी बिगाड़ दिया है। अब चुनाव एकतरफा कांग्रेस के पक्ष में नहीं रह गया है। राहुल गांधी की एंट्री से कांग्रेस को थोड़ा फायदा भी हुआ है, लेकिन, नुकसान ज्यादा होता दिख रहा है। पहले अपन कांग्रेस को होने वाले फायदे गिनते हैं। उससे पहले थोड़ा बैकग्राउंड समझ लेते हैं। 2014 और 2019 में कांग्रेस और भाजपा का आमने-सामने का चुनाव नहीं था। 2014 में आईएनएलडी तीसरी बड़ी ताकत थी, तब 33 प्रतिशत वोटों से ही उसे 47 सीटें मिल गई थीं। 2019 में 37 प्रतिशत वोटों के साथ उसे सिर्फ 40 सीटें मिली, क्योंकि जेजेपी बड़ी ताकत के रूप में उभरी थी, जिसे 15 प्रतिशत वोट और 10 विधानसभा सीटें मिलीं थीं। तिकोने मुकाबले के अलावा आठ निर्दलीय भी चुनाव जीत गए थे। लेकिन, इस बार के लोकसभा चुनावों में जब चुनाव काफी हद तक चुनाव द्विपक्षीय हो गए तो कांग्रेस लोकसभा की पांच सीटें जीत गई और उसका वोट शेयर भी भाजपा से 2 प्रतिशत ज्यादा हो गया। लोकसभा की तरह विधानसभा चुनाव हों तो कांग्रेस को फायदा होगा। लेकिन, विधानसभा चुनावों में स्थिति हमेशा अलग रही है। पिछले लंबे समय से हरियाणा में ऐसा कोई विधानसभा चुनाव नहीं रहा, जब 8-10 निर्दलीय उम्मीदवार न जीते हों। राहुल की एंट्री से चुनाव क्षेत्रीय मुद्दों से हटकर राष्ट्रीय मुद्दों पर आया है। कम से कम शहरी वोटरों में चुनाव राहुल वर्सेस मोदी हो गया है। इससे लगता है कि दोनों जाट पार्टियां आईएनएलडी और जेजेपी ही नहीं, निर्दलीय उम्मीदवार भी थोड़ा बैकग्राउंड में चले गए हैं। इस बार दोनों जाट पार्टियों का दलित बेस पार्टियों से गठबंधन और ज्यादा निर्दलियों का खड़ा होना कांग्रेस के चांस को खराब कर रहा है। आपको एक उदाहरण देता हूं, विनेश फोगाट को भूपेन्द्र हुड्डा का सबसे बड़ा कैच माना जा रहा था। जब वह कांग्रेस में आई और उसे जुलाना विधानसभा से टिकट दिया गया तो यह माना गया कि अब तो कांग्रेस की एकतरफा जीत होगी और हुड्डा का मुख्यमंत्री बनना तय है। लेकिन, आपको जानकर हैरानी होगी कि फोगाट के खिलाफ 14 जाट निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं। आपको एक और उदाहरण देता हूं। लाडवा में जहां मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी चुनाव लड़ रहे हैं, वहां जाट और सैनी लगभग बराबर हैं और जट्ट सिख भी अच्छी तादाद में हैं। नायब सिंह सैनी के खिलाफ आठ जाट और छह जट्ट सिख चुनाव लड़ रहे हैं। इस तरह जाट और जट्ट सिख किसी न किसी तरह से भाजपा को फायदा पहुंचा रहे हैं। लेकिन, इसका मतलब यह नहीं है कि चुनाव राहुल वर्सेस मोदी होने से वास्तव में चुनाव द्विपक्षीय हो जाएगा और निर्दलीय जीत नहीं पाएंगे या कांग्रेस का खेल खराब करने में कामयाब नहीं होंगे। जमीनी हकीकत यह है कि कई जगह निर्दलीय उम्मीदवार बहुत ही ताकतवर हैं, जैसे भाजपा की टिकट न मिलने पर भाजपा सांसद नवीन जिंदल की मां सावित्री जिंदल हिसार में निर्दलीय चुनाव लड़ रही हैं। कांग्रेस के 29 बागी चुनाव लड़ रहे हैं, जो कांग्रेस का खेल बिगाड़ रहे हैं। अब आपको राहुल गांधी की चुनाव मैदान में एंट्री से कांग्रेस को होने वाले नुकसान गिनाता हूं। पहला नुकसान तो यह हुआ है कि चुनाव राहुल वर्सेस मोदी हो गया है, जिससे भाजपा को सीधा फायदा होना शुरू हो गया है। अब तक नेगटिव वोट इलेक्शन था। भाजपा के खिलाफ जबर्दस्त एंटी इनकम्बेंसी दिख रही थी। राहुल गांधी की एंट्री के बाद, जैसे ही चुनाव मोदी वर्सेस राहुल हुआ, भाजपा के लिए एंटी इनकम्बेंसी वाला चुनाव पॉजिटिव वोट इलेक्शन दिखने लगा है। भाजपा का प्रचार पहले से ज्यादा हमलावर हो गया है, जो पहले सिर्फ हुड्डा को टार्गेट करके दलितों को उनके शासन काल में हुए अत्याचारों की याद दिला रही थी, उसने अब राहुल गांधी के झूठे प्रचार पर भी हमलावर होना शुरू कर दिया है। कांग्रेस जो अब तक सिर्फ हुड्डा को सामने रखकर चुनाव लड़ रही थी, उसे दलित वोट बचाने के लिए हुड्डा को पीछे करके शैलजा को आगे लाना पड़ा है, जिससे मुख्यमंत्री को लेकर हुड्डा समर्थक जाट आशंकित हो गए हैं। लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को जाट, मुस्लिम और दलित कॉम्बीनेशन से फायदा हुआ था। लेकिन, विधानसभा चुनाव में दलित कांग्रेस के साथ नहीं है। क्योंकि, इस बार आरक्षण मुद्दा नहीं है, बल्कि अमेरिका में वक्त आने पर आरक्षण खत्म करने की बात कहकर आरक्षण के मुद्दे को अपने खिलाफ कर लिया है, जिसे भाजपा खूब भुना रही है। इसके अलावा राहुल गांधी ने शैलजा के उम्मीदवारों की सूची को दरकिनार कर हुड्डा की सूची पर टिकट दिए हैं, जिससे हुड्डा शासन में दलितों पर अत्याचारों की यादें ताजा हो गई हैं। ओबीसी और जनरल कैटेगिरी भाजपा के साथ है। दलित बंटे हुए हैं और वहीं किंगमेकर हैं, इसलिए नरेंद्र मोदी ने हर चुनाव रैली में दलितों को गुमराह करने के लिए राहुल गांधी को टार्गेट करना शुरू कर दिया है।

बिहार में पीके की नई पारी

गांधी जयंती पर दो अक्टूबर को चुनावी रणनीतिकार रहे प्रशान्त किशोर ने औपचारिक रूप से अपनी नई पार्टी की घोषणा करके स्पष्टीकरण दिया कि वे बदलाव के लिए काम करेंगे। उन्होंने अपनी पार्टी को जनसुराज पार्टी नाम दिया है। गुरुवार को पटना के वेटेरिनरी कॉलेज मैदान में पूरे बिहार से कोई पचास हजार से ज्यादा लोग जुटे होंगे। प्रशान्त किशोर का कहना है कि उनकी पार्टी न तो वामपंथी और न ही दक्षिणपंथी विचारधारा अपनाएगी, वो सिर्फ इंसानियत की राह पर चलेगी। बिहार को नंबर एक राज्य बनाएंगे, बिहारियों के सम्मान के लिए काम करेंगे। पार्टी के झंडे पर बापू और बाबा साहब दोनों की फोटो होगी। इसके साथ ही उन्होंने कार्यकर्ताओं में उत्साह भरते हुए कहा कि पार्टी सत्ता में आई तो घंटे भर के भीतर शराबबंदी को हटा देंगे। शराब से जो पैसा कर के तौर पर मिलेगा, उससे स्कूल बनवाएंगे, बच्चों को पढ़ाएंगे क्योंकि अच्छी शिक्षा ही सारी परेशानियों से निजात दिला सकती है। प्रशान्त ने संगठन की शुरुआत बड़े ही अलग अंदाज में की है। वे न पार्टी के अध्यक्ष होंगे, न मुख्यमंत्री पद के दावेदार। सेवानिवृत्त आईएफएस अधिकारी मनोज भारती को पार्टी का कार्यवाहक अध्यक्ष बनाया जाएगा। पार्टी के सभी बड़े फैसले नेतृत्व परिषद करेगी। दो साल पहले 2 अक्टूबर को प्रशांत किशोर ने चंपारण से जब जनसुराज यात्रा की शुरुआत की थी, तब किसी को अंदाजा भी नहीं था कि पीके इतना बड़ा कमाल कर देंगे। पीके लगातार संगठन को मजबूत करते रहे। लोगों के बीच जाकर उन्होंने अपना मिशन रखा। बताते हैं दो साल में उनकी यात्रा बिहार के साढ़े 5 हजार गांवों में गई। 17 जिलों में घूम कर प्रशांत किशोर ने लोगों को अपने साथ जोड़ा। इसके बाद जनसुराज पार्टी की घोषणा की। जनसुराज पार्टी बिहार के अगले चुनाव में सभी 242 सीटों पर उम्मीदवार उतारेगी। पटना में मंच पर पीके के साथ पूर्व केंद्रीय मंत्री देवेंद्र यादव, पूर्व सांसद मुनाजिर हसन, पूर्व एमएलसी रामबली चंद्रवंशी, कर्पूरी ठाकुर की पोती जागृति ठाकुर, मनोज भारती की मौजूदगी बता रही थी कि पीके की इस पार्टी को हल्के में नहीं लिया जा सकता। पीके के मैदान में उतरने से बिहार की राजनीतिक पार्टियों में हलचल है। सबकी नजर प्रशान्त किशोर की रणनीति पर है। जिन नेताओं के लिए पीके ने काम किया अब वही नेता इस नई पार्टी से डरे सहमे नजर आ रहे हैं। खासकर बिहार में जन सुराज पार्टी की चर्चा जोरों पर है। हालांकि स्थानीय नेताओं ने पार्टी पर तंज कसते हुए कहा कि पीके पहले चुनाव लड़ाते थे अब पैसा बनाने के लिए खुद चुनाव लड़ेंगे। केन्द्रीय मंत्री चिराग पासवान से लेकर राजद के नेताओं ने भी पीके पर तेज कसा है। मतलब साफ है पीके ने पूरे बिहार का दौरा करके लोगों के पास राजद, जदयू और भाजपा के विकल्प के तौर पर आम जनता के हित को साधने वाले मुद्दों को रखकर जनता की फीडबैक ली है। पीके ने मुख्यमंत्री नीतीश से लेकर भाजपा, सहित कई क्षेत्रीय व राष्ट्रीय पार्टियों के लिए काम किया है। उनकी प्रतिभा का लोहा मानते हुए नीतीश कुमार ने जदयू में असरदार पद भी दिया। यहां बात बिगड़ी तो पीके ने कांग्रेस की तरफ रुख किया। लेकिन कांग्रेस में अपनी महत्वाकांक्षा पूरी होते न देख उन्होंने अपनी नई पार्टी प्रस्तुत करने का विकल्प रखा। पीके राजनीति के कोई नए खिलाड़ी नहीं हैं। दो साल तक बिहार के गांव-गांव की खाक छानने के बाद मैदान में उतरे हैं, इसलिए उन्हें जनता की नब्ज पता है, उनका विजन स्पष्ट है, उन्हें रास्ता भी पता है, लक्ष्य भी है। प्रशान्त किशोर ने पार्टी बनाई, अच्छा किया। बिहार को एक नई सोच की जरूरत है। साफ और सच्ची बात कहने वाले नेतृत्व की आवश्यकता है। अच्छा होगा प्रशांत बिहार की जनता के सामने साफ विकल्प दें। उन्हें खुद को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार भी घोषित करना चाहिए। ताकि पता चले कि लोग राज्य में नया विकल्प चाह रहे हैं या नहीं। पिछले दो साल में जहां-जहां प्रशांत किशोर गए हैं, लोगों ने उनकी बात सुनी है, उन पर भरोसा किया है।

सामयिक

शाहीन सबा

बाल यौन शोषण पर सर्वोच्च न्यायालय का फैसला

सर्वोच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसले में कहा है कि बच्चों के यौन शोषण से जुड़े अश्लील वीडियो और कंटेंट डाउनलोड करने, देखने, रखने या उसे किसी को भेजने पर बाल यौन अपराध (पॉक्सो) कानून और आईटी एक्ट के तहत अपराध माना जाएगा। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की पीठ ने कहा, अगर किसी को ऐसी सामग्री अनजाने में भी मिली है और वह इसे डिलीट नहीं करता है तो भी पॉक्सो एक्ट की धारा-15 के तहत अपराध होगा। भले ही उस व्यक्ति ने वीडियो किसी को फॉरवर्ड नहीं किया हो। इसके साथ ही चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला की पीठ ने उच्च न्यायालय मद्रास का वह आदेश रद्द कर दिया, जिसमें कहा गया था कि बाल पोर्न देखना और डाउनलोड करना पॉक्सो तथा आईटी कानून में अपराध नहीं है। इस न्यायालय ने एक युवक के विरुद्ध पॉक्सो एक्ट के तहत दर्ज मामले को यह कहकर निरस्त कर दिया था कि उसने बाल पोर्न डाउनलोड तो किया लेकिन किसी को भेजा नहीं था। इसके साथ ही शीर्ष न्यायालय ने देशव्यापी यौन शिक्षा कार्यक्रम चालू करने की नसीहत भी भारत सरकार को दी है। न्यायालय ने पोर्न देखने और रखने को अपराध जरूर माना है, लेकिन इससे बाल पोर्न पर अंकुश लग जाएगा, यह कहना मुश्किल है। क्योंकि पोर्न का कारोबार विश्वव्यापी है और इसके सूत्रधार अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देशों में बैठे हुए हैं।

अंतर्जाल की आभासी व मायावी दुनिया से अश्लील सामग्री पर रोक की मांग सबसे पहले इंदौर के जिम्मेदार नागरिक कमलेश वासवानी ने सर्वोच्च न्यायालय से की थी। याचिका में दलील दी गई थी कि इंटरनेट पर अवतरित होने वाली अश्लील वेबसाइटों पर इसलिए प्रतिबंध लगना चाहिए, क्योंकि ये साइटें स्त्रियों एवं बालकों के साथ यौन दुराचार का कारण तो बन ही रही हैं,सामाजिक कुरूपता बढ़ाने और निकटतम रिश्तों को तार-तार करने की वजह भी बन रही हैं। इंटरनेट पर अश्लील सामग्री को नियंत्रित करने का कोई कानूनी प्रावधान नहीं होने के कारण जहां इनकी संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है, वहीं दर्शक संख्या भी बेतहाशा बढ़ रही है। ऐसे में समाज के प्रति उत्तरदायी सरकार का कर्तव्य बनता है कि वह अश्लील प्रौद्योगिकी पर नियंत्रण की ठोस पहल करें। हालांकि अब इस अपराध पर नियंत्रण के लिए पॉक्सो एक्ट और आईटी कानून में प्रावधान कर दिए गए हैं। न्यायालय ने इनमें कठोरता के नए प्रावधान भी कर दिए हैं।

वस्तुस्थिति यह है कि इंटरनेट पर अश्लीलता का तिलिस्म भरा पड़ा है। वह भी दृश्य, श्रव्य और मुद्रित तीनों माध्यमों में। ये साइटें नियंत्रित या बंद इसलिए नहीं होती, क्योंकि सर्वरों के नियंत्रण कक्ष विदेशों में स्थित हैं। ऐसा

माना जाता है कि इस मायावी दुनिया में करीब 20 करोड़ अश्लील वीडियो एवं क्लीपिंग चलायमान हैं, जो एक क्लिक पर कम्प्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल, फेसबुक, ट्यूटर, यूट्यूब और वाट्सएप की स्क्रीन पर उभर आती हैं। लेकिन यहां सवाल उठता है कि इंटरनेट पर अश्लीलता की उपलब्धता के यही हालात चीन में भी थे। परंतु चीन ने जब इस यौन हमले से समाज में कुरूपता बढ़ती देखी तो उसके वेब तकनीक से जुड़े अभियंताओं ने एक झटके में सभी वेबसाइटों को प्रतिबंधित कर दिया। गौरतलब है, जो सर्वर चीन में अश्लीलता परोसते थे, उनके ठिकाने भी चीन से जुदा धरती और आकाश में थे। तब फिर यह बहाना समझ से परे है कि हमारे आईटी विशेषज्ञ इन साइटों को बंद करने में क्यों अक्षम साबित हो रहे हैं? चीन यही नहीं रुका, उसने अब गूगल की तरह अपने सर्च-इंजन बना लिए हैं। जिन पर अश्लील सामग्री अपलोड करना पूरी तरह प्रतिबंधित है।

इस तथ्य से दो आशंकाएं प्रगट होती हैं कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दबाव में एक तो हम भारतीय बाजार से इस आभासी दुनिया के कारोबार को हटाना नहीं चाहते, दूसरे इसे इसलिए भी नहीं हटाना चाहते क्योंकि यह कामवर्द्धक दवाओं व उपकरणों और गर्भ निरोधकों की बिक्री बढ़ाने में भी सहायक हो रहा है। जो विदेशी मुद्रा कमाने का जरिया बना हुआ है। कई सालों से हम विदेशी मुद्रा के लिए इतने भूखे नजर आ रहे हैं कि अपने देश के युवाओं के नैतिक पतन और बच्चियों व स्त्रियों के साथ किए जा रहे दुष्कर्म और हत्या की भी परवाह नहीं कर रहे। अमेरिका, ब्रिटेन, जापान और चीन से विदेशी पूंजी निवेश का आग्रह करते समय क्या हम यह शर्त नहीं रख सकते कि हमें अश्लील वेबसाइटें बंद करने की तकनीक और गूगल की तरह अपना सर्च-इंजन बनाने की तकनीक दें। लेकिन दिक्कत व विरोधाभास यह है कि अमेरिका, ब्रिटेन, कोरिया और जापान इस अश्लील सामग्री के सबसे बड़े निर्माता और निर्यातक देश हैं। लिहाजा वे आसानी से यह तकनीक हमें देने वाले नहीं हैं। गोया, यह तकनीक हमें ही अपने देशज स्रोतों से विकसित करनी होगी।

ब्रिटेन में सोहो एक ऐसा स्थान हैं, जिसका विकास ही पोर्न वीडियो फिल्मों एवं पोर्न क्लीपिंग के निर्माण के लिए हुआ है। यहां बनने वाली अश्लील फिल्मों के निर्माण में ऐसी बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने धन का निवेश करती हैं, जो कामोत्तेजक सामग्री, दवाओं व उपकरणों का निर्माण करती हैं। वियाग्रा, वायब्रेटर, कौमार्य झिल्ली, कंडोम और सेक्सी डॉल के अलावा कामोद्दीपक तेल बनाने वाली ये कंपनियां इन फिल्मों के निर्माण में बढ़ा पूंजी निवेश करके मानसिकता को विकृत कर देने वाले कारोबार को बढ़ावा दे रही हैं। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी के पति राज कुंद्रा की कंपनी भी ब्रिटेन को पोर्न फिल्में बेचती थी। यह शहर 'सेक्स उद्योग' के नाम से ही विकसित हुआ है। बाजार को बढ़ावा देने के ऐसे ही उपायों के चलते ग्रीस और स्वीडन जैसे देशों में क्रमशः 89 और 53 फीसदी किशोर निरोध का उपयोग कर रहे हैं। यही वजह है कि बच्चे नाबालिग उम्र में काम-मनोविज्ञान की दृष्टि से परिपक्व हो रहे हैं। 11 साल की बच्ची रजस्वला होने लगी है और 13-14 साल के किशोर कामोत्तेजना महसूस करने लगे हैं। इस काम-विज्ञान की जिज्ञासा पूर्ति के लिए अब वे फुटपाथी सस्ते साहित्य पर नहीं, इंटरनेट की इन्हीं साइटों पर निर्भर हो गए हैं, उनकी मुट्ठियों में मोबाइल थमाकर हम गर्व का अनुभव कर रहे हैं।

बच्चों के यौन शोषण और उससे संबंधित सामग्री को सोशल मीडिया पर परोसने और प्रसारित करने के मामले में 83 लोगों के खिलाफ केंद्रीय जांच ब्यूरो ने चार साल पहले बड़ी कार्रवाई की थी। देश के 14 राज्यों के 76 ठिकानों पर सघन तलाशी का अभियान चलाया था। तलाशी की इस मुहिम से पता चला था कि लगभग पूरे देश में अश्लीलता का यह जंजाल नशे के कारोबार की तरह फैल गया है। यही नहीं अनेक महाद्वीपों में फैले सौ देशों के नागरिक इस गोरखधंधे में शामिल हैं। शहर तो शहर मध्य-प्रदेश के डबरा तहसील के ग्राम अकबई में भी बाल यौन शोषण से जुड़ी अश्लील फिल्में बनाने का कारोबार मिला था। यह अत्यंत चिंता का विषय है। 31 सदस्यों का एक वाट्सएप समूह इस कारोबार का संचालन करता था। पोर्न फिल्में बनाने और उन्हें अनेक सोशल साइट व एप्स पर अपलोड करने के मामले में प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी के पति राज कुंद्रा को भी मुंबई पुलिस ने हिरासत में लिया था। वे अश्लील फिल्में बनाने, बेचने और इससे धन कमाने के धंधे में शामिल थे। तीन महिलाओं ने उनके विरुद्ध शिकायत की थी। किराये के बंगले में राज कुंद्रा की कंपनी और उनके सहयोगी फिल्में बनाते थे। कुंद्रा की कंपनी आर्म्स प्राइवेट लिमिटेड ने हॉटशाट्स एप बनाया और इसे ब्रिटेन में एक रिश्तेदार के नाम से रजिस्टर्ड कंपनी केनरिन को बेच दिया था।

डॉ. हरिकृष्ण बड़ोदिया

राजनीति

मोदी का कद बढ़ाती विपक्ष की शाब्दिक दरिद्रता

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को ईश्वर लंबी उम्र दे किंतु कितनी विडंबना है कि जम्मू-कश्मीर के कठुआ के मंच पर बीमारी की दशा में भी उनकी मोदी के प्रति नफरत और ईर्ष्या होठों पर आने से नहीं रुकी। जम्मू-कश्मीर में उन्होंने बीमारी की दशा में मंच से कहा जब तक मोदी को हटा नहीं देंगे मैं जिंदा रहूंगा। कोई शक नहीं कि राजनीति में जब तक सत्ता हाथ में ना हो राजनेताओं को मजा ही नहीं आता। विपक्ष में बैठना दुनिया के किसी भी राजनेता को अच्छा नहीं लगता फिर कांग्रेस जैसी पार्टी जो देश की आजादी के बाद लगातार 60 सालों तक सत्ता के शीर्ष पर बैठकर राज करती रही हो वह लगातार तीन चुनावों में हारती ही जाए तो उसकी पीड़ा किसी से कैसे छुप सकती है। केवल मल्लिकार्जुन खड़गे ही नहीं बल्कि कांग्रेस का हर नेता जिसने सत्ता में रहकर मलाई का आनंद लिया है कैसे बर्दाश्त कर सकता है कि कोई दूसरा व्यक्ति निष्प्रभ और निश्चल भाव से जनता की सेवा करते हुए इतना प्रसिद्ध हो जाए की देश ही नहीं दुनिया भर में उसकी बात को महत्व दिया जाने लगे। यही कारण है कि आज कांग्रेस सहित विपक्ष का हर नेता वह किसी भी पार्टी का क्यों ना हो चाहता है कि मोदी को कैसे भी सत्ता से बेदखल किया जाना चाहिए। इसीलिए उसके नेता देश हो या विदेश हर मंच से मोदी को अपदस्थ करने के लिए बयान देते रहते हैं। आज हालात यहां तक पहुंच गए हैं कि मोदी विरोध की परिणिति राष्ट्र विरोध के रूप में परिलक्षित होने लगी है। मोदी का विरोध कोई आज की बात नहीं है इसकी शुरुआत तो 2002 के गुजरात दंगों से ही हो गई थी। 2014 के चुनाव होने तक विपक्ष तथा

कांग्रेस का मोदी विरोध सर पर चढ़कर बोल रहा था। मोदी का विरोध देश में ही नहीं बल्कि विदेशी मीडिया में भी जारी था। यही नहीं अमेरिका ने कांग्रेस के कहने पर मोदी के वीजा पर भी प्रतिबंध लगा दिया था। 2014, 2019 और 2024 के चुनावों में मोदी के विरुद्ध विपक्ष का अरण्यरोधन किसी से छिपा नहीं है। चुनाव प्रचार के हर मंच से मोदी को गालियां दी जाती रही लेकिन मोदी निर्लिप्त भाव से अपनी राह उसे जज्बे के साथ चलते रहे जो देश को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रतिष्ठा दिला रहा है। मोदी विरोध के इस खेल में विदेशी मीडिया भी संलग्न रहा जिसके अंतर्गत बीबीसी ने इंडिया- द मोदी क्वेश्चन डॉक्यूमेंट्री बनाई गई जिसका एकमात्र उद्देश्य मोदी को बदनाम करना था। लेकिन कहा जाता है की मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है। हुआ यही कि जितना जितना मोदी विरोधी मोदी को बदनाम करते रहे मोदी उतने ही कुंदन की तरह निखर कर सामने आते रहे।

आज स्थिति यह है कि विपक्ष मोदी को आज तक शताधिक गालियां दे चुका है लेकिन मोदी कल भी अविचलित थे आज भी हैं और भविष्य में भी अविचलित ही रहेंगे। मल्लिकार्जुन खड़गे ने अभी 29 सितंबर को ही मोदी को पहली बार गाली नहीं दी है, बल्कि कर्नाटक चुनाव में भी मोदी के प्रति अपनी कटुता व्यक्त करने से वे नहीं चूके थे तब उन्होंने एक रैली में कहा था कि मोदी जहरीले सांप की तरह हैं, आप इसे जहर समझें या ना समझें लेकिन अगर आप इसे चखेंगे तो मर जाएंगे। आप सोच सकते हैं कि क्या यह सही में जहर है। आप जैसे ही इसे चाटेंगे तो पूरी तरह सो जाएंगे। ऐसे बयानों की एक लंबी सूची है। इन गलियों का हिसाब किताब रखने वाले लोगों का दावा है कि मोदी विश्व के एकमात्र ऐसे नेता हैं जिन्हें आज तक विपक्ष ने सौ से अधिक गालियां देकर नवाजा है। मोदी विरोध में कांग्रेस के दिग्गज नेता 2014 के बाद से आज तक इतने पागल हैं कि मोदी को हटाने के लिए वे विदेश तक से सहायता मांगते देखे जाते रहे। कौन नहीं जानता कि मणिशंकर अय्यर ने 2015 में अपनी पाकिस्तान यात्रा में वहां की मीडिया से कहा था अगर भारत और पाकिस्तान के बीच बातचीत को जारी रखना है तो पीएम मोदी को हटाए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा था सत्ता में हमें वापस लाइए और उन्हें हटाइए। उन्हें हटाने में पाकिस्तान को हमारी मदद करना चाहिए। हम उन्हें हटा देंगे पर तब तक पाकिस्तान को इंतजार करना पड़ेगा। अय्यर तो पाकिस्तान के इतने चहेते हैं कि हर क्षण उसकी तरफदारी करते हुए दिखाई देते हैं। वह भारत सरकार को डराते हुए कहते हैं कि भारत को पाकिस्तान की इज्जत करना चाहिए क्योंकि पड़ोसी मुल्क के पास परमाणु बम हैं। अगर हम उन्हें इज्जत नहीं देंगे तो वह भारत पर परमाणु हमला करने की सोच सकते हैं।

(लेखक समाजशास्त्र के सेवानिवृत प्राध्यापक हैं)

मृत्युंजय दीक्षित

चुनाव

जातिवाद की आड़ में अपराधियों का संरक्षण

लोकसभा चुनावों में पार्टी के सांसदों की संख्या बढ़कर 37 हो जाने से समाजवादी पार्टी विशेष उत्साह में है और जहां-जहां भी उसके सांसद जीते हैं वहां-वहां पार्टी के कार्यकर्ता न केवल अराजकता का वातावरण बनाने का पूरा प्रयास कर रहे हैं वरन जातिवादी जहर घोलने का प्रयास भी कर रहे हैं। दूसरी तरफ प्रदेश की योगी सरकार लगातार अपराध और अपराध जगत पर जीरो टालरेंस की नीति पर चल रही है जिसमें कुख्यात माफियाओं व अपराधियो के एनकाउंटर हो रहे हैं तथा बुलडोजर भी चलाए जा रहे हैं, कई जगह अपराधी स्वयं ही आत्समर्पण भी कर रहे हैं या फिर अपना काम धंधा बदल रहे हैं।

प्रदेश का जनसामान्य योगी सरकार की बुलडोजर नीति से प्रसन्न है जबकि विपक्ष लगातार यही आरोप लगा रहा था कि बुलडोज़र से लोगों को डराया जा रहा है या अल्पसंख्यको को सताया जा रहा है आदि-आदि। जब सुप्रीम कोर्ट ने बुलडोजर पर अंतरिम रोक लगाई तो पूरा विपक्ष खुशियां मनाने लगा, जबकि सुप्रीम कोर्ट ने अवैध निर्माण को अपने आदेश से अलग रखा था। योगी राज्य में बुलडोजर केवल अतिक्रमण पर ही चलता है अतः प्रशासन को अपना काम करने में कोई समस्या नहीं आई। आश्चर्यजनक रूप से समाजवादी नेता अपनी जातिवाद की राजनीति को और पैना करने के लिए अपराधियों के पक्ष में खड़े हो रहे हैं। वहीं विगत दिनों हुई कुछ आपराधिक घटनाओं में शामिल लोग समाजवादी पार्टी से संबंधित रहे हैं। संभवतः यही कारण है कि समाजवादी नेता अखिलेश यादव सहित अन्य सभी जातिवादी नेता जातिवाद के जहर को और तीखा कर रहे हैं। अयोध्या से लेकर कनौज

तक दुष्कर्म की जितनी भी घटनाएं सामने आई हैं, उसमें सपा कनेक्शन मिला, प्रयागराज में अवैध मदरसे में चल रहा जाली नोट का व्यापार व फिर कौशाम्बी में जाली नोट खपाने वाले सपा के दो नेता अपने दस सहयोगियों के साथ पकड़े गए। स्वाभाविक रूप से आपराधिक घटनाओं में लिप्त पार्टी को बैकफुट पर जाने से बचाने के लिए ही अपराध की वीभत्सता तथा गम्भिरता की जगह अपराधी की जाति बीच में लाई जा रही है। अगस्त माह के अंत में सुल्तानपुर में डकैती डालने आये गिरोह के सदस्यों का एनकाउंटर हुआ जिसमें से एक मंगेश यादव के नाम पर समाजवादी नेता यादव समाज की सहानुभूति बटोरने के लिए उसके घर पहुंच गये और उसका महिमा मंडन करते हुए कहा कि यह एनकाउंटर नहीं एक हत्या है और अब सपा इस मामले को आगामी विधानसभा सत्र में भी जोर शोर से उठाने जा रही है। समाजवादी नेता आजकल जातिगत आधार पर ही अपराध और अपराधियों का संरक्षण व महिमामंडन कर रहे हैं। प्रदेश की राजनीति में आज सभी दल अपराधी की जाति देखकर उस पर होने वाली कार्यवाही का तीखा विरोध कर रहे हैं जबकि प्रदेश में 2012 से 2017 तक सपा सरकार के शासन काल में पुलिस मुठभेड़ में 34 अपराधी मारे गए थे तथापि उनके शासनकाल में अपराध और अपराधियों का जोरदार बोलबाला था। एक समय था कि कोई सपने में भी नहीं सोच पाता था कि प्रदेश को कभी अतीक जैसे माफियाओं से मुक्ति मिलेगी या फिर बड़े सफेदपोश लोग जेल जाएंगे। पिछली सरकारों के कई एनकाउंटर में तो मजिस्ट्रेट जांच तक नहीं ती थी। जबकि योगी सरकार में सभी एनकाउंटर की मजिस्ट्रेट जांच हो रही है यहां तक कि कुख्यात माफिया मुख्तार अंसारी की जेल में हुई स्वाभाविक मौत की भी जांच हुई। योगीराज में प्रदेश की कानून व्यवस्था को बेहतर बनाने लिए साढ़े सात वर्षो में 49 कुख्यात अपराधियों को मुठभेड़ में मार गिराया गया है। विभिन्न आपराधिक मामलों में संलिप्त 872 नशा व हथियार तस्करी अपराधी और 379 सायबर अपराधियां को गिरफ्तार किया है। साथ ही 3,970 संगठित अपराधियों को गिरफ्तार किया है। प्रदेश सरकार अवैध नशे के खिलाफ भी व्यापक अभियान चला रही हे जिसमें अभियुक्तों से सर्वाधिक गांजा बरामद हुआ है व अन्य नशीले पदार्थ भी बरामद हो रहे हैं। समाजवादी नेता अखिलेश यादव ने एसटीएफ को भी नहीं छोड़ा ओर उसमें शामिल अधिकारियों की जाति को अपने सोशल मीडिया हैंडल पर उकेर दिया ओर बताया कि कौन सा अधिकारी किस जाति का है। जब जातिवाद की राजनीति बहुत उग्र होने लग गई तब आंकड़ों को देखने से स्पष्ट हुआ कि विगत 7 साल में 207अपराधी एनकाउटर में मारे गए जिसमें - 67 मुस्लिम, 20 ब्राह्मण, 18 ठाकुर, 17 जाट और गुर्जर 16 यादव 14 दलित, तीन ट्राइबल, दो सिख, 8 ओबीस और 42 दूसरी जातियों के थे।

(लेखक स्तंभकार हैं)

रमेश शर्मा

जयंती आज

भारतीयता से ओतप्रोत श्यामकृष्ण वर्मा

श्यामकृष्णजी वर्मा ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, जिन्होंने न केवल देश विदेश में अंग्रेजों से मुक्ति का वातावरण बनाया अपितु क्रांतिकारियों की एक पूरी पीढ़ी का मार्गदर्शन किया। इनमें जिसमें स्वातंत्र्यवीर विनायक सावरकर जी से लेकर मदनलाल ढींगरा तक एक लंबी सूची है। उनका निधन जिनेवा में हुआ था।

ऐसे महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और क्रांति गुरु कहे जाने वाले श्यामकृष्ण जी वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को गुजरात प्रांत के कच्छ जिला अंतर्गत ग्राम मांडवी में हुआ था। उनके पिता श्रीकृष्ण वर्मा संस्कृत के विद्वान थे और माता गोमती देवी भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं के अनुरूप जीवनशैली में रची बसी थीं। श्यामजी की आरंभिक शिक्षा अपने गांव में ही हुई। बालपन में ही उन्हें संस्कृत का अद्भुत ज्ञान हो गया था। उन्होंने घर में भारतीय वाङ्मय के संस्कृत ग्रंथों का भी अध्ययन किया। जब वे ग्यारह वर्ष के थे तब माता का निधन हो गया था। फिर उनकी देखभाल दादी ने की। महाविद्यालयीन शिक्षा के लिए मुम्बई गए। संस्कृत ज्ञान और कुशाग्र बुद्धि के कारण पूरे महाविद्यालय में चर्चित हो गए। जिन दिनों श्यामजी कृष्ण वर्मा बम्बई में रह रहे थे तब 1875 में उनकी भेंट स्वामी दयानन्द सरस्वती से हुई। स्वामीजी मुम्बई आए थे। श्यामजी ने प्रवचन सुने। इसी वर्ष मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना हुई। श्यामजी आर्य समाज से जुड़ गए और आर्य समाज द्वारा किए जा रहे वेदों के भाष्यानुवाद से भी जुड़ गए। इसी वर्ष ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय लंदन के संस्कृत

विभाग के प्रमुख मोनियर विलियम भारत आए थे। वे ऐसे संस्कृत विद्वानों से मिलना चाहते थे जो अंग्रेजी भी जानते हों। युवा श्यामजी की उनसे भेंट हुई। श्यामजी की विद्वता से प्रभावित मोनियरजी ने श्यामजी को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय लंदन आमंत्रित किया। उनकी पत्नि भानुमति एक सुप्रसिद्ध व्यापारी की बेटी थी। भानुमति के पिता ने उन्हें लंदन भेजने का प्रबंध किया। वे 1878 में इंग्लैड गए। कुछ दिन श्री मोनियर के सहायक के रूप में रहे फिर उनकी अनुशंसा पर 1879 में बीए करने के लिए बैलियोज कॉलेज में प्रवेश ले लिया। इस महाविद्यालय से अपनी पढ़ाई के साथ निजी स्तर पर संस्कृत का अध्ययन भी निरंतर रहा। उन्होंने 1883 में बीए किया और संस्कृत में डिग्री भी। लंदन में रहकर बीए करने वाले पहले भारतीय थे। बीए की डिग्री और संस्कृत ज्ञान के कारण ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्यापक पद पर नियुक्त हो गए। ऑक्सफोर्ड में संस्कृत के साथ वे भारतीय विद्यार्थियों को गुजराती और मराठी भी पढ़ाया करते थे। उनकी सक्रियता और क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण उन पर पेरिस में भी नजर रखी जाने लगी। पूछताछ भी हुई। तब वे पेरिस छोड़कर जिनेवा आ गए और जिनेवा में ही उन्होंने 30 मार्च 1930 को अपने जीवन की अंतिम श्वांस ली। यह मेमोरियल 13 दिसम्बर 2010 को राष्ट्र को समर्पित किया गया। कच्छ जाने वाले सभी देशी विदेशी पर्यटकों के लिए माण्डवी का 'क्रान्ति-तीर्थ' एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

जनमानस

नई पीढ़ी भटकाव के रास्ते पर

आजकल नवयुवक-युवतियों में रील का कल्चर आधुनिकता के कलेवर में ज्यादा हो गया है। नई पीढ़ी इस अंधी दौड़ या अंधकार से भरी खाई में वह डुबती जा रही है। भारतीय सभ्यता और उसकी परम्परा व संस्कृति सब धूमिल हो चुकी है। लोग कहते हैं नजरिये को ठीक रखें अच्छा सोचें पर कैसे, जब ऐसे अमार्यादित कृत्य खुले आम बीच बाजार में झूठे दिखावे व चंद लाईक के चक्कर में युवती हमारे शहर की पहचान को खण्डित कर रही हो तो सम्भव नहीं है?

- हरिहरसिंह चौहान, इंदौर

स्कूल में बढ़ता यौन शोषण

भोपाल के स्कूल में विद्यार्थियों के यौन शोषण का तीसरा मामला सामने आया है। इस तरह की घटनाएं केवल भोपाल में ही नहीं हो रही है, बल्कि पूरे प्रदेश में अनेकों स्कूलों में इस तरह से छात्राओं के साथ यौन शोषण हो रहा है। आए दिन इस तरह से स्कूल में छात्राओं के साथ यौन शोषण होना बहुत ही चिंताजनक है। अब तो माता-पिता को अपनी बच्चियों को स्कूल भेजने में भी डर लगने लगा है। शिक्षक द्वारा हैवानित भरी दरिंदगी घोर निंदनीय।

- आशीष सकलेचा, जावरा

महिला टी20 वर्ल्ड कप : आज से शुरू होगा भारतीय टीम का सफर

न्यूजीलैंड से होगा पहला मुकाबला

एजेंसी □ नई दिल्ली

नई दिल्ली भारतीय महिला क्रिकेट टीम टी20 वर्ल्ड कप में शुक्रवार को अपने अभियान की शुरुआत करेगी। पहले मैच में उनका सामना न्यूजीलैंड से होगा। न्यूजीलैंड दो बार की उप विजेता है और उनके खिलाफ जीत को रणनीतिक तथा मानसिक रूप से अच्छी स्थिति में होने का संकेत माना जा सकता है। भारत ने अपने दोनों वॉर्म अप मैच जीते हैं जिसके बाद वह एक सकरात्मक मानसिकता के साथ मैदान पर उतरेगा। मैच 4 अक्टूबर को भारतीय समयानुसार शाम 7.30 बजे से शुरू होगा। शाम सात बजे मैच का टॉस होगा।

भारत के लिए जीत के साथ आगाज करना जरूरी है क्योंकि उसका ग्रुप में मजबूत टीमें हैं। इस ग्रुप में भारत और न्यूजीलैंड के अलावा ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका और पाकिस्तान भी हैं। भारत को अपने शीर्ष खिलाड़ियों 35 वर्षीय हरमनप्रीत, स्मृति मंधाना, जेमिमा रोड्रिग्स, शेफाली वर्मा और दीप्ति शर्मा से महत्वपूर्ण योगदान की उम्मीद होगी। शेफाली और मंधाना शानदार फॉर्म में हैं।

दुबई में खेले गए पांच टी20 मैच-दुबई की पिच पर अब तक पांच महिला टी20 मैच खेले गए हैं। इन मैचों में दो बार पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम जीती है वहीं तीन बार चेज करने वाली टीम के हाथों जीत आई है। यहां पहली पारी का औसतन स्कोर 90 है। इस मैदान पर बड़े स्कोर का मैच होने की उम्मीद कम है। इस पिच पर तेज गेंदबाजों को नई बॉल से मदद मिलती है। स्पिनर्स को बीच के ओवर्स में मदद मिल सकती है। वहीं पूरे दिन मौसम भी साफ होगा और फैंस को पूरा एक्शन देखने को मिलेगा। बारिश के खलल की संभावना नहीं है।

भारत और न्यूजीलैंड की टीमें-

भारत- हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना, शेफाली वर्मा, दीप्ति शर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, ऋचा घोष, यस्तिका भाटिया (फिटनेस पर निर्भर), पूजा वस्त्रकार, अरुंधति रेड्डी, रेणुका सिंह ठाकुर, डी हेमलता, आशा शोभना, राधा यादव, श्रेयंका पाटिल (फिटनेस पर निर्भर), सजना सजीवन। रिजर्व खिलाड़ी- उमा छेत्री, तनुजा कंवर, साइमा ठाकोर।

न्यूजीलैंड- सोफी डिवाइन (कप्तान), सूजी बेट्स, एडेन कार्सन, इज़ी गेज, मैडी ग्रीन, ब्रुक हॉलिडे, फ्रैन जोनास, लेघ कास्पेरेक, मेली केर, जेस केर, रोजमेरी मायर, मौली पेनफोल्ड, जॉर्जिया प्लिमर, हन्ना रोव और ली ताहुहु।

बांग्लादेश महिलाओं की ऐतिहासिक जीत, स्कॉटलैंड को 16 रन से हराया

एजेंसी □ दुबई

महिला टी20 वर्ल्ड कप में बांग्लादेश की महिला टीम ने एक ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। स्कॉटलैंड के खिलाफ खेले गए मुकाबले को उनकी टीम ने 16 रन से जीता है। इस मैच को जीतते ही बांग्लादेश की टीम ने एक बड़ा कारनामा कर दिखाया है। बांग्लादेश ने काफी शानदार अंदाज में टी20 वर्ल्ड कप की शुरुआत की है। दरअसल बांग्लादेश ने पिछले 4 वर्ल्ड कप से एक भी मैच नहीं जीता था। उनकी टीम अपने इस अच्छे लय को अगले मुकाबले में भी बनाए रखना चाहेगी। हालांकि उनके लिए अगला मैच आसान नहीं होगा। अगले मुकाबले में उनका सामना 5 अक्टूबर को इंग्लैंड से होगा।

कैसा रहा मैच का हाल

बांग्लादेश और स्कॉटलैंड के बीच शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में खेले वर्ल्ड कप 2024 के पहले मुकाबले में बांग्लादेश की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया। इस दौरान पहले बल्लेबाजी करते हुए बांग्लादेश ने 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 119 रन बनाए। इस दौरान बांग्लादेश की ओर से सलामी बल्लेबाज शाति रानी ने 29 रनों का पारी खेली। उनके अलावा सोभना मोस्तरी ने भी इस मैच में 36 रन बनाए हैं। आखिर में फहीमा खातून ने 5 गेंदों पर 10 रन बनाए और टीम को एक सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया।

बांग्लादेश की गेंदबाजों का कमाल- स्कॉटलैंड के सामने बांग्लादेश ने सिर्फ 120 रनों का लक्ष्य रखा था। उनके लिए इस टारगेट को चेज करना काफी आसान सा नजर आ रहा था, लेकिन बांग्लादेश की गेंदबाजों ने कुछ और ही प्लान बना रखा था, जिसके कारण उन्होंने स्कॉटलैंड को 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 103 रन ही बनाने दिए। बांग्लादेश ने इसी के साथ इस ऐतिहासिक मैच को अपने नाम कर लिया। स्कॉटलैंड की तरफ से सारा ब्राइस ने 49 रनों का पारी तो खेली, लेकिन वह किसी काम की नहीं रही। उन्होंने इन 49 रनों को बनाने के लिए 52 गेंद लिए। उनके अलावा किसी भी अन्य खिलाड़ी को कुछ खास कमाल नहीं किया। बांग्लादेश की ओर रितु मोनी ने 4 ओवर में 15 रन देकर 2 विकेट झटके। उन्हें इसके लिए प्लेयर ऑफ द मैच भी चुना गया है।

गढ़वाल की तरुण सांघा पर लगातार तीसरी जीत

नई दिल्ली। डीएसए प्रीमियर लीग में गुरुवार को गढ़वाल हीरोज ने तरुण सांघा को 2-1 से हरा कर लगातार तीसरी जीत दर्ज की। आज यहां अंबेडकर स्टेडियम पर खेले गए मुकाबले में विजेता गढ़वाल हीरोज के लिए मैन ऑफ द मैच निर्मल सिंह बिष्ट और मुस्तफा शैख ने गोल किए। साकिर अली ने तरुण सांघा का इकलौता गोल किया। कल देर शाम खेले गए एक अन्य मैच में नेशनल यूनाइटेड एससी ने हिंदुस्तान एफसी को 3-1 से परास्त किया। विजेता नेशनल यूनाइटेड के लिए टोंगलेनलाल, सिंगटे जॉर्ज और मैन ऑफ द मैच धनचंद्रा ने गोल किए। पराजित हिंदुस्तान का गोल सूरज मंडल के नाम रहा। प्रीमियर लीग दो की विजेता गढ़वाल हीरोज ने भले ही मध्यांतर के बाद रफ्तार पकड़ी लेकिन एक समय अंक तालिका में पीछे चल रहे तरुण सांघा ने गढ़वाल पर दबदबा बना लिया था। 37वें मिनट में गढ़वाल के निर्मल ने साथी खिलाड़ियों के साथ तालमेल के बाद गोल जमाया लेकिन तीन मिनट बाद साकिर अली ने गढ़वाल की रक्षा पंक्ति की चूक का फायदा उठाते हुए हिसाब चुकता कर दिया। 63वें मिनट में मुस्तफा शेख ने विजई गोल कर अपनी टीम को लगातार तीसरी जीत दिलाई। भले ही गढ़वाल ने मैच जीता लेकिन उसका प्रदर्शन ख्याति के अनुरूप नहीं रहा।

तीसरी लायन्स बैडमिंटन ट्राफी खुली विद्यालयीन स्पर्धा

इंदौर। लायन्स क्लब इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3233 जी 1, लायन्स क्लब ऑफ इंदौर महानगर और सरताज अकादमी द्वारा आयोजित तीसरी लायन्स बैडमिंटन ट्राफी चंद्रकला बिहानी स्मृति खुली विद्यालयीन स्पर्धा में आराध्य सागर 11और 13वर्ष बालक, स्वस्ति शर्मा 13 और 15 वर्ष बालिका, मिश्का गुप्ता 15 और 17 वर्ष बालिका एवं प्रग्यान सलुजा 15 और 17 वर्ष बालक वर्ग के दो-दो फाइनल में हैं, कैवल्य अग्रवाल ने 11 वर्ष बालक, ओमिशा मेहता ने 13 वर्ष बालिका, अवनीश नेकिये ने 13 वर्ष बालक, तनवी दुबे ने 13व र्ष बालिका, मेहर आनंद ने 15 वर्ष बालक एवं युवराज तिवारी ने 17 बालक वर्ग के फाइनल में जगह बनाई, मल्हार क्रीड़ा मंडल में हो रही स्पर्धा में 15 वर्ष बालिका सेमीफाइनल में स्वस्ति शर्मा ने दूसरे क्रम की तमन्ना सिंधा को हराकर उलटफेर किया, इंदौर जिला विजेता मिश्का गुप्ता ने दिवा चौकसे को हराया ,17 वर्ष बालिका सेमीफाइनल में मिश्का गुप्ता ने मनस्वी अरोरा को और सकीना रंगवाला ने अमायरा दुआ को पराजित किया, 11 वर्ष बालक सेमीफाइनल में आराध्य सागर ने वेदांत सिंह तोमर को और कैवल्य अग्रवाल ने आरव रघुवंशी को हराया, 13 वर्ष बालक वर्ग के सेमीफाइनल में अवनीश नेकिये ने मन बडजत्या को हराया।

अर्जेंटीना टीम में मेसी की वापसी

एजेंसी □ नई दिल्ली

स्टार फु टबॉल खिलाड़ी लियोनल मेसी की वेनेजुएला और बोलीविया के खिलाफ होने वाले दक्षिण अमेरिकी विश्व कप क्वालीफाइंग मैचों के लिए अर्जेंटीना की राष्ट्रीय टीम में वापसी हुई है। 37 वर्षीय मेसी टखने की चोट के कारण हाल ही में हुए मुकाबलों से बाहर रहे थे। अर्जेंटीना के कोच लियोनल स्कालोनी ने 10 अक्टूबर को वेनेजुएला और उसके पांच दिन बाद ब्यूनस आयर्स में बोलीविया से होने वाले मैचों के लिए बुधवार को टीम की घोषणा की।कोलंबिया के खिलाफ कोपा अमेरिका फाइनल में चोटिल होने के बाद मेसी पिछले दो दौर के मुकाबले नहीं खेल पाए थे। अर्जेंटीना 18 अंकों के साथ दक्षिण अमेरिकी क्वालीफाइंग में सबसे आगे है। उसके बाद कोलंबिया के 16 और उरुग्वे के 15 अंक हैं। यहां से शीर्ष छह टीमें 2026 फीफा विश्व कप के लिए क्वालीफाई करेंगी जबकि सातवें स्थान पर रहने वाली टीम एक स्थान के लिए अंतरराष्ट्रीय प्लेऑफ खेलेगी।

अर्जेंटीना की टीम

गोलकीपर- वाल्टर बेनिटेज, गेरोनिमो रूली, जुआन मुसो। डिफेंडर- गोंजालो मोंटिएल, नाहुएल मोलिना, क्रिस्टियन रोमेरो, जर्मन पेजेला, मार्कोस एक्यूना, लियोनार्डो बालेरडी, निकोलस ओटामेंडी, लिसांड्रो मार्टिनेज, निकोलस टैग्लियाफिको। मिडफील्डर- लिएंड्रो पेरेडेस, एलेक्सिस मैक एलिस्टर, एंजो फर्नांडीज, जियोवानी लो सेल्सो, निकोलस पैज, एक्सेक्विएल पेलासियोस, रोड्रिगो डि पॉल, वैलेंटिन कार्बोनी। स्ट्राइकर- थियागो अल्माडा, लियोनल मेसी, निकोलस गोंजालेज, एलेजांद्रो गर्नाचो, जूलियन अल्वारेज, पाउलो डायबाला, लोटारो मार्टिनेज।

50 मी. राइफल थ्री पोजीशन निशानेबाजी में

खुशी ने जीता कांस्य

लीमा। खुशी ने आईएसएसएफ जूनियर विश्व चैंपियनशिप में महिलाओं की 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन में कांस्य पदक हासिल किया। पेरू की राजधानी लीमा में बुधवार को हुये स्पर्धा में खुशी ने 447.3 अंक के साथ कांस्य पदक हासिल किया। इसके साथ ही चैंपियनशिप में 10 स्वर्ण, एक रजत और चार कांस्य सहित भारत के पदकों की संख्या 15 हो गई है। भारत पदक तालिका में शीर्ष पर है। खुशी ने क्वालिफिकेशन राउंड में 585-29× स्कोर के साथ सातवें स्थान पर रहकर फाइनल में जगह बनाई। साथी भारतीय निशानेबाज अनुष्का थोकुर, 585-263 के साथ 11वें, साक्षी पाडेकर, 581-283 के साथ 24वें, मेल्विना एंजेलिन जोएल ग्लैडसन, 580-183 के साथ 32वें, और प्राची गायकवाड़, 575-233 के स्कोर के साथ 41वें पर रहीं और शीर्ष आठ से बाहर रहते हुए पदक राउंड में जगह बनाने में असफल रहीं। फाइनल में खुशी 447.3 अंक हासिल कर तीसरे स्थान पर रहीं। इस बीच, सिन्नोएव बर्ग और कैरोलिन फिननेस्टैड लुंड ने इस आयोजन में नॉर्वे के लिए 1-2 की बढ़त सुनिश्चित की।

हिमाचल की कुसुम ने 200 मी. की दौड़ में जीता स्वर्ण

एजेंसी □ शिमला

हिमाचल प्रदेश की कुसुम ठाकुर ने चौथी ऑल इंडिया ओपन एथलेटिक मीट में 200 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया है।

पटना में आयोजित इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में कुसुम ने 24.19 सेकंड में दौड़ पूरी की और हिमाचल प्रदेश के लिए पहला महिला वर्ग का 200 मीटर स्वर्ण पदक जीता। महाराष्ट्र की सुधेशना हनमंत शिवांकर ने 24.24 सेकंड के साथ रजत, जबकि हिमाचल प्रदेश की ही समृति जम्वाल ने 24.49 सेकंड में कांस्य पदक अपने नाम किया। कुसुम ठाकुर की यह उपलब्धि किसी चमत्कार से कम नहीं है।

करीब ढाई साल पहले उनके दोनों फेफड़ों में पानी भर गया था और डॉक्टरों ने उन्हें सलाह दी थी कि वह दौड़ने की उम्मीद तक छोड़ दें। लेकिन कुसुम ने इस असंभव स्थिति को चुनौती मानकर खुद को साबित किया। उनके अदम्य साहस और संघर्ष ने उन्हें आज उस मुकाम पर पहुंचाया है, जहां वह राष्ट्रीय स्तर पर चमक रही हैं। कु सुम ठाकुर इससे पहले भी कई बार राष्ट्रीय स्तर पर अपना परचम लहरा चुकी हैं। उन्होंने हिमाचल प्रदेश में इंटर कॉलेज एथलेटिक्स चौंपियनशिप में नए कीर्तिमान स्थापित किए थे और इसके बाद ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी और खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में भी पदक हासिल किए थे।

वैदेही एवं ऋषिना एकल फाइनल में

इंदौर। ऑल इंडिया चैम्पियनशिप सीरीज सब जूनियर टेनिस टूर्नामेंट में मप्र के अरनव खंडेलवाल, असम के नमन बोराह ने बालक वर्ग 14 वर्ष आयु के एकल फाइनल में प्रवेश कर लिया है। बालिका वर्ग 14 वर्ष में वैदेही शुक्ला ऋषिना त्रिपाठी से फाइनल में भिड़ेगी।

आईसीसी ने शुरू किया एआई उपकरण

दुबई। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने गुरुवार को महिला टी-20 विश्व कप में क्रिकेट समुदाय, खिलाड़ियों और प्रशंसकों को विषाक्त सामग्री से बचाने, एक सुरक्षित और समावेशी ऑनलाइन वातावरण बनाने के लिये एक 'सोशल मीडिया मॉडरेशन' कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) उपकरण युक्त कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर की शुरुआत की है। आईसीसी की आज जारी विज्ञप्ति के अनुसार ब्रिटेन की सॉफ्टवेयर कंपनी 'गो बबल' के सहयोग से यह एआई संचालित उपकरण खिलाड़ियों के सोशल मीडिया चैनलों पर अभद्र भाषा और उत्पीड़न जैसी विषाक्त सामग्री की निगरानी करता है, इसका उद्देश्य टीम और खिलाड़ियों की मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा कर सकारात्मक माहौल को बढ़ावा देना है।

हार के बाद धोनी ने स्क्रीन पर मारा था मुक्का-हरभजन

एजेंसी □ नई दिल्ली

आईपीएल 2024 में चेन्नई सुपर किंग्स की टीम प्लेऑफ में पहुंचने की सबसे प्रबल दावेदार मानी जा रही थी। हालांकि, विराट कोहली की आरसीबी ने महेंद्र सिंह धोनी की सीएसके को हरा दिया था और वह प्लेआफ से बाहर हो गई थी। इस हार के बाद विपक्षी टीम से हाथ मिलाने का इंतजार कर रहे धोनी नाखुश दिखे थे और बिना हाथ मिलाए ही पवेलियन लौट गए थे। इस दौरान वह गुस्सा में दिखे थे। हालांकि, ड्रेसिंग रूम पहुंचने के बाद क्या हुआ था, यह किसी को नहीं पता। अब हरभजन सिंह ने उस मैच के बाद के दृश्यों से पर्दा उठाया है।

बेंगलुरु में उस मैच के दौरान कमेंट्री कर रहे हरभजन ने अब इस घटना के बारे में बड़ा खुलासा बताया कि, कि धोनी ने उस दिन अपना आपा खो दिया और ड्रेसिंग रूम में वापस जाते समय एक स्क्रीन पर मुक्का मारा। उन्होंने कहा, आरसीबी जश्न मना रहा था

और जिस तरह से उन्होंने जीत दर्ज की वह जश्न मनाने के हकदार थे। मैं ऊपर से पूरा दृश्य देख रहा था क्योंकि मैं वहां मौजूद था। आरसीबी जश्न मना रही थी और सीएसके हाथ मिलाने के लिए लाइन में खड़ी थी, आरसीबी को सीएसके तक पहुंचने में थोड़ी देर हो गई थी। जब तक टीम आरसीबी ने अपना जश्न खत्म किया, (धोनी) अंदर गए और उन्होंने ड्रेसिंग रूम के बाहर एक स्क्रीन को पंच किया। मैं ऊपर से देख रहा था, लेकिन यह ठीक है कि हर खिलाड़ी की अपनी भावनाएं होती हैं, ऐसा होता है।

वेस्टइंडीज के दौरे के लिए इंग्लैंड टीम की घोषणा

एजेंसी □ लंदन

इंग्लैंड ने जोस बटलर की अगुवाई में वेस्टइंडीज के दौरे के लिए अपनी सीमित ओवरों के लिये 14 सदस्यीय टीम घोषणा की है।

बटलर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीमित ओवरों की सीरीज से बाहर रहे थे। इंग्लैंड ने टी-20 सीरीज में बराबरी की थी और एकदिवसीय सीरीज में मामूली अंतर से हार का सामना करना पड़ा था। बटलर की अनुपस्थिति में फिल साल्ट और हैरी ब्रुक ने क्रमशः टी-20 और एकदिवसीय टीमों की अगुआई की थी।

आईसीसी की रिपोर्ट के अनुसार वेस्टइंडीज दौरे के लिए इंग्लैड की टीम में लेग स्पिनर जाफर चौहान, जॉन टर्नर और डैन मूसली अनकैप्ड खिलाड़ी हैं। जॉन टर्नर और डैन मूसली ऑस्ट्रेलिया के साथ खेली गई सीरीज का हिस्सा थे, लेकिन उन्हें मैच नहीं खेलने का मौका मिला। इंग्लैंड 31 अक्टूबर से वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन एकदिवसीय और पांच टी-20 मैच खेलेगा।

वेस्टइंडीज दौरे के लिए घोषित इंग्लैंड टीम- जोस बटलर (कप्तान), जोफ्रा आर्चर, जैकब बेथेल, जाफर चौहान, सैम करन, विल जैक्स, लियाम लिविंगस्टोन, साकिब महमूद, डैन मूसली, जेमी ओवरटन, आदिल राशिद, फिल साल्ट, रीस टॉपली और जॉन टर्नर।

पाक खिलाड़ी ने 31 की उम्र ही लिया संन्यास

नई दिल्ली। पाकिस्तान क्रिकेट में इस वक्त उथल पुथल का माहौल है। इंग्लैंड की टीम टेस्ट सीरीज के लिए पाकिस्तान पहुंच चुकी है, लेकिन इससे पहले पीसीबी टेंशन में है। अभी दो ही दिन पहले बाबर आजम ने कप्तानी छोड़ने का फैसला किया था। हालांकि इससे टेस्ट सीरीज पर कोई असर नहीं पड़ेगा। इस बीच पाकिस्तान क्रिकेट से ही एक और बड़ी खबर सामने आई है। पाकिस्तान के लिए कई इंटरनेशनल मैच खेल चुके उस्मान कादिर ने करीब 31 साल की उम्र में ही रिटायरमेंट का ऐलान कर दिया है। अचानक लिए गए इस फैसले ने सभी को चौंका दिया है। हालांकि वे पिछले लंबे वक्त से पाकिस्तान के लिए नहीं खेल रहे थे। उस्मान कादिर ने पाकिस्तान के लिए टी20 और वनडे खेले हैं, हालांकि टेस्ट खेलने का मौका उन्हें नहीं मिल पाया। उस्मान कादिर पाकिस्तान के ही पूर्व दिग्गज स्पिनर रहे अब्दुल कादिर के बेटे हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी बात लिखते हुए संन्यास का ऐलान कर दिया। उन्होंने लिखा है कि आज वह पाकिस्तान क्रिकेट से अपने संन्यास की घोषणा कर रहे हैं।

ऑस्ट्रेलिया दौरे से बाहर होने की अफवाहों पर भड़के शमी

एजेंसी □ नई दिल्ली

मोहम्मद शमी ने बुधवार को एक पोस्ट में उन रिपोर्टों का खंडन किया, जिनमें दावा किया गया था कि उनका भारतीय क्रिकेट टीम के ऑस्ट्रेलिया दौरे पर खेलना संदिग्ध है। शमी टखने की चोट के कारण एक्शन से बाहर हैं। वनडे विश्व कप 2023 में यादगार प्रदर्शन के बाद शमी की चोट की सर्जरी हुई और तब से वह इससे उबर रहे हैं। उम्मीद की जा रही है कि यह स्टार तेज गेंदबाज इस साल नवंबर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए राष्ट्रीय टीम में वापसी करेगा।

एक रिपोर्ट में बीसीसीआई के एक सूत्र के हवाले से कहा गया था, शमी ने गेंदबाजी फिर से शुरू कर दी है और वह जल्द ही प्रोफेशनल क्रिकेट में वापसी करने का प्लान बना रहे थे, लेकिन उनके घुटने की चोट में

फिर से परेशानी आ गई है। बीसीसीआई की मेडिकल टीम चोट का आकलन कर रही है, लेकिन इसमें काफी समय लग सकता है। यह एनसीए की मेडिकल टीम के लिए झटका है। वे एक साल से अधिक समय से उन पर काम कर रहे हैं। उनके पास सबसे अच्छा कार्यभार प्रबंधन प्रणाली है। मेडिकल टीम उन्हें जल्द ही ठीक करने की पूरी कोशिश कर रही है। हालांकि, शमी ने अब इन रिपोर्टों का खंडन किया है। मोहम्मद शमी ने एक्स पर लिखा, इस तरह की निराधार अफवाहें क्यों? मैं कड़ी मेहनत कर रहा हूं और उबरने के लिए अपने स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहा हूं। न तो बीसीसीआई और न ही मैंने कहा है कि मैं बॉर्डर गावस्कर सीरीज से बाहर हूं। मैं लोगों से अनुरोध करता हूं कि वे अनौपचारिक स्रोतों से ऐसी खबरों पर ध्यान देना बंद करें। कृपया बंद करें और इस तरह की नकली और झूठी खबरें न फैलाएं, खासकर मेरे बयान के बिना।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सैयद ज़की हैदर के लिए इरानीयन आर्ट प्रिंटर्स 1534 कासिमजान स्ट्रीट दरियागंज नई दिल्ली 11006 से मुद्रित कराकर, 2684 गली काले खां कूचा चलान दरियागंज नई दिल्ली 02 से प्रकाशित किया।
संपादक : सैयद ज़की हैदर- हैड ऑफिस :- एफ19/4 सेकेंड फ्लोर नफीश रोड जामिया नगर दिल्ली- 110025., सम्पर्क सूत्र :- 9911371802, 9810383593
जितेन्द्र कुमार बिस्वाल ब्यूरो चीफ उड़ीसा/ गोविंद कनोडिया/ पटना/ सैय्यद यूसुफ अली नक़वी-पॉलिटिकल एडिटर। ई-मेल:- dailyloktantra@gmail.com

किसी भी प्रकार के विवाद हेतु निपटारे के लिए केवल दिल्ली न्यायालय ही मान्य होगी।
नोट- किसी भी समाचार/आलेख पर दावा प्रति दावा/आपत्ति समाचार प्रकाशन के 15 दिनों के अन्तराल तक ही मान्य होगा। समाचार पत्र में प्रकाशित आलेख से संपादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्षेत्रीय कार्यालय अनवार मंजिल नया टोला गंज नंबर 01 बेतिया/ बिहार/ पिन नंबर 84 5438/>> संवाददाता, सना खान/(डॉ. अमानुल हक) स्थानीय संपादक/बिहार)